तारिका

[सचित्र उपन्यास]

लेखक

श्रीगोविंदवल्लभ पंत

[नूरजहाँ, वरमाला, राजमुकुट, अंगूर की बेटी,
अंतःपुर का छिद्र, वह मर गई !, एकादशी,
संध्या-प्रदीप, प्रतिमा, मदारी, जूनिया
आदि के रचयिता]

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार

३६, लाटूश रोड

लखनऊ

द्वितीयावृत्ति] सं० २००६ वि० [मूल्य ३॥)

प्रकाशक
श्रीराजकुमार भार्गव
राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल
मछुआ-टोली, पटना

अन्य प्राप्ति-स्थान—

१. दिल्ली-ग्रंथागार, चर्खेवालाँ, दिल्ली
२. प्रयाग-ग्रंथागार, ४०, क्रास्थवेट रोड, प्रयाग
३. गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

नोट—हमारी सब पुस्तकें इनके अलावा हिंदुस्थान-भर के सब प्रधान बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं। जिन बुकसेलरों के यहाँ न मिलें, उनका नाम-पता हमें लिखें।

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

लाइब्रेरी-योजना

गाँव-गाँव और शहर-शहर में

एक लाख घरेलू लाइब्रेरियाँ खुलवाइए !

अन्न-दान से परे कोई दान नहीं, किंतु विद्या-दान उससे भी श्रेष्ठ है। कारण, अन्न से आप मानव की शारीरिक भूख ही शांत करते हैं, किंतु विद्या से उसकी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक भूख शांत करते हैं—उसका लोक-परलोक बनाते हैं। शारीरिक भी इसलिये कहा कि पढ़ाकर आप उसे काफ़ी शारीरिक भोजन कमाने - लायक़ बनाते हैं। इसलिये शास्त्रों में विद्या-दानों को ही सर्वश्रेष्ठ दान बतलाया गया है।

विद्या-दान के मुख्य केंद्र स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल और विश्वविद्यालय ही हो रहे हैं। किंतु विद्या-दान का इससे कहीं सुसंस्कृत और सुंदर स्वरूप लाइब्रेरी-स्थापन है। कारण, स्कूल-कॉलेज में किसी बालक या बालिका को पढ़ाकर आप जहाँ उसी एक को लाभ पहुँचाते हैं, वहाँ लाइब्रेरी खोलकर अपने को, अपने घरवालों को, पड़ोसियों को और जो लाभ उठाना चाहें, उन्हें लाभ पहुँचाते हैं। लाइब्रेरियों में सबों के लिये उपयोगी किताबें रह सकती हैं, इसलिये बालक, युवक, वृद्ध, स्त्री-पुरुष, सभी समान रूप से उनसे लाभ उठा सकते हैं।

भारत-भर में ४०० से ज़्यादा हिंदी-भाषा-भाषी ज़िले और स्टेट तथा लगभग २,००,००० गाँव अवश्य हैं—हिंदी बोलने-वाले १० करोड़ मनुष्य ज़रूर हैं। क्या इनमें से १ लाख भी हिंदी पढ़े-लिखे ऐसे मनुष्य नहीं मिल सकते, जो ६००) सालाना या ५०) मासिक से ज़्यादा आमदनी रखते हों, और वर्ष में ६) या महीने में ॥) अर्थात् एक पैसा रोज़ हिंदी-हित के लिये ख़र्च कर सकें ? हमारी राय में

अवश्य मिल सकते हैं, और मिलेंगे। आवश्यकता है "खूब हिंदी-पुस्तकें पढ़िए" का भाव हिंदी-भाषा-भाषी भाई-बहनों में जगाने की। मुसलिम-लीग जगह-जगह उर्दू-लाइब्रेरियाँ खुलवा रही है। हज़ारों लाइब्रेरियाँ खुल चुकी हैं। बँगला, गुजराती, मराठी-भाषी पढ़े-लिखे भाई-बहन शायद ही कोई ऐसे हों, जिनके यहाँ अपनी मातृभाषा के ग्रंथ न हों। तभी तो वे सब साहित्य तेज़ी से तरक़्क़ी कर गए हैं। क्या हमें पीछे रहना चाहिए? कदापि नहीं। तो फिर क्या आप अपने घर में घरेलू पुस्तकालय खोलेंगे? अवश्य एक छोटी, पर अच्छी पुस्तकोंवाली लाइब्रेरी खोलिए। पुस्तकों का चुनाव सावधानी से कीजिए। हम इसमें आपकी पूरी मदद करेंगे। हमारे यहाँ अपनी पुस्तकों के अलावा हिंदुस्थान-भर की पुस्तकें रहती हैं। जगह-जगह दूकानें हम खुलवा रहे हैं, और ४० कन्वेसर तथा ५०० एजेंट हमारे भारतवर्ष-भर में फैले हुए हैं।

नोट—कहना न होगा, इस स्कीम से १० वर्ष में १-२ हज़ार सुंदर ग्रंथ निकल जायँगे, और कई सौ लेखक भी तैयार हो जायँगे। साथ ही लेखक जिस प्रकार इस समय भूखों मर रहे हैं, उनकी वैसी अवस्था न रहेगी। सारा देश भी उन्नत और समृद्धिशाली हो जायगा। यह सब पुण्य आप लूटेंगे। इसलिये हमसे मँगाकर फ़ौरन् प्रतिज्ञा-पत्र भरकर भेजिए, और अपने मित्रों तथा संबंधियों से भिजवाइए।

दुलारेलाल
(सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता)
सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०
(सभानेत्री अखिल भारतीय लेखक-संघ)

पात्र

१. रविन ... ... एक होटल का मालिक

२. कानजी ... ... एक पूँजीपति

३. मदन ... ... एक ऐक्टर-डाइरेक्टर

४. डोरा ... ... ईस्टर्न शू-फ़ैक्टरी के मालिक की लड़की, बाद को अभिनेत्री।

और कुछ

अतिरिक्त पात्र

पहला विराम—उ द य—

१. मैनेजिंग प्रोप्राइटर १
२. प्रथम मिलन १४
३. नई मित्रता २६
४. रजत-पट ४०
५. कलह ५६
६. दी सैटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी ७६

दूसरा विराम—नि शी थ—

१. सिनेरियो ९३
२. रिहर्सल १०७
३. ताड़ना ११७
४. अँगूठी १२८
५. छिन्न बंधन १३८
६. दो शिकारी १४८

तीसरा विराम—अ स त—

१. हवाई जहाज़ में १६१
२. हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर १७१
३. संपादन १८१
४. द्वंद्व १९४
५. अग्नि कोप २०५
६. ओ० के०... ... ... २१८

पहला विराम—

पहला परिच्छेद

मैनेजिंग प्रोप्राइटर

रबिन पहले उस होटल में वेटर था। खाने की मेज़, फ़र्श और प्लेट, प्याले-गिलास साफ़ करता, कभी-कभी चाय भी उबालता, खाना भी पकाता। उसे हिसाब-किताब की अच्छी स्मृति थी। स्कूल कुछ ही दिन गया था; पर अपने ही सहारे धीरे-धीरे उन्नति कर अच्छा लिखना-पढ़ना सीख गया। उसे अँगरेज़ी बोलने का अभ्यास था; जब बोलता, तो धारा-प्रवाह फूट निकलता। उसकी लंबी नाक उसके मानसिक विकास की सूचक थी, और उसकी भारी ठोड़ी उसके धैर्य की। नई सूझ और प्रबंध-चातुरी के लिये वह होटल के समस्त नौकर-चाकरों में प्रसिद्ध था। कुछ ही दिनों में वह होटल का गाइड बन गया। मालिक का उस पर विश्वास बढ़ा, और एक दिन उसने रबिन को पूरे होटल की चाबी का गुच्छा सौंपकर उसका वेतन बढ़ा दिया। तब से रबिन हिसाब-किताब भी रखने लगा, और धीरे-धीरे होटल का मैनेजर बना दिया गया।

रेस की लत ने रबिन के स्वामी को बरबाद कर दिया था, वह चोटी से कई हाथ ऊपर तक ऋण में डूबा था। क़र्ज़दारों

से पीछा छुड़ाने के लिये होटल में भी कम आने-जाने लगा था। रबिन ने बहुत कोशिश की कि स्वामी की चाल में कोई सुधार हो, पर उसके सभी प्रयत्न निष्फल हुए। होटल की आमदनी बुरी न थी। रबिन का हिसाब-किताब, प्रबंध-व्यवहार, सफ़ाई-सजावट, वादे और वक्त की पाबंदी, सभी ऐसे थे कि ग्राहक खिंचकर वहाँ आता, और फिर वहीं का होकर रहता।

रबिन के परिश्रम ने आमदनी को स्थिर रक्खा; पर उसके स्वामी के व्यय का न कोई हिसाब था, न कोई सिलसिला। ख़र्च आमदनी से बढ़ता हुआ न-जाने कब से चला आ रहा था। एक दिन बहुत लाचार होकर रबिन का स्वामी अपना तमाम फ़रनीचर, चीनी-काँच और धातु के तमाम बरतन तथा खाने-पीने की सब कच्ची-पक्की चीजें रबिन के हाथ बेच, क़र्ज़दारों से किसी प्रकार पीछा छुड़ा, शहर छोड़कर चला गया, और जहाज़ पर नौकरी कर ली।

दूकान के स्वामित्व का यह परिवर्तन किसी को मालूम भी न हुआ। अनेक लोग तो रबिन को ही स्वामी समझे बैठे थे। रबिन ने अपनी प्रभुता का आरंभ किसी भी नई बात से नहीं किया। होटल का पुराना साइनबोर्ड ठीक उसी जगह लगा था। रबिन ने उसमें बदलाव करने की कोई जरूरत नहीं समझी। इसे उसकी व्यापार-कुशलता या स्वामिभक्ति कुछ भी कहा जा सकता है। मकान-मालिक के नए इक़रारनामे

में रबिन ने अपने दस्तख़त किए, और ठीक नियत समय पर किराए की क़िस्त अदा करने लगा।

रबिन का होटल उसी चाल से चल रहा था, पर अब आमदनी बेपेंदे के बरतन में नहीं, बर्गलर-प्रूफ़ तिजोरी में जमा होने लगी थी। रबिन कुछ-कुछ हर महीने बचा ही लेता था। रबिन के होटल के पास ईस्टर्न शू-फ़ैक्टरी है। उसके मालिक पहले रेल के स्टेशन में काम करते थे। अब उन्हें पेंशन मिलती है। भारतीय ईसाई हैं। डोरा उनकी कुमारी कन्या का नाम है। सुंदर, हँसमुख लड़की, जिसकी स्वप्नमयी आँखों ने उसे और भी मधुर बना दिया है। स्थानीय गर्ल्स हाईस्कूल की सर्वोच्च कक्षा में पढ़ती है। वह विवाह-योग्य हो गई है। डोरा के पिता रबिन के साथ उसका विवाह कर देना चाहते हैं, इसलिये डोरा को रबिन के होटल में जाने की पूरी स्वतंत्रता है।

स्टेशन के पास दे-मार-फ़िल्म-कंपनी का स्टूडियो है। टॉकी की आँधी में उसका नाम बदलकर दे-मार-मूवीटोन-कंपनी रख दिया गया था।

मदन अपने को उस कंपनी का सितारा कहकर अपना विज्ञापन देता फिरता है, बहुत चतुर और अप-टु-डेट। पहले किसी फ़ोटोग्राफ़र की दूकान में विक्रेता था, बाद को डाक रूम में घुस पड़ा। इसके पश्चात् एक सिनेमा-हाउस का मैनेजर हो गया, और फिर सिनेमा के ऐक्टरों के दल में जा मिला।

अब उसे डाइरेक्ट कर सकने का दावा और सिनेरियो एवं संभाषण, दोनो लिख लेने का अभिमान है। दे मार-फिल्म-कंपनी की सुप्रसिद्ध 'जादूगर'-नामक फ़िल्म की कहानी वह अपनी लिखी हुई बताता है। हॉलीउड की तो ऐसी बातें करता है, मानो कल ही वहाँ से लौटा है।

मदन के पास पूँजी थी सिर्फ़ दे-मार-कंपनी के मासिक वेतन की, जो ठीक समय पर न मिलती थी, और मिलते ही बिछुड़ जाती थी। वह अक्सर कहा करता था—"मदन के पास पैसा नहीं; अगर होता, तो मैं मूक चित्रपटों के जमाने के उड़ जाने के कारण अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में तो नहीं, पर भारतीय सिनेमा के टिकट-घरों के लिये ऐसी तसवीर बना देता कि उनके लिये सिक्के और भीड़, दोनो को सँभालना दुष्कर हो जाता।"

मदन अपने को विश्व-धर्म का माननेवाला बताता था। वह समझता था—"किसी विशेष जाति और संप्रदाय की परिधि में घिरकर मनुष्य के विचार बहुत संकुचित हो जाते हैं। उसकी आत्मा ऊँचे नहीं उठ पाती। सितारा केवल एक ही देश के ऊपर नहीं चमकता। उसे फैलने के लिये यह जगत् ही नहीं, सारी सृष्टि है।"

शहर की ऐसी कोई सिनेमा की नटी न थी, जिसका तस्वा-त्तर-युक्त आलोक-चित्र उसके पास न हो। उसने एक सुंदर एल बम में सजाकर उन सबको रक्खा था। जब मदन अपने

किसी मित्र को चाय का निमंत्रण देता, तो उसे वह एलबम जरूर दिखाता।

वह कान से नीचे तक बढ़ाकर गलमूछें रखता था, और मूछें बिलकुल उड़ा देता था। रोज सुबह उठते ही अपनी हजामत करना उसका पहला काम था।

वह रबिन के होटल में पहले तेरह नंबर के कमरे में रहता था। एक दिन उसने हॉलीउड से लौटे एक डाइरेक्टर को टी-पार्टी दी। उसने तेरह की संख्या को बहुत मनहूस बताते हुए कहा—"दोस्त, पश्चिम के अनेक होटलों में तेरह नंबर का कोई कमरा ही नहीं होता। वहाँवाले इस संख्या को बहुत अशुभ समझते हैं। मेरी समझ में तुम इसे फौरन् ही बदल दो।"

मदन के मन में मित्र की बात जम गई, और उसने रबिन से कह-सुनकर कमरा बदल लिया।

एक दिन उसके दूसरे मित्र आए, और कहने लगे—"मदन, कमरा तो तुम्हारा अच्छा है। रोशनी और हवा प्रचुर है, लेकिन नंबर दस है—कुछ अच्छा नहीं।"

मदन के मन में यह बात भी गड़ गई। उसने फिर रबिन से जाकर कहा—"दोस्त रबिन, कमरा फिर बदलना चाहता हूँ।"

रबिन बोला—"सिड़ी हो गए हो क्या? जाड़े और गरमी, दोनो ऋतुओं में समान सुखदायक कमरा तुम्हें दिया है; क्या बुरा है?"

मदन ने बात छिपाकर कहा—"कुछ सोचना और लिखना भी तो पड़ता है न मुझे ? होटल के नीचे मोड़ पर गाड़ियों की ऐसी खड़खड़ाहट होती है कि एक चीज़ पर कभी ध्यान ही नहीं जमता, उचट-उचट जाता है। कंपनी के आगामी चित्रपट की कथा और कथोपकथन लिखने हैं। भाई ! दया करो।"

रबिन ने विचारते हुए कहा—"तो तुम्हें और कमरा कौन-सा दूँ ? इस किराए का, इतना छोटा और कोई कमरा भी तो नहीं।"

होटल चार मंज़िल का था। सबसे नीचे की मंज़िल में दर्ज़ी, स्टेशनरी, ज्वेलरी और पान-सिगरेट की दूकानें थीं। दूसरी मंज़िल के पाँच कमरे दो-चार दिन ठहरनेवाले यात्रियों के लिये थे। तीसरी मंज़िल में स्थायी बोर्डर रहते थे। चौथी मंज़िल में रसोईघर, गोदाम और रहने के चार कमरे भी थे।

मदन कहने लगा—"चौथी मंज़िल में तीन नंबर का कमरा ख़ाली है। कहो, तो उसी में चला जाऊँ।"

रबिन ने कहा—"गरमियों में कष्ट पाओगे।"

"कोई परवा नहीं। जाड़ों में ख़ूब धूप भी तो सेंकने को मिलेगी।"

"तुम्हारी मर्ज़ी, चले जाओ।"

मदन ने उसी दिन कमरा बदल दिया। उसने उस नवीन कमरे में कुछ कष्ट उठाना स्वीकार किया, पर गणित के अशुभ फलों

को सहने के लिये तैयार न हुआ। वह अजीब तरह का अंध-विश्वासी और वहमी था। नैपोलियन के भाग्य की पुस्तक उठा, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचकर अपना नया काम आरंभ करता था।

वह खाना होटल का ही पकाया हुआ खाता था, लेकिन चाय अपने ही हाथ से उबालकर पीता था। होटल के एक नौकर को हर महीने कुछ दे देता था, वह उसके प्याले धो देता, और बाज़ार से चाय-चीनी ख़रीद लाता।

बाहर से होटल में आने-जाने का केवल एक ही मार्ग था। ऊपर चढ़कर सीढ़ियों के पास ही नंबर एक का कमरा था। बिन वहीं रहता था। प्रवेश और प्रस्थान के उस मार्ग में दिन में रबिन आँखें बिछा रखता था, और रात को कान। रबिन के कमरे के सामने ही होटल का दफ़्तर था।

कानजी शहर के एक सुप्रसिद्ध पूँजीपति का लड़का था। उसके पिता की एक बहुत बड़ी साइकिलों की एजेंसी थी, और एक मिल में आधे से अधिक हिस्से।

कानजी मदन के पास, उसके होटल में अपनी मोटरकार लेकर, अक्सर पहुँच जाता था। उसे सिनेमा से अत्यंत प्रेम था। कभी-कभी रात को बड़ी देर तक होटल में कानजी और मदन फ़िल्म की मोहनी में ऐसे डूबे रहते कि देश और काल, दोनो भूल जाते। अवकाश पाकर कभी पाँच-सात मिनट के लिये वहाँ रबिन भी आ जाता, और "ऑफ़िस में कोई नहीं है।"—कहकर निकल भागता।

मदन नित्य नवीन ऐक्ट्रेस की खोज में रहता था। वह कहता था—"चित्रपट का आधार कहानी पर इतना नहीं, जितना उसमें प्रमुख भूमिका लेनेवाली नटी पर। अच्छे-से-अच्छे लेखक का कथानक ले लीजिए। अगर हिरोइन किसी काम की न होगी, तो फिल्म भी फेक देने योग्य होगी"

उसकी धारणा थी, ऐक्ट्रेस का पढ़ा-लिखा होना अति आवश्यक है। अगर उसने कथानक का मर्म नहीं समझा, तो न उसके ऐक्टिंग में जान पैदा होगी, और न उसके संभाषणों में प्रभाव।

लेकिन उसके मार्ग में एक कठिनाई थी। कोई भी पढ़ी-लिखी स्त्री सिनेमा में भूमिका लेना अत्यंत लज्जा-जनक कार्य समझती थी। और, जो कोई पढ़ी-लिखी स्त्री उधर पर बढ़ाने को तैयार भी हो जाती, तो उसमें संगीत की कला का कोई कण भी नहीं रहता था।

डोरा रबिन के ऑफ़िस में कभी-कभी आ जाती थी। मदन का उसके साथ वहीं परिचय हुआ था। ऐक्ट्रेस के लिये मदन की दृष्टि पड़ी डोरा पर। वह रबिन और डोरा के लिये कभी-कभी सिनेमा के फ्री-पास ले आता। वह अक्सर उन्हें स्टूडियो में भी ले जाता। उसने फ़िल्म-जीवन की कथा को अतिरंजित कर डोरा का मन मुग्ध कर लिया।

कानजी का मन न मिल में लगता था, न बाइसिकलों की दूकान पर। लौट-फिरकर उसका ध्यान केंद्रित होता था सिनेमा.

और उसके सितारों पर। मदन ने कानजी को सिनेमा के ऐसे-ऐसे सपने दिखाए कि वह सिनेमामय हो गया।

स्टूडियो में उस दिन मदन एक ऐक्टर से भिड़ पड़ा। उस दिन मदन का कोई पार्ट न था। अकबर के जीवन से संबद्ध एक कथानक की इन-डोर शूटिंग हो रही थी। दरबार के सेट् लगे हुए थे। ऐक्टर अकबर के वेश में दरबार में प्रवेश करने की परीक्षा तीसरी बार दे रहा था।

डाइरेक्टर ने कहा—"नहीं, फिर ठीक नहीं हुआ। आपके हाथों के संचालन बिलकुल सीखे हुए-से प्रतीत हो रहे हैं। और अधिक स्वाभाविकता लाइए। चलिए, फिर शुरू कीजिए।"

मदन डाइरेक्टर के बहुत मुँह लगा हुआ था। ऐक्टर का मज़ाक़ उड़ा रहा था। ऐक्टर किसी प्रकार वह सब सहन कर रहा था।

डाइरेक्टर का आदेश पा ऐक्टर चौथी बार उठकर ज्यों ही दरबार में प्रवेश करना चाहता था कि मदन ने धीरे से उसकी बाँह खींच ली।

ऐक्टर ने अत्यंत क्रुद्ध होकर मदन का हाथ झटक दिया, और कहने लगा—"देखो, किसी के भरोसे न रहना। मैं इस ऐक्टरी लाइन का बड़ा पुराना घिसा हुआ हूँ। मेरे रास्ते में अगर फिर खड़े हुए, तो ऐसी मरम्मत कर दूँगा कि टाई-पतलून और पढ़ा-लिखा सब धरा रह जायगा।"

मदन ने डाइरेक्टर की ओर देखते हुए कहा—"देखिए, डाइरेक्टर साहब, इनके दिमाग़ कैसे बढ़ गए हैं। यह अपने दिन भूल गए! सड़ी हुई उस नाटक-कंपनी से उठाकर इन्हें मैं यहाँ लाया। सेठ साहब की और आपकी ख़ुशामद कर मैंने इन्हें यहाँ नौकर रखवाया। आज यह मेरी ही मरम्मत करेंगे।"

"चुप रहो, मिस्टर मदन, जाने भी दो, बात न बढ़ाओ। सारा दृश्य अभी रक्खा हुआ है।"—डाइरेक्टर साहब ने मदन को शांत करते हुए कहा।

मदन बोला—"आप देख ही रहे हैं, मैंने कहा क्या? नाक के पास हज़रत का मेक-अप ख़राब हो गया था, उसी को सुझा देना चाहता था।"

ऐक्टर बोला—"मेक-अप ख़राब हो गया था, तो मेरा, इससे आपको क्या? आप मुझसे न बोला कीजिए।"

मदन ने कहा—"मैं हज़ार मरतबा बोलूँगा। वह मालिक की हानि की बात है। मुझसे चुप न रहा जायगा।"

डाइरेक्टर ने ऐक्टर की नाक के पास अपनी उँगली घिसकर कहा—"लो, ठीक हो गया। चलो।"

ऐक्टर फिर अपना काम करने लगा। डाइरेक्टर ने एक आँख की पलक गिराकर मदन से चुप रहने का संकेत किया, मदन उदास होकर, अपना टोप और साइकिल उठाकर स्टूडियो के बाहर चला आया। सड़क पर आकर विचार करने लगा—"किधर जाऊँ?"

कुछ देर सोच-विचारकर उसने कानजी के बँगले की ओर अपनी साइकिल घुमाई।

बँगले के फाटक के पास ही माली फूलों में पानी दे रहा था। मदन ने उससे पूछा—"कानजी हैं ?"

"हैं।"

कानजी अपने भीतरी कमरे में थे। टाइप-राइटर पर एक अधूरा पत्र और मेज़ पर एक अधखुला दैनिक था, स्वयं वह एक सोफ़े में पड़े नींद ले रहे थे। मदन को बेरोक-टोक वहाँ तक पहुँच जाने की स्वतंत्रता प्राप्त थी।

मदन के पैरों की आहट पाकर कानजी जाग उठे, और सिर सँभालते हुए कहने लगे—"आओ, मदन, मैं तुम्हारा ही स्मरण कर रहा था।"

"किसी इंद्र-सभा के सपने देख रहे होंगे। इस ग़रीब मदन को याद करने की भला आपको ज़रूरत ?"

तुम्हारी सिनेमा-कंपनी किस इंद्र के अखाड़े से कम है दोस्त !"

"तो एक कंपनी खोल डालिए न। कब से आपसे कह रहा हूँ। अगर भाग्य सहायक हुआ—पहली फ़िल्म पास हो गई, तो रुपयों का ढेर लग जायगा और तमाम अख़बारों में आपका सचित्र जीवन-चरित्र निकल जायगा। आप सिर्फ़ हाँ कह दें, मैं दे-मार-कंपनी की नौकरी आज छोड़ देता हूँ। देखिए, बिलकुल नई लाइन में काम करेंगे। पब्लिक की रुचि बिगाड़-

कर उसका पैसा खसोट लेना कितनी गंदी बात है। हम धार्मिक फ़िल्में तैयार करेंगे, जिनसे जनता को नसीहत मिले, लोगों में शिक्षा फैले, और हमें भी रुपया मिले।"

"सारी बात टका-देवता की है।'

"तुम्हारे क्या कमी है; चाहो, तो एक दर्जन कंपनियाँ खोल सकते हो।"

'लेकिन पिताजी—"

"पिताजी क्या कहते हैं ?"

"यही कि और चाहे जो व्यवसाय करो, उसके लिये रुपया दे सकता हूँ, लेकिन सिनेमा-कंपनी के लिये नहीं।"

"तमने उन्हें मेरी स्कीम अच्छी तरह समझाई न होगी।"

"सब कुछ समझाया।"

"एक दिन तो उन्होंने मेरी बात मानकर कह दिया था कि सिनेमा-व्यवसाय बहुत लाभप्रद व्यवसायों में से है।"

"उनके कान लोगों ने भर दिए हैं। वह सिनेमा-कंपनी के अधिकांश को ज़माने-भर के धूर्तों की मंडली समझते हैं। सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं। कभी एक दिन सिनेमा देखने नहीं गए, किसी स्टूडियो के अंदर कभी पैर नहीं रक्खा, और लगे सिनमावालों को बदनाम करने।"

मदन ने एक दीर्घ श्वास छोड़कर कहा—"यह संसार कैसा अद्भुत है! ऐक्टर का जीवन कैसे त्याग से भरा हुआ है। ये लोग उसके अंधकार ही पर दृष्टि रखते हैं।"

"पैसा कहीं से लाया जायगा। ऐक्ट्रेसें तो ठीक कर लो। तुमने उस नई ऐक्ट्रेस से परिचय करा देने को कहा था।"

"डोरा से ?"

"हाँ।"

"आज ही सही। चलो।"

दूसरा परिच्छेद

प्रथम मिलन

कानजी ने मदन के मुख से डोरा की बड़ी तारीफें सुन रक्खी थीं। उन्होंने कभी उसे देखा न था। आज एकाएक उसे देखने के लिये तैयार हो गए।

दोनो मित्र होटल की ओर चले। मार्ग में डोरा के पिता की दूकान में झाँककर मदन कहने लगा—"स्कूल से तो आ चुकी होगी। चलें, होटल चलें, वहीं सब पता चल जायगा।"

वहाँ जाकर मदन ने रबिन से पूछा—"यहाँ डोरा तो नहीं?"

रबिन ने घबराकर मदन की ओर देखा, और भारी शंका प्रकट की।

मदन बोला—"भाई रबिन, घबराने की कोई बात नहीं। फिर तुम्हारे-जैसे रिफ़ार्मर को क्या यह बताने की ज़रूरत कि संसार में स्त्रियों का भी मर्दों के सामान ही अधिकार है?"

रबिन ने कानजी को बैठने के लिये कुरसी दी, और मदन से कहने लगा—"तुम्हारी बात अच्छी तरह समझ में नहीं आई।"

मदन बोला—"मैं कानजी को एक बहुत बड़ी रक़म लगाकर

सिनेमा-कंपनी खोलने के लिये तैयार कर रहा हूँ। केवल रुपया कमाना ही कंपनी का उद्देश्य न होगा। पढ़े-लिखे, कुलीन ऐक्टर और ऐक्ट्रेसों को कंपनी में रक्खा जायगा।"

मदन को कहते-कहते रुकता देखकर रबिन बोला—"कह डालो सब।"

"बेकारी बढ़ती जा रही है। पढ़े-लिखों को एक नई आजीविका मिलेगी, मुल्क में एक नया आर्ट फैलेगा।"

कानजी को भी कुछ जोश आ गया था, कहने लगे—"सिनेमा में एक बहुत बड़ी ताक़त है। संसार के जिन राष्ट्रों ने उसकी शक्ति समझी है, उन्होंने लोक-जागरण के लिये उससे भारी मदद ली है। जो काम अच्छे-से-अच्छा व्याख्याता नहीं कर सकता, उसे अच्छी फ़िल्म कर दिखाती है। जो प्रचार अच्छी-से-अच्छी पुस्तक या पत्र नहीं कर सकते, उससे कई गुना बढ़कर सिनेमा कर सकता है।"

रबिन ने नम्रता के साथ कहा—"आपकी बात बिलकुल सही है। ऐसी फ़िल्में अधिक बनें, तब न?"

ऐसी फ़िल्में अधिक नहीं बनतीं, तो इसमें अपराध तुम्हारा और हमारा ही तो है।"—मदन ने कहा।

"हाँ, कुछ हद तक बात सही है।"—रबिन ने अपने माथे पर हाथ फेरकर कहा।

"अधिकांश फ़िल्म-कंपनियों ने जनता की पसंद का जो पैमाना नियत कर रक्खा है, वह कदापि संतोष-जनक नहीं।

उन्हें इस बात का पता ही नहीं कि लोगों की रुचि बनानेवाले वे ख़ुद ही हैं। हम विदेशियों के गुणों की नक़ल कभी नहीं करते, उनके अवगुणों का सबसे पहले अनुकरण करते हैं। उनकी फ़िल्मों में जो कला है, हम उसका स्पर्श भी नहीं कर सके।"—मदन ने दुःख प्रकट करते हुए कहा।

रबिन—"ठीक है, तुम कहना क्या चाहते हो?"

मदन—"धीरज से सुनते जाओ, कह तो रहा हूँ। हम सभ्य और सुशिक्षित व्यक्तियों को लेकर कंपनी खोलना चाहते हैं।"

रबिन—"अरे जो भी सभ्य और सुशिक्षित भरती होगा, उस पर कंपनीवालों का रंग चढ़ जायगा।"

कानजी—"आपकी धारणा कदाचित् ठीक नहीं।"

मदन—"भाई पूरी कोशिश करेंगे कि कंपनी का आधार सदाचार पर हो। अँधेरा तो उजाले के साथ लगा ही हुआ है।"

रबिन—"अच्छा, मान लिया, यह भी ठीक है।"

मदन—"डोरा की सिनेमा में कितनी बड़ी दिलचस्पी है, यह बात तुम हमसे भी अधिक जानते हो। जितना सुंदर उसका कंठ-स्वर है, उतना ही प्रिय उसका रूप।"

रबिन के मुख पर भावों का तड़ित्-परिवर्तन प्रकट हुआ।

मदन—"इस बात पर तुम्हें ईर्ष्या उपजाने की आवश्यकता नहीं। हम शुद्ध विचार से प्रेरित होकर ही कह रहे हैं।"

रबिन—"लेकिन डोरा के पिता को उसे सिनेमा की नटी बनना मंजूर नहीं।"

मदन—"यह उनकी ग़लती है। जिसकी रुचि जिधर है, उसे छोड़कर दूसरा काम उससे उतना अच्छा हो नहीं सकता। डोरा वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापिका क्या बनेगी? कहीं जगह भी खाली हो, तब न? क्या ऐक्टरी को तुम मामूली प्रोफ़ेशन समझते हो। विदेशों में ऐक्टरों का क्या सम्मान है, क्या यह सब तुमसे छिपा है? बड़े-बड़े राजा और राजकुमार उनकी अभ्यर्थना के लिये मोटरें लिए-लिए फिरते हैं।"

कानजी—"केवल ऐक्टरी के लिये कई लोगों को नाइट बना दिया गया। वेतन ही लीजिए, ऐक्टरों ने ऐसी बड़ी-बड़ी रक़में वसूल कीं, जो बड़े-बड़े लाट और गवर्नरों को नसीब नहीं हुई।"

रबिन—"यह सब कुछ सच है, लेकिन मेरा ख़याल है, डोरा इस साल स्कूल की अंतिम परिक्षा पास कर कॉलेज में भरती होगी।"

मदन—"डोरा के पिता को तुम्हारा विश्वास है। डोरा को बुलवाओ। हम तुम्हारे सामने उससे इस संबंध में बातें करना चाहते हैं।"

रबिन बग़लें झाँकने लगा।

कानजी—"बात यह है। स्टूडियो का निर्माण करने के साथ ही हम ऐक्टर और ऐक्ट्रेसों का चुनाव भी कर लेना चाहते हैं।"

मदन—"मिस्टर रबिन, डोरा के लिये इससे बढ़कर सुनहला अवसर दूसरा कोई नहीं आ सकता। मैं उसके मन की बात जानता हूँ, वह सिनेमा छोड़कर दूसरी लाइन पसंद न करेगी।"

रबिन की हैट फ़र्श पर गिर पड़ी। उसने उसे उठाते हुए कहा—"तुम उसके मन की बात जानते हो मदन !"

"हाँ; मैं उस वक़्त से ऐक्टर हूँ, जब मेरी मूछें नहीं निकली थीं, और मैं सहेलियों में निकलता था।"

कानजी ने हँसते हुए कहा—"और जब मूछें निकल आईं, तो चोबदारों में खड़े होने लगे।"

रबिन भी हँसने लगा।

मदन बोला—"हँसने की बात नहीं रबिन ! दूसरे ही महीने से मैं हीरोइन के लिये चुन लिया गया।"

कानजी—"स्त्रियों का पार्ट तुम कमाल के साथ करते थे ! अब भी कभी-कभी तुम्हारे ऐक्टिंग में वह बात पाई जाती है।

मदन मुसकाकर बोला—"अब नहीं। आवाज़ मोटी हो जाने पर फिर मैं पुरुषों की भूमिका लेने लगा था, जिससे वे पुरानी आदतें भूल गया।"

रबिन ने कुछ सोचकर फिर कहा—"तुम डोरा के मन की बात नहीं जान सकते मदन ! उसने तुमसे क्या कहा ?"

मदन—"कहा क्या ? कुछ नहीं। मैंने सात साल मूक चित्रपटों में काम किया। मैंने बिना कुछ कहे अपने मन के भाव प्रकट किए, और मैं बिना बोले दूसरे के हृदय की

बात जान लेने में भी पटु हूँ। ऐक्ट्रेसों की कमी नहीं। रबिन! डोरा को बुलवाओ। मैं कानजी को लेकर अपने कमरे में जाता हूँ। वहीं आना, सब बातें तय हो जायँगी। हम सीधे डोरा से बातें कर सकते हैं, लेकिन वैसा चाहते नहीं। मैंने सदैव तुम्हारे सामने उससे बातें की हैं।"

रबिन ने कहा—"अच्छी है। मैं उसे बुलाता हूँ।"

मदन कानजी को लेकर अपने कमरे में गया, और रबिन ने डोरा को बुलवाने के लिये होटल का ब्वाय भेजा।

डोरा तड़ित्-गति से दर्पण में मुख देख, अपने बाल सँवार ब्वाय के साथ ही रबिन के होटल में चली आई।

"तुम्हें एक जरूरी काम से बुलाया है, डोरा।"

"कौन-सा काम है?"—कहकर डोरा खिड़की में रक्खे हुए फूलदान के निकट गई, और नए सिरे से उसके फूलों को सजाने लगी।

"मदन को तो तुम जानती हो?"

"हाँ, आप ही ने तो उनसे परिचित कराया था। बड़े सजीव हृदय और मनोरंजक व्यक्ति हैं।"

"लेकिन मुझे उसका अधिक विश्वास नहीं।"

"क्यों?"

"न-जाने क्यों?"

"क्या होटल का बिल वक़्त पर अदा नहीं करते?"

"नहीं, ऐसी बात तो नहीं।"

"फिर ?"

रविन किसी विचार में डूब गया।

डोरा फिर कहने लगी—"मैं तो उनमें कोई दोष नहीं देखती मुझे तो उनका जीवन बड़ा मधुर प्रतीत होता है।"

रविन बिगड़ उठा, और कहने लगा—"तो तुम उसी के सा अंतरजातीय विवाह क्यों नहीं कर लेतीं ?"

डोरा ने भौंहें तानकर रविन की ओर पीठ कर ली। रवि मन-ही-मन विचारने लगा, कदाचित् बहुत कठोर शब्द मुख निकल पड़े। उसने डोरा के निकट जाकर उसका हाथ पकड़ा

डोरा हाथ छुड़ाकर बोली—"किसी के गुणों की प्रशंस करने का अर्थ क्या उसके साथ विवाह कर लेना है ?"

"अच्छा, भूल हुई; क्षमा करो।"

डोरा ने फिर पीठ फेर ली।

रविन ने फिर विनय की—"डोरा ! भूल करके उसके लि क्षमा माँगनेवाले लोग बहुत कम हैं। यदि क्षमा करनेवाले भ उनसे कम हो जायँगे, तो संसार कैसे चलेगा ? क्षमा करो कहो, तो लिखकर दे दूँ।"

डोरा ने अपने मुख में नवीन विकास धारण कर अपन समस्त मान दूर कर दिया। वह रविन की ओर मुँह कर सोफ़े पर बैठ गई।

रविन ने संतोष के साथ कहा—"मैं स्वयं मदन के गुणों क उपासक हूँ। उसके समान बुद्धि रखने और उसके बराब

परिश्रम करनेवाले लोग सिनेमा में अधिक नहीं। वह शीघ्र ही किसी दिन डाइरेक्टर हो जायगा। वैसे काम तो डाइरेक्टर का वह आजकल करता ही है, लेकिन यह सब अभी स्टूडियो के बाहर प्रकाशित नहीं किया जाता।"

"वह मुझसे इस दिन कहते थे, डोरा, तुम सिनेमा की अनोखी ऐक्ट्रेस हो सकती हो।"

"किस दिन ?" रबिन ने सँभलकर कहा।

"जिस दिन मैंने आपके कमरे में—यहीं, बैंजो पर गया था।"

"मुझे याद नहीं। तुमने क्या उत्तर दिया था ?"

"कुछ भी नहीं।"

"सिनेमा की ऐक्ट्रेस बनने में रक्खा क्या है ?"

"ऐसा न कहो रबिन ! तुमसे मन की बात कहती हूँ। मैं सिनेमा की ऐक्ट्रेस बनने का निश्चय कर चुकी हूँ।"

"तुम्हारा पढ़ना-लिखना ? तुम कॉलेज में भरती न होगी ? क्या स्कूल की अंतिम परिक्षा पास कर लेना पर्याप्त न होगा ?"

"पिता आज्ञा दे देंगे ?"

"मैं उन्हें किसी प्रकार राजी कर लूँगी। रबिन, मदन तुम्हारे मित्र हैं। किसी सिनेमा-कम्पनी में कोई पार्ट मिले तो मैं तैयार हूँ।"

मदन ऊपर की मंजिल से रबिन के कमरे की ओर उतर रहा था। रबिन ने उसके पैरों की आहट पहचानकर कहा—

"इसीलिये तुम्हें बुलाया है। ऐक्ट्रेस बनने के लिये अधीरता प्रकट न करना, मूल्य गिर जायगा। कहना, मुझे कॉलेज ज्वाइन करना है।"

डोरा को रबिन अच्छी तरह न समझा सका था कि मदन आ पहुँचा। डोरा को देख उसने हैट निकालकर उसका अभिवादन किया। फिर रबिन से कहने लगा—"कानजी बड़ी देर से इंतज़ार कर रहे हैं रबिन! उनका समय मूल्यवान् है भाई!"

"यह अभी तो आई हैं। चलो।"

तीनो ऊपर तीन नंबर के कमरे में गए।

रबिन ने डोरा का परिचय देते हुए कानजी से कहा—"ईस्टर्न शू-फ़ैक्टरी के स्वामी की कन्या कुमारी डोरा आप ही हैं।

मदन ने कानजी का परिचय देते हुए डोरा से कहा—"आप ही नगर के सुप्रसिद्ध धनपति कानजी हैं। इनका नाम कई बार आपके सामने लिया गया है, कुमारी डोरा!"

दोनो ने हाथ मिलाए।

डोरा ने वीणा-विनिंदित स्वर में कहा—"आपका परिचय पाकर परम संतुष्ट हुई हूँ श्रीयुत कानजी!"

कानजी बोले—"मुझे भी इस बात का अपार हर्ष है। मैंने मदन के मुख से आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

डोरा—"मैं किसी भी योग्य नहीं हूँ। एक गुण-हीन लड़की, जिसका मन पढ़ने-लिखने में कम और खेल-कूद में अधिक लगता है!"

कानजी ने साश्चर्य कहा—"मिस डोरा, आपको पहले भी कभी देखा है। आपका कंठ-स्वर बिलकुल परिचित प्रतीत होता है।"

मदन सोचते हुए कहने लगा—"कहाँ देखा होगा?"

कानजी आँखें बंद कर, सिर पर हाथ रख स्मरण करने लगे।

रबिन बोला—"गर्ल्स स्कूल में?"

कानजी—"ठीक है। स्कूल के वार्षिकोत्सव में खेले गए हरिश्चंद्र-नाटक में।"

डोरा—"हाँ, मैंने उसमें शैव्या का पार्ट खेला था।"

कानजी—"वहीं! वहीं! तुम्हारा बहुत अच्छा अभिनय हुआ था। निश्चय ही कंपनीवालों को मात किया था। मुझे अब तक उसका स्मरण है।"

मदन ने पश्चात्ताप के स्वर में कहा—"अच्छा! मैंने नहीं देखा! मैं न-जाने उस रोज़ कहाँ था?"

"होगे कहीं नाइट-शूटिंग में!"—कानजी ने कहा।

मदन—"जब कुछ बाहरी दृश्य लेने के लिये विंध्याचल गया था, तभी की बात होगी, नहीं तो क्या मुझे सूचना भी न मिलती!"

डोरा मेज़ के दूसरी ओर कानजी की कुरसी के ठीक सामने बैठी थी।

मेज़ पर पेपर-वेट से दबा हुआ मदन का इंगेजमेंट पैड रक्खा था, और उसके ऊपर आकाशीय रंग की, रेशमी डोरे में बँधी नाच के प्रोग्राम की पतली पेंसिल।

कानजी ने एकाएक कहा—"एक बात ध्यान में आती है मदन !"

"कौन-सी ?"

"बरसात से पहले पहला चित्रपट अवश्य निकाल देना चाहिए।"—कानजी ने कहा। ध्यान उनका डोरा की ही ओर था।

मदन बोला—'तो आज ही जाकर नीलाम पर चढ़ी हुई फ़ोकस-फिल्म-कंपनी की दोनो मशीनों का सौदा पटा लाइए। सेट् और परिच्छद उनके किसी काम के नहीं, अगर वे कुछ भी अच्छे होते, तो मय स्टूडियो के ही सब कुछ ख़रीद लिया जाता।"

"नहीं मदन, मुझे स्टूडियो की साइट भी पसंद नहीं।"—कानजी ने पैड पर पेंसिल से एक खड़ी और सीधी पंक्ति खींचकर कहा।

"क्या कमाल की कंपनी खुली। बेचारों ने जो कुछ रुपया जमा किया, उसका तीन हिस्से से अधिक तो स्टूडियो फ़िट् करने में लग गया। शेष ऐक्टर और ऐक्ट्रेस बैठे-बैठे खा गए।"—मदन बोला।

कानजी ने समवेदना की हँसी हँसकर कहा—"बेचारों की रिहर्सल भी तो शुरू नहीं हुई थी।"

"स्टोरी ही पर तो झगड़ा चल गया। कौन सिनेरियो लिखता और किसे डायलॉग लिखने का ठेका मिलता !"—

कहते हुए मदन ने टाई की ग्रंथि में हाथ रख कुछ गर्दन घुमाई।

कानजी ने पैड पर लिखी पंक्ति के ऊपरी सिरे पर एक उससे छोटी रेखा समकोण बनाती हुई दाहनी ओर को खींची। डोरा और रबिन उत्सुक होकर उधर देखने लगे।

कानजी ने पूछा—"स्टोरी पर क्या झगड़ा चला?"

"मैनेजिंग डाइरेक्टर कहने लगे, मेरी कहानी चलेगी, और रिहर्सल-डाइरेक्टर ने ज़ोर लगाकर कहा, जब सिनेरियो ही लिखना है, तो क्यों न मैं अपनी ही स्टोरी पर लिखूँ?"

"ऐक्टर तो तब रखने चाहिए, जब स्क्रिप्ट तैयार हो जाय।"—मदन ने बड़े अनुभव का भाव प्रकट कर कहा।

"हाँ, और जब पूँजीपति को कहानी लिखने का शौक़ होने लगता है, तो अधिकतर कंपनी 'फ़ेड आउट' की ओर ही घूम जाती है।"—मदन ने पेंच घुमाने की कृति प्रकट करते हुए कहा।

कानजी ने अपने लेख में एक रेखा और जोड़कर उसे अँगरेज़ी के एफ़ अक्षर का रूप दिया। डोरा मुसकाई, और रबिन आँखें फाड़-फाड़कर उधर देखने लगा।

कानजी ने कहा—"मैं तो पहले सब कुछ ठीक कर लूँगा। तब ऐक्टर और ऐक्ट्रेसों से बात करूँगा।"

मदन बोला—"बिलकुल युक्ति-युक्त बात है।"

कानजी ने एफ़् के बाद कुछ स्पेस देकर बड़ा एल् लिखा।

कानजी बोले—"मदन ! सबसे पहले तुम मुझे सिनेरियो लिखकर दो। मैंने देखा है, जो बात सब के आरंभ में पूरी हो जानी चाहिए, वह सबके अंत तक भी नहीं हो पाती। सिनेरियो एक मार्ग के समान है। जब वही पास में न होगा, तो हम जायँगे कहाँ ? अपवाद की बात जाने दो, वह तो प्रत्येक नियम के साथ है। कहने का तात्पर्य है, तुम्हें सबसे पहले मुझे सिनेरियो लिखकर देना है, तब मैं दूसरा पग आगे बढ़ाऊँगा।"

मदन ने साभिमान कहा—"हजारों कहानियाँ मेरे मन में हैं। जिस पर ध्यान जमा, फ़ाउन्टेन हाथ में लेकर बैठ जाऊँगा, सिनेरियो लिख जायगा, उसमें रक्खा क्या है ?"

कानजी ने एल् के बाद एम् लिखा, और एफ् तथा एल् के बीच आई बनाया। पूरा शब्द बना—"फ़िल्म।"

कानजी ने फ़िल्म के बाद कंपनी भी लिख दिया।

मदन ने कहा—"रविन ! बहुत शांत होकर बैठ गए हो भाई ! डोरा, तुम भी तो।"

डोरा ने तत्क्षण उत्तर दिया—"कानजी फ़िल्म-कंपनी बना रहे हैं न, उसे ही देख रही हूँ।"

मदन ने भी वह लिखा हुआ देखा, और हँसकर कहने लगा—"मेरे पैड पर क्या, इन्होंने ये शब्द मेरी खोपड़ी पर लिख दिए हैं। मुझे सोते-जागते, उठते-बैठते वही फ़िल्म-कंपनी दिखाई दे रही है।"

रबिन बोला—"कानजी, आपकी हस्त-लिपि बहुत सुंदर है।"

मदन ने बीच में ही कहा—"किंतु कुमारी डोरा! तुम फ़िल्म-कंपनी के दर्शकों में रहोगी क्या?"

रबिन ने मेज़ के नीचे अपना पैर बढ़ा, डोरा का जूता दबाकर उसे सावधान किया।

डोरा कहने लगी—"मेरी योग्यता ही क्या है मिस्टर मदन, जो मैं फ़िल्म-निर्माण-कर्ताओं के दल में शामिल हो सकूँ।"

मदन—"योग्यता का निर्णय हम कर लेंगे; जहाँ कभी देखेंगे, वहाँ बता दिया जायगा। आप तो पढ़ी-लिखी हैं न?"

डोरा को मूक देखकर रबिन बोल उठा—"लेकिन इनकी पढ़ाई-लिखाई का क्या होगा? यह स्वतंत्र थोड़े हैं। इनके पिताजी की सम्मति लेनी पड़ेगी न?"

मदन बोला—"पढ़ाई-लिखाई की क्या चिंता है। हम इनके अवकाश के समय ही इनका दृश्य लेंगे।"

रबिन कहने लगा—"हाँ, तब तो ठीक है।"

कानजी बोले—"रह गई इनके पिताजी की सम्मति, यह अगर राज़ी हो जायँगी तो वह भी मंजूरी दे देंगे।"

डोरा—"मेरी वृत्तियाँ उधर ज़रूर हैं।"

मदन ने जोश में कहा—"मैं भी तुम्हें वह ऐक्ट्रेस बना दूँगा कि तुम्हारा सितारा नई और पुरानी दुनिया में चमकने लगेगा।"

कानजी—"कुमारी डोरा, तो तुम हमारी फ़िल्म-कंपनी की ऐक्ट्रेस होने का वादा करती हो?"

रबिन ने डोरा से कहा—"डोरा वादा सोच-विचारकर ही करना उचित होता है।"

डोरा—"हाँ, मैं विचारकर ही उत्तर दूँगी।"

रबिन हर प्रश्न को व्यवसाय की कसौटी पर कसनेवालों में से था। कहने लगा—"इनका वेतन ?"

कानजी भी उन्नीस न थे, कहने लगे—"जब यह सम्मति देंगी, तभी निश्चित हो जायगा। उसमें क्या देर लगेगी।"

रबिन ने अपना पुराना वाक्य दोहराया—"ऑफ़िस में कोई नहीं है, अब आज्ञा दीजिए।"

रबिन के साथ डोरा भी चली गई। उनके जाने के बाद कानजी बोले—"इसने बड़ा सुंदर पार्ट किया। यह पहली ही फ़िल्म में चमक उठेगी।"

मदन—"मैंने ठीक ही कहा था न ? मैं समझता हूँ, आपको फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर से आज ही मिल लेना चाहिए। कदाचित् फिर बहुत देर हो जाय, और बीच में ही कोई दूसरा सौदा न कर ले जाय।"

"तीन लाख माँगते हैं। कौन दे देगा ?"

"फिर बात करने में क्या हानि है ?"

"चलो। लेकिन हमें तो सिर्फ़ उनका रिकार्डिंगसेट् और कैमरा खरीदने हैं।"

"उन्हीं का सौदा करेंगे।"

तीसरा परिच्छेद

नई मित्रता

फ़ोकस-फिल्म-कंपनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर कहने लगे—"हमें स्टूडियो और उसके अंदर जो कुछ है, सब एक साथ ही बेच डालना है। मशीनें आपके हाथ बेच देंगे, तो इस खाली पिंजरे का खरीदार कौन हमारे पास आवेगा? हमारे तो फिर चौथाई दाम उठने भी मुश्किल हो जायँगे। सब सामान नया है, एक दिन भी तो काम नहीं आया।"

मदन ने उत्तर दिया—"शहर में इतनी फ़िल्म-कंपनियाँ हैं, कोई-न-कोई गाहक शेष सामान के लिये मिल ही जायगा।"

कानजी बोले—"जमीन और इमारत खरीदकर हमें क्या करना है। हमारा गोल्डन पाम्स-नामक बँगला पर्याप्त बड़ा है। कुछ थोड़ा-सा घटा-बढ़ाकर हम उसे स्टूडियो के लायक़ बना लेंगे। खूब लंबा-चौड़ा बगीचा साथ। छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर बसी हुई कितनी सुंदर जगह है! निकट ही महा-समुद्र लहराता है। हमें बहुत-से बाह्य दृश्यों के लिये भी दूर नहीं जाना पड़ेगा। आपका यह स्टूडियो किस काम का? जिस

पैसे को हम यहाँ व्यर्थ ही लगा दें, उससे अमेरिका या योरप से कोई अच्छा आर्टिस्ट या टैकनीशियन न बुला लेंगे ?"

कानजी को कुछ विश्राम करने का अवसर देते हुए मदन बोला—"आपके यह तमाम सेट् और कसट्यूम बिलकुल मॉडर्न हैं, हमें तो पौराणिक काल की पहली पाँच तसवीरें निकालनी हैं न ?"

मदन बोला—"केवल दोनो मशीनों के दाम कहिए। चलिए, सौदा करें। मशीनों की परीक्षा भी आपको देनी होगी।"

मैनेजिंग डाइरेक्टर कहने लगे—"जब चाहे ले लीजिए। बिलकुल नई, ऑर्डर में हैं, और तमाम अप-टू-डेट संशोधनों से परिपूर्ण।"

मदन—"दाम कहिए दाम। कल मशीनें जाँच लेंगे।"

मैनेजिंग डाइरेक्टर—"और डाइरेक्टरों की राय भी ले लेनी है। यदि अलग बेचने को तैयार हुए, तो फिर हिसाब देखकर आपको सूचना दूँगा।"

कानजी—'बहुत शीघ्रता कीजिएगा। हम इस महीने में सब कुछ फ़िट् कर लेना चाहते हैं।"

लौटते हुए, मार्ग में मदन ने कानजी से कहा—"मशीनें अच्छी, मज़बूत बनी हैं। कल मैं अपनी कंपनी से कैमरा-मैन और साउंडरेकॉर्डर, दोनो को बुला लाऊँगा। मशीनें बिना परीक्षा किए ख़रीद लेना बुद्धिमानी न होगी।"

"ठीक बात है। जाँच के लिये कल डोरा को बुला लाओ। आज ही उसे सूचित कर देना। कल कितने बजे ?"

"यही बारह बजे। डोरा को भी इतवार होने के कारण छुट्टी रहेगी। पौन लाख रुपए तक की मशीनें होंगी ही। पचास हज़ार तक में सौदा पट जाता, तो ठीक था। अब आपको सिर्फ़ पिताजी को राज़ी कर लेना है।"

"पचास हज़ार में न देगा।"

"मशीनें लाख नई हों, हुई तो सेकिंडहैंड ही।"

"देखो, फिर क्या होता है। कल ग्यारह बजे न ? मैं मोटर लेकर तुम्हारे होटल में आ जाऊँगा, और डोरा तथा दोनों टैकनीशियनों को लेकर बारह बजे तक फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में पहुँच जायँगे।'

परस्पर अभिवादन कर दोनो मित्र एक दूसरे से बिदा हुए।

रबिन डोरा से विवाह करना ज़रूर चाहता था, पर न-जाने क्यों साल-भर से टालमटोल करता चला आ रहा था। उस दिन कानजी और मदन के मुख से डोरा के रूप और गुण की प्रशंसा सुनकर रबिन का प्रेम वर्षा-काल की सरिता के समान उमड़ पड़ा।

मदन के कमरे से लौटते हुए उसने डोरा का हाथ पकड़ा, और प्रेम-स्वर में कहा—"डोरा, तुमसे कुछ माँगता हूँ।"

डोरा होटल की सीढ़ियों पर उतरने लगी थी, लौटकर रबिन के साथ उसके कमरे की ओर चली।

कमरे में पहुँच कर रबिन ने कहा—"डोरा, बहुत सावधानी से काम लेने की जरूरत है। मदन और कानजी, मुझे ये दोनो मनुष्य बड़े डरावने प्रतीत होते हैं।"

डोरा के कान के पास की लट में पिन कुछ ढीली पड़ गई थी, उसने उसे खोंसते हुए कहा—"मुझे वे दोनो बड़े सभ्य और सुशिक्षित प्रतीत होते हैं। प्यारे रबिन, क्या मनुष्य को मनुष्य का ऐसा अविश्वास करना चाहिए?"

"डोरा, अगर तुम ऐक्ट्रेस बनने के बजाय कोई दूसरी लाइन चुनो, तो क्या बुराई है?"

"बुराई तो कुछ भी नहीं, लेकिन मेरा मन इस सेलूलॉइड की कीर्ति प्राप्त करने के लिये बेचैन हो उठा है। प्यारे रबिन, तुम्हारे लिये मेरे हृदय में अनंत प्रेम है। तुम मेरे मार्ग में काँटे न रक्खोगे, ऐसा दृढ़ विश्वास रखती हूँ। यद्यपि मेरी योग्यता कुछ भी नहीं, तथापि मेरे मन के भीतर से कोई आवाज मुझसे निरंतर कह रही है कि मैं तुझे पहली ही फ़िल्म में उज्ज्वलतम तारिकाओं के बीच में चमका दूँगी। तुम्हें मेरे ऐक्ट्रेस बनने में क्या बुराई नज़र आती है?"

"ऐक्ट्रेस बनने में तो कुछ बुराई नहीं। इतनी स्त्रियाँ स्कूल, अस्पताल, रेल, तार, दूकानों, दफ़्तरो में काम कर रही हैं। ऐक्ट्रेस का भी एक प्रोफेशन है। लेकिन डोरा, ये दोनो—"

"वे दोनो क्या? वे तो स्टूडियो के वातावरण को बहुत शुद्ध रखने का उद्देश्य सोचते हैं न?"

"तुमने अपने पिताजी को अपनी इस रुचि का कभी पता दिया ?"

"नहीं, कभी नहीं। आज जाकर कहूँगी। तुम्हें भी इस बात में मेरा ही पक्ष लेना होगा।"

"यदि तुम मेरा कहना मानो, तो।"

डोरा ने रबिन का हाथ पकड़कर कहा—"तुम्हारा कहना कब नहीं माना रबिन।"

"प्रतिज्ञा करो।"

डोरा ने अपना सिर रबिन के कंधे पर लटका दिया, और कहा—"प्रतिज्ञा करती हूँ, जीवन-पर्यंत आपका कहना मानूँगी।"

रबिन ने न-जाने कब से वह अँगूठी बनवाकर अपने पास रख छोड़ी थी। उसका ऊपरी भाग घूमनेवाला था। उसमें एक ओर 'आर' और दूसरी ओर 'डी' के अँगरेजी-अक्षर अंकित थे। रबिन ने 'डी' अक्षर सामने कर वह अँगूठी डोरा की अनामिका में पहना दी।

डोरा ने भावावेश में कहा—"रबिन, डोरा तुम्हारी है। दासी का अविश्वास क्यों करते हो ?"

"अविश्वास की कोई बात नहीं डोरा ! तुम नवीन वसंत के फूलों के समान निर्मल हो. और संसार ! उफ् ! जब उसकी लू और लपट की ओर देखता हूँ, तो काँप उठता हूँ। तुम्हें बिना मेरी आज्ञा प्राप्त किए मदन और कानजी से कोई बात न करनी होगी। स्वीकार है ?"

"हाँ, स्वीकार है।"

इसी समय होटल का गाइड रेल के स्टेशन से कुछ यात्रियों को लेकर चला आ रहा था। रबिन कहने लगा—"कोई आ रहे हैं। तुम इस समय जाओ, रात को, अवसर मिलने पर, मैं तुम्हारे पिताजी से भेंट करूँगा।"

डोरा बिदा होकर अपने घर पहुँच गई।

कानजी मोटर में अपने बँगले पर आए। अब फ़िल्म-कंपनी के स्वप्न उनके मन में अधिक घनत्व धारण कर नाचने लगे थे। वह विचारने लगे—"यह डोरा कितनी सुंदरी है? केवल इस एक ही तारिका से सारी कंपनी जगमगा उठेगी।"

घर पहुँचते ही कानजी पिता के कमरे में दाखिल हुए। पिताजी ने कहा—"कहाँ? मिल में गए थे कानजी!"

"नहीं।"

"देखता हूँ, तुम्हारा मन कहीं भी नहीं लगता है। बड़ी लज्जा की बात है कानजी! घर का काम-काज करने के लिये तुमने कॉलेज छोड़ा था, और अब यह हाल है!"

"देखिए पिताजी, मैं अब मन लगा रहा हूँ। पर पूँजी चाहिए न?"

"क्या पूँजी चाहिए। सात लाख की मेरी मिल है। परिश्रम करना सीखो बेटा! मेरे पास सात पैसे न थे, जब मैंने काम आरंभ किया था।"

"परिश्रम से नहीं भागता हूँ पिताजी!"

"रात-रात-भर जागकर ब्रिज और बिलियार्ड खेलना; सिनेमा, नाटक और नृत्य में समय बिता देना परिश्रम करना नहीं है। कुछ आदमी बनो बेटा!"

"फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर से मिला था।'

"फ़िल्म-कंपनी से कुछ न होगा! देखते नहीं हो। कितने लोग इसके कारण तबाह हो गए।"

"वे अपनी मूर्खता और नातजुर्बेकारी के कारण बरबाद हुए हैं। जो लोग उससे बने हैं, उनकी तो आपने गणना ही नहीं की।"

"वे लोग पाँच-सात प्रतिशतक से अधिक न होंगे।"

"सिर्फ़ दो लाख रुपए माँगता हूँ पिताजी ज्यादा नहीं। आप जिस प्रकार उसे फ़िल्म-कंपनी में खर्च करने को कहेंगे, उसी तरह खर्च करूँगा। अच्छा स्टाफ़ रक्खेंगे, अच्छा उद्देश्य रक्खेंगे, अच्छी बात विचारेंगे, और अच्छी कहानी लिखावेंगे। आप विश्वास रखिए, संसार में कोई भी हमारी ओर उँगली न उठा सकेगा।"

पिताजी ने शंका के भाव प्रकट किए।

कानजी कहते जा रहे थे—"नंबर ए-वन् का बिजनेस है, और साथ ही तुर्रा यह कि उसमें मुल्क की भलाई है। जो शिक्षा बड़े-बड़े विश्वविद्यालय नहीं फैला सके, उनसे अच्छी शिक्षा, अल्प समय में, बिना किताबों के ही, फ़िल्म की कंपनी फैला सकती है।"

पिताजी ने गंभीर मुद्रा से कहा—"हूँऽ।"

कानजी—"भारतवर्ष में नाना प्रकार के दृश्य, आब-हवा, जातियाँ, आचार-व्यवहार, वेश-भूषा आदि अत्यंत अद्भुत हैं। विदेशी लोगों को वे सब बड़े मधुर प्रतीत होते हैं। फिर यहाँ के इतिहास-पुराणों में भी त्याग और वीरता के सहस्रों ज्वलंत उदाहरण भरे पड़े हैं। विदेशी लोग यहाँ के कथानक देखना बहुत पसंद करते हैं। यहाँ की फ़िल्में अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में ऐसी चलतीं, ऐसी चलतीं कि कुछ पूछिए नहीं। लेकिन कोई फ़िल्म ही न बन सकी। अब टॉकी ने और भी बात बिगाड़ दी।"

सहसा टेलीफ़ोन की घंटी बज उठी। पिताजी ने उधर ध्यान दिया, और कानजी मेज़ पर से दैनिक पत्र उठा अपने कमरे की ओर चले।

उधर डोरा भी अपने पिताजी की फ़ैक्टरी में पहुँची। पिताजी ऑफ़िस में अपनी मेज़ पर कुछ बिलों का टोटल कर रहे थे। डोरा जाकर धीरे से उनके निकट की कुरसी पर बैठ गई।

हिसाब जोड़कर पिताजी बोले—"क्यों डोरा?"

"हाँ पिताजी!"—डोरा ने विनम्र भाव से कहा।

"कहाँ, रबिन के पास गई थीं?"

"हाँ, उन्होंने कानजी से परिचय कराया।"

"कानजी कौन?"

"दी ग्रेट साइकिल-एजेंसी के स्वामी के पुत्र, उनकी एक ऊन की मिल भी तो है न ?"

"ठीक है। समझ गया।"

"कानजी एक फिल्म-कम्पनी खोलने का विचार कर रहे हैं।"

"धनवान् हैं, जो चाहें, कर सकते हैं।"

"स्कूल के ड्रामा में वह मेरा ऐक्टिंग देख चुके हैं।"

"देखा होगा।"

"वह अपनी कंपनी में पढ़े-लिखों का ही स्टाफ़ रक्खेंगे।"

"अच्छी बात है।"

"कंपनी में पार्ट करने के लिये उन्हें ऐक्ट्रेसों की भी ज़रूरत है।"

"होगी।"

"और वह मेरे थिएट्रिकल इंस्टिंक्ट को भी अवसर देना चाहते हैं ?"

"अर्थात् तुम्हें अपनी कंपनी में ऐक्ट्रेस के रूप में शामिल करना चाहते हैं।"

"जी। आप क्या आज्ञा देते हैं ?"

"मैं अब केवल एड़ी और पंजे की बात जानता हूँ। तुमने रबिन की अनुमति नहीं ली ? वह क्या कहता है ? वह बड़ा समझदार है, इन सब बातों की अप-टू-डेट ख़बरें रखता है।"

"उन्होंने मुझे उनसे मिलाया ही इसीलिये।"

"तो कुछ भी हानि नहीं। मैं समझता हूँ, यदि सोसाइटी ठीक है, तो क्या डर है। लेकिन तुम्हारे पढ़ने-लिखने का क्या होगा ?"

"पढ़ने-लिखने का मतलब जब नौकरी है, तो नौकरी मिल जाने पर फिर पढ़ने-लिखने का कुछ भी अर्थ नहीं रह जाता। फिर सिनेमा का स्टूडियो किसी कॉलेज से कम नहीं। उसके अंदर दुनिया-भर की कलाएँ हैं। एक ही को सीखने के लिये अनेक जन्मों की आवश्यकता है। ऐक्टिंग बड़ा फ़ाइन आर्ट है, उसे सिखूँगी। यह क्या बड़ी शिक्षा न होगी ? इसके अतिरिक्त वह कहते हैं, मेरे अवकाश पर ही वह अपना समय निर्धारित कर देंगे।"

रात को रबिन के आने पर फिर वही चर्चा छिड़ी।

रबिन ने कहा—'मदन और कानजी आज फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर से बातें कर आए हैं। मशीनों का सौदा कर रहे हैं। कल उनका ट्रायल लेने जायँगे।"

डोरा के पिता ने कहा—"क्या ट्रायल लेंगे ?"

रबिन—"यही की फ़ोटो ठीक-ठीक आती है या नहीं ? और साउंड ठीक-ठीक रेकार्ड होती है या नहीं। डोरा, तुम्हें भी वहाँ चलने के लिये कहते थे। कल इतवार है।"

पिता—"डोरा वहाँ क्या करेंगी ?"

रबिन—"ऐक्टिंग करेंगी। मशीनों के साथ-साथ इनकी भी जाँच होगी।"

डोरा मन-ही-मन आनंद से नाच उठी। कहने लगी—"कल कितने बजे जाना होगा ?"

रबिन ने उसके पिता से पूछा—"आपकी अनुमति है न ?"

पिता—"डोरा को मन से तुम्हें सौंप चुका हूँ, केवल समाज के व्यावहारिक रूप में देना बाक़ी है। इस पर अपना अधिकार समझो।"

रबिन ने कृतकृत्य होकर कहा—"ग्यारह बजे होटल में आ जाना।"

[illegible] परिच्छेद

रजत-पट

मदन की दे-मार-फ़िल्म-कंपनी में इतवार की छुट्टी का कोई नियम न था। कभी हो भी जाती थी, और कभी काम के आधिक्य से न भी होती थी।

दूसरे दिन, इतवार की सुबह, सूर्योदय से भी पहले मदन ने साइकिल उठाई, और स्टूडियो में काम का पता लगाने चला।

स्टूडियो में बढ़ई और पेंटर लोग काम पर जुटे हुए थे। दरबार का एक सेट् बनने को था, उसे आधा भी तैयार न देखकर मन-ही-मन कहने लगा—"चलो, यह भी ठीक ही है।"

उसने धीरज के साथ एक पेंटर के निकट जाकर पूछा—"क्यों पेंटर साहब! सेट् तो आज दिन-भर में भी पूरा न होगा।"

पेंटर ने उत्तर दिया—"अजी, सेट् परसों ही बन गया था। डाइरेक्टर साहब न-जाने किस सिड़ी को उस दिन पकड़ लाए। वह कहने लगा, कहानी है मुग़लों के वक़्त की, और सेट् में तमाम रेखाएँ हैं बौद्धों के समय की। क्या हिस्ट्री की

बारीकियाँ निकालते हैं ! पबलिक में कौन इन बारीकियों का समझदार है। नेचुरल बनावेंग नेचुरल ! मैं कहता हूँ, क्या मुग़ल लोग यही जबान बोलते थे, जिसमें इस स्टोरी के डायलॉग लिखे गए हैं। जब ज़बान बदली जा सकती है, तो दरबार में भी परिवर्तन हो सकता है।"

मदन मन-ही-मन हँसते हुए कहने लगा—"उस फ़िल्म का यही एक सीन बाक़ी है। और शूटिंग कुछ है नहीं। रिहर्सल भी न होगी क्या ?"

"नहीं, आज ऐक्टरों को छुट्टी दे दी गई है। जाइए, मज़े कीजिए, इतवार मनाइए।"

मदन खुश होकर कंपनी के कैमरामैन और साउंड-रिकॉर्डर के पास गया, और उनसे ग्यारह बजे होटल में आ जाने का वादा लेकर वापस चला गया।

होटल में पहुँचकर उसने स्नान किया, और खाना खाया। ग्यारह बजे मोटर लेकर कानजी भी आ पहुँचे।

मदन बोला—"कंपनी में आज छुट्टी है। कैमरामैन और साउंड-रिकॉर्डर, दोनो से सुबह जाकर कह आया हूँ। वे आते होंगे।'

कानजी—"और डोरा ?"

मदन—"रबिन कल रात ही जाकर उससे कह आया था।'

कानजी—"उसने क्या उत्तर दिया ? तुमने रबिन से पूछा नहीं ?"

मदन—"न आकर जायगी कहाँ कानजी ! यह फ़िल्म का फंदा बड़ा बेढब है। जो इसमें फँसा, वह फिर इससे निकलकर जायगा ? अगर कहीं चला भी जाय, तो आ-आकर फिर इसी में फँसता है।"

कानजी ने घड़ी देखकर पूछा—"कितने बजे आवेगी ?"

"ग्यारह।"

'ग्यारह बज चुका। दस मिनट भी हो गए।"

"धीरज रखिए। लीजिए, तब तक यह सिगार पीजिए। पूँजी की बात तो सुनाइए। पिताजी राजी हैं ?"

"अभी तो नहीं। जान पड़ता है, उन्हें राज़ी करने के लिये कुछ विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा।"

इसी समय डोरा और रबिन ने वहाँ प्रवेश किया, और अभिवादन कर कुरसियों पर बैठ गए।

रबिन बोला—"क्या देर है ?"

मदन—"कुछ नहीं, बस चलते हैं। फ़ोटोग्राफ़र और ऑडियोग्राफ़र, इन दोनो का इंतज़ार है।"

कानजी ने पूछा—"क्यों मिस डोरा, आपके पिताजी आपको सिनेमा में ऐक्टिंग करने की आज्ञा देंगे ?"

रबिन ने उत्तर दिया—"हाँ, मैंने उनसे कहा था। जान पड़ता है, अगर डोरा की शिक्षा में कोई बाधा न पड़े, तो आज्ञा दे देंगे।"

सहसा मदन को कुछ याद आई। उसने कहा—"एक बात तो रह गई !"

कानजी—"क्या ?"

"म्यूज़िक के इफ़ेक्ट देने के लिये किसी से कहना भूल गया।"

कानजी बोले—"ठीक है, मिस डोरा के गीत भी तो होंगे। इनके साथ के लिये भी बाजेवालों का होना जरूरी है।"

मदन जाकर एक बाजेवाले और एक तबलेवाले को भी ले आया। उसी अवकाश में दोनो टेकनीशियन भी आ पहुँचे।

कानजी, रबिन और डोरा मोटरकार में तथा शेष व्यक्ति अपनी-अपनी साइकिलों पर फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी के स्टूडियो में जा पहुँचे। उसके मैनेजिंग डाइरेक्टर वहाँ थे नहीं निकट ही कहीं रहते थे। चौकीदार भेजकर उन्हें बुलवाया गया।

उनके आने पर स्टूडियो खुला। स्टूडियो-भर में तमाम चीजें इधर-उधर अस्त-व्यस्त थीं। जगह-जगह कूड़ा भी पड़ा हुआ था। मदन ने चार मज़दूरों को बुलाया, और उनसे स्टूडियो का एक कोना साफ़ करवाया। टेकनीशियन अपनी-अपनी मशीनें फ़िट करने लगे।

मदन ने पूछा—"रॉ मैटीरियल और कैमीकल्स तो हैं न ?"

मैनेजिंग डाइरेक्टर ने कहा—"फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में

कमी किस चीज़ की है। वह तो आपस की फूट इसे खा गई, जो आज आप इसे इस रूप में देखते हैं। नहीं तो क्या ये मशीनें इस तरह बेचने के लिये मँगाई गई थीं ?"

मदन ने पूछा—"डार्करूम तो ठीक ऑर्डर में है न ?"

मैनेजिंग डाइरेक्टर—"मेरी समझ में ठीक ही है। आप लोग निरीक्षण कर लीजिए।"

मदन—"पहले यहाँ सेट् दुरुस्त कर शूटिंग आरंभ कर लें, फिर देख लिया जायगा।"

मैनेजिंग डाइरेक्टर—"क्या शूटिंग कीजिएगा ?"

मदन—"देखिए, जो कुछ हो जाय।"

मैनेजिंग डाइरेक्टर—"सिनेरियो है ?"

मदन—"स्टोरी, सिनेरियो और सिचुएशन, ये सब दिमाग़ में रहते हैं।"

मैनेजिंग डाइरेक्टर—"डायलॉग ?"

मदन—"देखिए, अभी सब एक्सटेंपोर हुआ जाता है।"

मैनेजिंग डाइरेक्टर ने कुछ चकित होकर कहा—"अच्छा ?"

मदन ने कहा—"कहिए मिस डोरा, कौन-सा पार्ट कीजिएगा ?"

डोरा—"अकेले ?"

मदन—"नहीं, रबिन और कानजी, ये दोनो भी साथ देंगे।"

रबिन—"भाई मदन, मुझे बताते रहना, क्या कहना और क्या करना होगा।"

मदन—"अभी स्टोरी छाँटकर तुम्हें तुम्हारी स्थिति समझा देता हूँ। तुम समझदार आदमी हो। कहानी का ध्यान रक्खोगे, तो जो मुँह से निकलेगा, ठीक ही होगा; जैसे हाथ-पैर चलाओगे, दुरुस्त ही होंगे।"

कानजी बोले—"मेरी समझ में हरिश्चद्र के कथानक का कोई टुकड़ा ही फ़िल्म किया जाय।"

डोरा—"ठीक है, बड़ी सरलता होगी। मुझे अभी तक शैब्या की भूमिका खूब याद है।"

बाजेवाले खींच-ठोककर किसी पुराने नाटक का मंगलाचरण बजाने लगे थे। टैकनीशियन मशीनों में फ़िल्में फ़िट कर रहे थे। मदन के आदेशानुसार बढ़ई और मज़दूर एक मंदिर के सेट् लगा रहे थे। स्टूडियो में नए प्राण भर गए थे।

मैनेजिंग डाइरेक्टर एक कोने की कुरसी पर बैठकर यह सब कुछ देखने लगे। उन्होंने मन में विचारा—"कैसे स्निग्ध और मधुर वातावरण से इन लोगों ने आते ही स्टूडियो को परिपूर्ण कर दिया है। ऐसे लोग हमारी कंपनी को नसीब नहीं हुए!"

मदन बोला—"काशीजी में हरिश्चंद्र के सपरिवार अपने को बेच देने का सीन चलावेंगे। डोरा शैब्या का पार्ट खेलेंगी, और रबिन, तुम हरिश्चंद्र बनोगे। मैं सेठ की भूमिका लूँगा।"

डोरा—"लेकिन रोहिताश्व कौन बनेगा ?"

मदन ने कुछ चिंता कर कहा—"किसी को बना लेंगे। कानजी, आप विश्वामित्र की भूमिका लेंगे।"

रबिन—"हरिश्चंद्र ड्रामा तो मैंने देखा है, पर कहानी ठीक-ठीक याद नहीं। सिचुएशन अच्छी तरह समझा देना मदन !"

मदन—"हाँ। चलो, पहले परिच्छद-गृह में जाकर, कपड़े पहनकर मेक-अप ठीक कर लो।"

एक लड़का रोहिताश्व बनाने के लिये बुला लिया गया। ऐक्टरों को लेकर मदन परिच्छद-गृह की ओर चला। मैनेजिंग डाइरेक्टर भी उठे। मदन ने उनसे परिच्छद और अलंकार लेकर यथायोग्य एक्टरों को दिए। उन्हें उचित आदेश देकर मदन बढ़इयों के पास आया, और सेट् का निरीक्षण करने लगा।

कुछ थोड़ा-सा संशोधन कराकर मदन ने दूसरे कोने में एक घर के कमरे का सेट् लगवाना आरंभ किया। उन्हें उचित परामर्श देकर वह टैकनीशियनों के पास गया, और उनसे कहा—"तैयार हो ?"

कैमरामैन बोला—"मेन स्क्रू खराब है, और एक लेंस का पता ही नहीं।"

मदन—"देखूँ तो।"

मदन ने मैनेजिंग डाइरेक्टर की ओर संशय की दृष्टि की।

मैनेजिंग डाइरेक्टर ने कहा—"उन डिब्बों में देख लिया ?"

मदन ने डिब्बा खोला, लेंस उसमें मिल गया। मदन कैमरा-मैन रह चुका था, पर उसे अपनी आकांक्षा के अनुकूल न पाकर डाइरेक्टरी की ओर लपक गया था। लेंस लगाकर उसने स्क्रू हाथ में लिया, और उसे भी ठीक कर बोला—"अब तो रेडी हो न ?"

कैमरामैन ने दबी जुबान से कहा—"हाँ।"

"और आप भी ओ० के० हैं न ?"—मदन ने ध्वनि-आलेखक से पूछा।

उसने उत्तर दिया—"सब कुछ ठीक है; बस, आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है।"

"अच्छी बात है।"—कहकर मदन बाजेवालों के पास गया।

मदन को देखकर सरंगीवाले ने बाजा बंद कर दिया। मदन ने कहा—"पियानो पर बैठो।"

वह पियानो पर बैठा, और मदन ने डोरा को बुलाया। साथ ही रबिन भी आ पहुँचा। दोनो हरिश्चंद्र और शैव्या का वेष रख चुके थे।

मदन ने पूछा—"कुमारी डोरा ! इस दृश्य में तुम्हारा एक गीत भी तो है न ?"

"हाँ।"

"लो, जरा बाजे में ठीक तो कर लो।"

डोरा गाने लगी। उसकी कोमल और करुण रागिनी से समस्त स्टूडियो में बिजली प्रवाहित होने लगी। उसका गीत, सुनकर कानजी, विश्वामित्र बने, अपनी जटा सँभालते हुए, और खड़ाऊँ खटखटाते हुए वहीं आ पहुँचे। टैकनीशियन भी तैयार हो गए, और मिस्त्री भी सामने खड़ा हो कहने लगा—"दूसरा सेट् भी तैयार है।"

मदन ने कहा—"उसमें रखने के लिये एक चक्की भी चाहिए। यहाँ है?"

"यहाँ तो नहीं, पर कहीं से किराए पर मिल सकती है।"

"किसी को भेजकर मँगवाओ। बहुत जरूरी है। उसके" विना दृश्य का सारा प्रभाव जाता रहेगा।"

मिस्त्री ने जाकर एक मजदूर भेजा।

मदन बोला—"यह गीत तो ठीक है।"

कानजी—"ठीक क्या, बिलकुल ठीक है, इससे अच्छा और क्या हो सकता है?"

मदन—"सच है। काशीजी के दृश्य के बाद सेठ के यह बिकी हुई शैव्या का सीन चलेगा। उसमें शैव्या का चक्की पीसते समय भी तो एक गीत है न?"

डोरा—"हाँ।"

मदन—"उसे भी गाकर ठीक कर लो।"

डोरा गीत ठीक करने लगी। मदन ने तमाम मजदूर और बढ़इयों को बुलाकर उनसे कहा—"चलिए, आप लोग भी

परिच्छद-गृह में चलिए। आप लोगों को भी ऐक्टर बना देता हूँ।"

मदन उन सबको परिच्छद-गृह में ले गया। उसने उन सबको भाँति-भाँति के वस्त्र पहनाए। मेक-अप की आवश्यकता नहीं समझी गई।

मदन ने सबको स्टूडियो में एकत्र कर पहले मजदूरों से कहा—"सबसे पहले आप लोग एक-एक, दो-दो कर मंदिर जायँगे, और पूजा करेंगे। कोई बाहर घंटा बजावेगा, कोई परिक्रमा करेगा। उस तरफ़ से धीरज के साथ आप लोग चले आवेंगे। उसके बाद गाती हुई शैव्या हरिश्चंद्र और रोहिताश्व के साथ इस मार्ग से जायँगी। देखो मिस्टर रबिन, सिचुएशन इस प्रकार है—राजा हरिश्चंद्र अपना राज-पाट विश्वामित्र को देकर दीन दशा में काशी में भ्रमण कर रहा है। उसे विश्वामित्र को दक्षिणा देनी है। विश्वामित्र बहुत क्रुद्ध हो हरिश्चंद्र से अपनी दक्षिणा माँगते हैं। हरिश्चंद्र शैव्या और रोहिताश्व को बेचने के लिये मार्ग में आवाज़ लगाता है। इसके बाद मैं सेठ के वेश में आकर शैव्या और रोहिताश्व को ख़रीद ले जाऊँगा।"

कानजो बोले—"अगर विश्वामित्र ही उन्हें ख़रीदकर ले जाय, तो क्या हानि है?"

मदन ने कहा—"तपस्वी विश्वामित्र दास-दासी ख़रीदकर करेंगे क्या? फिर यह बात पुराणों के ख़िलाफ़ पड़ जाती है।

सेठ से प्राप्त धन विश्वामित्र को देकर हरिश्चंद्र फिर अपने को बेचेंगे। एक चांडाल आकर उन्हें ख़रीद ले जायगा, और विश्वामित्र अपनी दक्षिणा लेकर चल देंगे। यहीं दृश्य समाप्त कर दिया जायगा।"

कानजी—"चांडाल का पार्ट कौन करेगा?"

मदन—"मैं। कुछ अवकाश मिलेगा। कपड़े पहले ही से तयार रक्खूँगा, फ़ौरन् पहनकर आ जाऊँगा। अच्छा, अब आप लोग प्रस्तुत हो जाइए। देर हो रही है। फ़िल्म आज ही डेवेलप कर छाप भी लेनी है। आज ही रात को इसका शो होगा।"

दोनो टैकनीशियन अपनी-अपनी मशीनों पर गए।

मदन ने कहा—"अगर सावधानी से आप लोग अपना-अपना पार्ट समझकर करेंगे, तो सब ठीक ही होगा। रिहर्सल का समय नहीं।"

मदन ने रेंज के बाहर एक ओर उन एक्स्ट्रा ऐक्टरों को एक जगह विश्वामित्र और दूसरे स्थान में हरिश्चंद्र, शैव्या और रोहिताश्व को खड़ा किया।

कानजी मन-ही-मन कहने लगे—"इस वेश में यह कितनी सुंदरी दिखाई दे रही है!"

मदन ने कहा—"जब मैं संकेत दूँ, तो आप लोग चलना आरंभ कीजिएगा।"

इसके पश्चात् मदन बाजेवालों के पास गया और हारमो-

नियम-मास्टर से कुछ मधुर स्वरों में बैक ग्रॉउंड म्यूज़िक देने के लिये कहा। अंत में लाइटिंग के इफ़ेक्ट अपने हाथ में लेकर मदन ने संकेत दिया।

एक्स्ट्रा ऐक्टर मंदिर की ओर चल पड़े, और दोनो मशीनें स्वर और आलोक का अंकन करने लगीं। मदन ने कुछ देर बाद कैमरामैन से कोण बदल देने को कहा। कोण बदल दिया गया। मज़दूर बड़े भक्त-भाव से मंदिर में पूजा और परिक्रमा करने लगे।

सेट के एक कोने में मंदिर का बाह्य भाग लगाया गया था, उसके दाहनी ओर मंदिर का फाटक, फिर मार्ग के दृश्य सजाए गए थे।

मदन के आज्ञानुसार ट्रेकिंग से मंदिर का दृश्य लिया गया। इसके अनंतर हरिश्चंद्र, शैव्या और रोहिताश्व को मंदिर की ओर जाने का संकेत दिया गया। शैव्या गाती हुई चली।

गीत समाप्त कर शैव्या बोली—"हा भगवान्! मेरा रोहिताश्व, जिसे फूलों की शय्या चुभती थी, आज इस प्रकार नंगे पैर कठोर धरती पर विचरण कर रहा है!"

मदन ने हरिश्चंद्र को कुछ बोलने का संकेत दिया।

हरिश्चंद्र बोला—"प्यारी शैव्या, दुःख न करो। नंगे पैर भटकने में जो आनंद है, वह मोटर की सवारी में कहाँ?"

डोरा हँसी न रोक सकी। ज़ोर से खिलखिलाकर हँस पड़ी।

उसे हँसते देखकर जो बात न भी समझते थे, वे भी अट्टहास कर उठे।

मदन ने मशीनें रुकवाने को कहा —"क्या हो गया तुम्हें रबिन ! क्या एनेक्रॉनिज्म मिला दिया ?"

रबिन ने पूछा—"एनेक्रॉनिज्म क्या हुआ ?"

"यही, हरिश्चंद्र के समय में मोटर कहाँ थी ? ज़रा सावधान होकर काम करो। ट्रायल समझकर मज़ाक न करो। इसी ट्रायल पर कंपनी की बुनियाद है, कुछ और सीरियस होकर काम करो।"

रबिन को भूल ज्ञात हुई। उसने कहा—"मुआफ़ कीजिए डाइरेक्टर साहब ! अब ऐसी ग़लती न होगी। एडिट करते वक़्त फ़िल्म का उतना टुकड़ा काटकर फेंक देना।"

फिर शूटिंग आरंभ हुई। इस बार हरिश्चंद्र बोले—"दुःख न करो रानी ! सचाई की राह में हर कदम पर ठोकर बिछी हुई है।"

शैव्या बोली—"बाबा विश्वनाथ ! अब नहीं सहा जाता !"

मदन ने क्रोध में भरे विश्वामित्र का क्लोज-अप लेने की आज्ञा दी। इसके बाद उन्होंने खड़ाऊँ खटकाते हुए हरिश्चंद्र के निकट प्रवेश किया।

मदन ने विश्वामित्र से कुछ बोलने का इसारा किया।

विश्वामित्र ने कहा—'क्यों रे हरिश्चंद्र ! तू मेरी दक्षिणा न देगा ?"

हरिश्चंद्र—आपने बिल भी भेजा ?"

विश्वामित्र—"चार बिल भेजे और आठ रिमाइंडर ! कुछ पता भी है ? अब रजिस्ट्री नोटिस देकर दावा करना पड़ेगा क्या ?"

इस बार मदन ने मशीनें नहीं रुकवाईं, और ऐक्टरों को उनके इच्छानुसार चलने दिया।

क्रमशः किसी प्रकार शैव्या और रोहिताश्व बिके और बिदा हुए। अंत में हरिश्चंद्र के बिकने की बारी आई। मदन भी चांडाल की भूमिका लेकर अभिनय करने लगा था।

मंदिर के ऊपर ठोस लकड़ी का एक कलश लगाया गया था। उस पर सुनहरा रंग पोता हुआ था। बढ़ई ने अपनी समझ के अनुसार पेच कसकर उसे मज़बूती से जड़ दिया था। लेकिन चूड़ियाँ घिस गई थीं, पेच ढीला ही रह गया था।

कलश अब तक न-जाने किस तरह अटका हुआ था। अचानक ऊपर से गिर पड़ा—ठीक रबिन की नाक पर ! रबिन बड़े जोर से चिल्लाया। उसकी नाक की हड्डी टूटते-टूटते बची, पर ख़ून निकलने लगा।

मदन उसकी रक्षा को बढ़ा। दोनों टैकनीशियनों को मशीनें बंद कर देनेकी आज्ञा भी न दे सका। दोनो अपने मन की हँसी दबाकर सब कुछ अंकित करते जा रहे थे।

रबिन चिल्लाया—"बाप रे ! मर गया !"

मदन ने कहा—"घबराओ नहीं।"

डोरा—"कहाँ लगी ?"

रबिन माथा पकड़कर भूमि पर बैठ गया। कहने लगा—"उफ़् ! बड़ी पीड़ा है।"

मदन—"मैं कहता न था रबिन, ज़रा गंभीर होकर काम लो।"

रबिन—"सिर चकराता है। नाक तो साबुत है न ?"

मदन—"परमेश्वर को धन्यवाद दो। कुछ भी नहीं हुआ। थोड़ा-सा ख़ून गिर रहा है। अभी सिर में दो लोटे ठंडे पानी के डाल देने से सब ठीक हो जायगा।"

मदन जब एक मजदूर से दौड़कर कुछ जल ले आने को कह रहा था, तब उन दोनो टैकनीशियनों पर उसकी दृष्टि पड़ी, जो बड़ी सावधानी से अपनी-अपनी मशीनें चालू किए हुए थे।

मदन ने हँसी दबाकर कहा—"अच्छा, यहाँ किसी की जान पर बीत रही है, और आप लोगों को यह मज़ाक़ सूझा है !"

कैमरामैन विना मशीन को विश्राम दिए बोला—"आप डाइरेक्टर हैं। आपने मशीन रोकने की आज्ञा ही कहाँ दी ?"

"तो कृपा कर अब बंद कर दीजिए।"

मशीनें रोक दी गईं।

रबिन के सिर में खूब पानी छोड़ा गया। उसकी नाक का रक्त बंद हुआ।

डोरा ने पूछा—"क्यों, कैसी तबियत है ?"

रबिन हँसा, और कहने लगा—"ठीक है।"

मदन ने कहा—"शूटिंग का क्या होगा ?"

रबिन—"शूटिंग शुरू कीजिए।"

फिर शूटिंग आरंभ हुई, और किसी प्रकार वह दृश्य समाप्त हुआ। इसके बाद शैव्या का दासी-रूप में दृश्य लिया गया।

मदन ने शूटिंग की समाप्ति घोषित की। ऐक्टरों ने मुँह-हाथ धोकर कपड़े बदले। मजदूर और बढ़ई दे-लेकर बिदा कर दिए गए। तमाम ऐक्टर फ़िल्मों की सफलता के लिये व्यग्र हो उठे। सब मिलकर लेबोरेटरी के काम में जुट पड़े, और शाम तक फ़िल्में तैयार कर लीं।

काम समाप्त कर सबने चाय-पान किया। मदन क़ैंची और सोल्यूशन लेकर फ़िल्मों के संपादन में जुट पड़ा। सब मिलाकर फ़िल्मों की दो रीलें तैयार हुईं। अभी फ़िल्में देखने से जान पड़ता था, वे संतोष-जनक ही होंगी। यह जानकर ऐक्टर बड़े प्रफुल्ल प्रतीत होने लगे।

दे मार फ़िल्म-कंपनी में प्रोजेक्टर भी थे। रात को नौ बजे से वहीं फ़िल्म दिखाया जाना निश्चित हुआ।

रबिन बोला—"बड़ी देर से होटल छूटा पड़ा है। जाता हूँ, लेकिन मन इन्हीं फ़िल्मों में बस गया है।"

मदन—"अब तुम ऐक्टर बन चुके हो। छोड़ो होटल का

बवाल ! तुम्हारे समान मनुष्य के लिये वह भी कोई धंधा है !"

कानजी—"मैं भी जाता हूँ। पिताजी का इस शो में शामिल होना जरूरी है। शो में सफलता ही रहेगी, ऐसा विश्वास होता है। अगर पिताजी को प्रसन्न कर सके, तो फिर क्या बात है !"

डोरा—"मैं भी अपने पिताजी को शो दिखाने के लिये ले आऊँगी। अगर वह प्रसन्न हो गए, तो मेरी इच्छाएँ भी परिर्ण होंगी।"

कानजी—"जरूर मिस डोरा !"

कानजी अपनी मोटर में रबिन और डोरा को लेकर बिदा हुए। मदन काटने और चिपकाने में लगा। गंभीर रस में जहाँ कहीं हास्य के टुकड़े मिल गए थे, उन्हें काटकर मदन ने सबके अंत में रक्खा।

संपादन समाप्त कर मदन ने स्टूडियो में स्क्रीन लटकवाया, दर्शकों के लिये कुरसियाँ रखवाईं, और प्रोजेक्टिंग मशीन फ़िट की। अंत में मर्दन ने शो शुरू किया, उसका दर्शक केवल वही बना। फ़िल्म की सफलता देखकर मदन नाच उठा। शैव्या का ऐक्टिंग चरम सीमा पर पहुँच गया था। क्या फ़ोटोग्राफ़ी और क्या ओडियोग्राफ़ी, दोनो पूर्ण संतोषप्रद हुए।

रबिन की नाक पर कलश गिरने के दृश्य में कमाल की स्वाभाविकता आ गई थी। मदन ने उस टुकड़े को सबके

अंत में लगा रक्खा था। उसे देख-सुनकर मदन बड़ी देर तक खिलखिलाता रहा।

डोरा अपने पिता, रबिन और कुछ अन्य मित्र-संबंधियों को लेकर आठ ही बजे आ पहुँची थी। मदन उन्हें शो-रूप में बिठाकर खाना खाने चला गया।

पौने नौ बजे अपने पिता और अन्य कई मित्रों को लेकर कानजी भी आ पहुँचे। मदन उनसे पाँच मिनट पहले ही आ गया था।

कानजी के पिता के प्रवेश पर सबने उठकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया। मदन ने उन्हें फूलों की माला पहनाकर प्रणाम किया, और सबसे सुंदर रेशमी सोफ़े पर बिठाया।

बिजली की बत्तियाँ बुझा दी गईं, और शो आरंभ हुआ। विस्मय-स्तब्ध होकर दर्शकों ने फ़िल्म देखी, और खेल समाप्त होने पर उन्होंने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कानजी के पिता ने कहा—"फ़िल्म निःसंदेह अच्छी बनी।"

कानजी बोले—"पिताजी, यह सब एक ही दिन का परिश्रम है।"

पिताजी—"तब तो और भी आश्चर्य है!"

कानजी—"सिनेरियो और रिहर्सल कुछ भी नहीं पिताजी! इसी प्रकार चल पड़े, और आनन-फानन में आज ही टेकिंग समाप्त कर फ़िल्में धो-छापकर तैयार कर दीं।"

पिताजी—"देखता हूँ, तुम्हारी फ़िल्म-कंपनी के प्रस्ताव पर मुझे अब बहुत गंभीर होकर विचार करना पड़ेगा।"

कानजी ने हँसते हुए कहा—"यह सब मेरे मित्र मदन की मिहनत का फल है।"

पिता ने मदन को सिर से पैर तक देखा। मदन ने हाथ जोड़कर माथा झुकाते हुए कहा—"आपका एक क्षुद्र सेवक हूँ, सेठजी!"

कानजी बोले—"मशीनों का सौदा कर दीजिए। मैनेजिंग डाइरेक्टर यहीं हैं। हमने उन्हें सिर्फ़ मशीनें बेच देने के लिये भी राज़ी कर लिया है।"

पिताजी—"बेटा, इतने अधीर न होओ। कुछ मुझे और सोच लेने दो।"

पौने दस बजने को थे। सब लोग अपने-अपने घरों को बिदा हुए।

पाँचवाँ परिच्छेद

कलह

जाते समय मदन ने मैनेजिंग डाइरेक्टर से कहा—"ट्रायल हो गया, मशीनें ठीक हैं। अब आप अंतिम दाम बता दीजिए! मैं कानजी से तय कर आपको सूचित कर दूँगा।"

उन्होंने उत्तर दिया—"देखिए, बड़ी कठिनता से मैंने अन्य डाइरेक्टरों को केवल मशीनें बेचने के लिये विवश किया।"

"सब आपकी कृपा है।"

"सब डाइरेक्टरों की एक राय है, पछत्तर हजार से एक पैसा क्या, एक पाई कम न ली जायगी।"

"यही अंतिम निश्चय है?"

"हाँ।"

"अच्छी बात है। मैं कानजी को कल ही यह सूचित करूँगा, और फिर आपको समाचार दूँगा।"

मदन बिदा हुआ, और सीधा कानजी के यहाँ पहुँचा। पिता-पुत्र में फ़िल्म-कंपनी की ही चर्चा छिड़ी हुई थी।

कानजी कह रहे थे—"असफलता की कोई सूरत नहीं दिखाई देती। पहली ही फ़िल्म से तमाम डिस्ट्रीब्यूटिंग सेंटरों

में हमारा सिक्का बैठ जायगा। भगवान् की कृपा हुई, तो उसी से हमारी सारी पूँजी वसूल हो जायगी।"

पिता ने कहा—"अगर हम अंधकार का ध्यान कर कहें, यदि पहली फ़िल्म फ़ेल हो गई, तो ?"

"ठीक है, अंधकार का ध्यान रख लेना चाहिए। उसकी ठोकर से बचने के लिये हम दो फ़िल्मों की शूटिंग साथ-साथ करेंगे।"

"और, अगर दोनो फ़ेल हो गईं, तो ?"

"नहीं पिताजी, ऐसा होना असंभव है। आप जब अँधेरा सोचते हैं, तो ऐसा अँधेरा सोचते हैं, जिसकी कोई सीमा ही नहीं। पिताजी, रात जितनी अँधेरी होती है, उसमें उतनी ही अधिक तारिकाएँ चमकती हैं।"

तारिकाओं के शब्द ने मदन के हृदय में एक हल्की गुदगुदी उत्पन्न की। उसने मन-ही-मन कानजी के वाक्य की अभ्यर्थना की।

पिताजी स्तब्ध रह गए थे। कानजी ने मदन से पूछा—"क्यों, मैनेजिंग डाइरेक्टर ने क्या कहा ?"

"कहते हैं, पछत्तर हज़ार से एक पैसा कम न लिया जायगा।"

पिताजी—"सिर्फ़ मशीनों का ?"

"कानजी, मशीनें बिलकुल नई हैं। उनका काम आप देख ही चुके हैं।"

पिताजी—"स्टूडियो के और खर्च अलग रहेंगे ?"

कानजी—"हाँ।"

पिताजी—"कम-से-कम वह कितना ?"

कानजी—"पिताजी, देखिए, गोल्डन पाम्स कितना विशाल और राजसी बँगला है। आज दस साल से खाली पड़ा है। आपको उसे आबाद करने के लिये किराएदार ही नहीं मिलते। आप उसे बेच भी नहीं सकते, क्योंकि लोगों ने उसे भूत-प्रेतों से भरा हुआ मशहूर कर रक्खा है।"

पिताजी—"मेरे दुश्मनों ने यह भ्रम फैला रक्खा है। मैं वहाँ कई बार सिर्फ एक नौकर को लेकर रहा हूँ। वहाँ कोई भूत-बाधा नहीं। चौकीदार भी वहाँ कुछ नहीं बताता।"

कानजी—"न होगा। पर लोगों के मन में उसका भय तो है न। देखिए, कितनी अच्छी, साइट, कितनी मूल्यवान् इमारत प्रतिवर्ष मिट्टी में मिलती चली जा रही है। फ़िल्म-कंपनी का खुलना गोल्डन पाम्स का आबाद होना है, पिताजी! वहाँ स्टूडियो बनवा लेंगे। आरंभ में मुख्य-मुख्य सेट, कपड़े तथा अन्य सामान बनवा लेंगे। पचीस हज़ार और समझिए।"

पिताजी—"पूरा एक लाख हुआ, एक लाख का बँगला, दो लाख हुए।"

कानजी—"पिताजी, मेरी मनोवृत्तियों के अनुकूल आपने कोई काम ही नहीं दिया। फ़िल्म-कंपनी खोल दीजिए, तो फिर आपको पता चल जायगा कि कानजी भी कुछ कर सकता है।

कल चेक काट दीजिए। मशीनें ले जाकर कल ही गोल्डन पाम्स आबाद कर दें।"

पिताजी—"पछत्तर हज़ार रुपया तुम्हें खेलने को देने के लिये एक बहुत बड़ी रक़म है।"

कानजी—"बड़ी सावधानी से रुपया खर्च किया जायगा। पहले लिख लेंगे, फिर खर्च करेंगे। सारा हिसाब आपको बराबर दिखाया जायगा।"

पिताजी—"कंपनी की जो स्कीम तुमने टाइप की है, वह कहाँ है ?"

कानजी—"मदन के पास।"

मदन उठकर बोला—"आज्ञा हो, तो अभी ले आऊँ।"

पिताजी—"इस वक़्त रहने दो। अब कल देखा जायगा।"

पिताजी को कुरसी पर से उठता हुआ देखकर कानजी और मदन भी उठे।

कानजी ने कहा—"पिताजी, अगर आपने अब मुझे फ़िल्म-कंपनी से निराश किया, तो फिर—"

कानजी के इस अधूरे वाक्य को अनसुना कर पिताजी अंदर चले गए, और बहुत गंभीर विचार में पड़ गए।

कानजी ने कहा—"मदन, तुमने बीजकों का टोटल लगाया था? मशीनें कुल कितने की हैं ?"

"अस्सी हज़ार तक की हैं। मैनेजिंग डाइरेक्टर ही कह रहे थे।"

"कल को उनसे लिस्ट लेकर जोड़ लेना। नक़द बिक्री पर कुछ कमीशन भी दो, कहना। पाँच प्रतिशत भी देंगे, तो चार हज़ार रुपए के क़रीब यही कम हो जायगा।"

"अच्छी बात है।"

मदन मित्र से बिदा हो गया।

दूसरे दिन मदन आठ बजे सुबह उठा। पहले दिन के परिश्रम से श्रांत भी था, और रात को भी बारह बजे के बाद सोया था। जल्दी से खा-पीकर स्टूडियो में पहुँच गया।

स्टूडियो के फाटक पर ही चौकीदार ने उसे रोककर कहा—"मदनजी, आपको बड़े सेठजी ने अपने ऑफ़िस में अभी बुलाया है।"

"वह कब आए थे?"

"अभी।"

"किसलिये बुलाया है?"

"पता नहीं।"

"नाराज़ तो नहीं थे?"

"ठीक नहीं कह सकता।"

"साथ में और कौन था?"

"कोई भी नहीं।"

"किसी और को भी बुलाया है?"

"नहीं।"

मदन चिंतित होकर बड़े सेठजी के ऑफ़िस की ओर चला।

सेठजी ने भौंहें तानकर कहा—"हूँ।"

मदन बोला—"देखिए सेठजी साहब! मिहनत से अपना काम करता हूँ। मालिकों की भलाई का हर समय ध्यान रखता हूँ। अगर यह सब मेरे अवगुण हैं, तो आप आज ही—"

सेठजी ने बीच ही में कहा—"अच्छा, इस वक़्त जाइए, काम कीजिए।"

मदन ने कहा—"कंपनी में एक दल-का-दल मदन का शत्रु हो गया है। मदन उनके पंजे से बचकर निकल जाता है, नहीं तो वे उसे कब का चट कर गए होते।"

सेठजी ने फिर कहा—"अच्छा, जाइए। सीन सेट् हो चुका है।"

मदन जाते हुए मन में सोचने लगा—"किसी ने शायद फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में कल के शूटिंग की बात कह दी होगी, दे-मार-फ़िल्म-कंपनी के लिये उससे क्या बुराई पैदा हुई? रह गई यहाँ के ऐक्टरों को बहकाने की बात, सो मैंने किसी से कुछ भी नहीं कहा। मुझे उस स्टाफ़ की ज़रूरत ही नहीं। मेरे रिक्रूटमेंट की तो जगह ही दूसरी है। टैकनीशियनों में से भी मुझे कौन चाहिए? अनेक बेकार घूमने लगे हैं। वह तो कल कुछ जल्दी मची हुई थी, इस कारण मैं यहाँ के उन दो टैकनीशियनों को बुला ले गया।"

सुबह की शूटिंग के बाद दोपहर की छुट्टी हुई। मदन ने देखा, आज अनेक लोग मदन के प्रति विशेष आदर प्रकट

करने लगे थे। वह ताड़ गया, और विचारने लगा—"निश्चय ही फ़ोटोग्राफ़र और ऑडियोग्राफ़र ने कल की बात यहाँ स्टडियो-भर में बिखरा दी है।"

दोनों उसकी ही ओर आ रहे थे।

मदन ने फ़ोटोग्राफ़र से कहा—"आपने तमाम लोगों से यहाँ कह दिया!"

फ़ोटोग्राफ़र—"तमाम लोगों से तो नहीं, हाँ, किसी के सामने बात निकल गई होगी। तो हो क्या गया? कंपनी तो खुलने ही वाली है। एड्वांस प्रोपेगेंडा की आवश्यकता है।"

ऑडियोग्राफ़र—"मदनजी, हम दोनो को भी अपनी कंपनी में ले चलिए। जो वेतन यहाँ मिलता है, वही दिलाइएगा, महीने-महीने तो मिलेगा।"

मदन—"चुप, चुप, क्या कहते हो? इज्ज़त के साथ इस कंपनी से न निकलने दोगे? सुबह बड़े सेठजी के पास मेरी पेशी हुई थी। कहने लगे, तुम कंपनी के नौकरों को तोड़ रहे हो।"

फ़ोटोग्राफ़र—"कोई तोड़ने-जोड़नेवाला नहीं। सबको अपने मतलब से मतलब है। मालिक अपना लाभ सोचता है, और नौकर अपने फ़ायदे की बात।"

ऑडियोग्राफ़र—"आप अपना ही उदाहरण लीजिए न, आपकी योग्यता क्या है, सब लोग जानते हैं। दे-मार-फ़िल्म-

कंपनी ने कभी आपको चान्सेज़ नहीं दिए। आप किस डाइरेक्टर से कम हैं। एक स्टोरी तो आपको दी होती!"

मदन—"मुझे तो स्टोरी की भी ज़रूरत न थी न? दर्जनों लिखी और टाइप की हुई मेरी संदूक़ में रक्खी हैं, और सैकड़ों मेरे दिमाग़ में!"

फ़ोटोग्राफ़र—"दूसरी कंपनी में जब अच्छी जगह मिल रही है, तो आपको वहाँ जाना ही चाहिए। आपका रोक कौन सकता है?"

मदन—"हाँ, कोई नहीं रोक सकता।"

फ़ोटोग्राफ़र—"मशीनों का क्या हुआ? ख़रीद लीं?"

मदन—"अभी बातचीत चल रही है।"

ऑडियोग्राफ़र—"भाई, कंपनी खुल जाने पर हमें न भूलना।"

मदन—"आप लोग क्यों इस तरह शोर कर रहे हैं? कंपनी खुल भी गई, तो उससे होता क्या है?"

फ़ोटोग्राफ़र—"क्यों, क्या तुम कानजी के दाहने हाथ होकर उसमें न रहोगे?"

मदन—"कुछ निश्चित नहीं।"

ऑडियोग्राफ़र—"क्यों झूठ बोलते हो मित्र!"

मदन—"कानजी एक धनवान के पुत्र हैं, और मदन एक फटीचर ऐक्टर?"

फ़ोटोग्राफ़र—"इससे क्या होता है ? आर्टिस्ट प्रायः फटीचर ही होते हैं। वह तुम्हें मानते तो हैं।"

मदन—"अरे, कोई भरोसा नहीं। मुझे कुछ मशीनों के कील-काँटे का पता है, और कुछ ऐक्टिंग तथा डाइरेक्टिंग की बीमारी भी। अभी कल को यदि उन्हें कोई मेरा गुरू मिल जाय, तो मुझे फटे जूते की तरह उतारकर फेंक देंगे।"

ऑडियोग्राफ़र—"बड़े उस्ताद हो यार !"

"कुछ काम से जाना है।"—कहकर मदन बाहर की ओर खिसक गया।

एक दृश्य में कुछ थोड़ा-सा पार्ट उसका और था। उसे समाप्त कर जब वह शाम को लौट रहा था, तो एक चपरासी ने आकर कहा—"मदनजी, आपको बड़े सेठजी ने बुलाया है। अभी।"

"अभी ?"—कहकर मदन सिर खुजाने लगा।

"हाँ अभी।"

"और कौन-कौन वहाँ बैठे हैं ?"

"सिर्फ़ डाइरेक्टर साहब और कोई नहीं।"

मदन बोला—"मेरे होटल के कमरे की ताली खो गई है उसे ढूँढ़कर अभी आया।"

मदन ताली की खोज की ऐक्टिंग करते हुए मन में कहने लगा—"जान पड़ता है, आज ख़ैर नहीं। इस फ़िल्म में जो कुछ मेरा पार्ट था, वह आज समाप्त हो गया है। सेठजी के

कानों में सब बातें कोई डाल चुका है। वह समझ गए हैं कि मदन अब दे-मार-फ़िल्म-कंपनी में रह नहीं सकता।"

चपरासी वहीं खड़ा था, कहने लगा—"नहीं मिलती ?"

"नहीं"—कहते हुए मदन ने नए सिरे से अपनी जेबें टटोलीं।

"होटल में ही तो नहीं भूल आए ?"

"नहीं"—कहते हुए मदन फिर खोजने लगा। चपरासी वहीं खड़ा था।

मदन फिर मन-ही-मन कहने लगा—"सेठजी ज़रूर आज मेरा हिसाब साफ़ करनेवाले हैं। मुझे उनके निकट जाने में क्यों भय मालूम हो रहा है ? मैंने चोरी नहीं की, डाका नहीं डाला। दूसरी जगह उन्नति की आशा है, तो क्यों न वहाँ जाऊँ।"

चपरासी ने फिर आवाज दी—"मदनजी !"

"तुम तो यम के दूत की तरह मेरे पीछे लग गए हो ? चलो।"

मदन ने सेठजी के कमरे में प्रवेश किया। सेठजी और डाइरेक्टर, दोनो कुरसियों पर बैठे थे। मदन के जाने पर सेठजी के मन के भाव और भी तीव्र हो गए।

डाइरेक्टर ने कहा—"तुम कल कंपनी के दोनो टैकनीशियनों को लेकर फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में गए थे ?"

मदन—"हाँ।"

डाइरेक्टर—"किसलिये ?"

मदन—"कानजी उन्हें खरीदना चाहते हैं। मशीनों की परीक्षा लेने गया था।"

डाइरेक्टर—"तुम गए क्यों ?"

मदन—'गया क्यों ? अजीब प्रश्न है ! छुट्टी का दिन था। कंपनी के काम के समय में तो नहीं गया ?"

सेठजी ने उत्तेजित होकर कहा—'तुम्हें शर्म नहीं आती ?"

मदन—"देखिए सेठजी साहब ! दूसरे के आदर का ध्यान रखने पर ही कोई आपका आदर करेगा। आपके यहाँ नौकरी कर रक्खी है। अपनी आबरू-इज्ज़त नहीं बेची है। शर्म के लिये मैंने कौन-सा अपराध किया है ?"

डाइरेक्टर—"ज्यादा बातें न करो। तुमने दो-दो अपराध किए हैं। तुम खुद वहाँ गए, और साथ ही कंपनी के दो और आदमियों को भी ले गए।"

मदन—"तो यह ऐसा कौन-सा अपराध हो गया ! कंपनी में मेरा जो एग्रीमेंट है, उसमें ऐसा कोई भी वाक्य नहीं कि दे-मार-फ़िल्म-कंपनी का कोई कर्मचारी किसी दूसरी कंपनी में न जाय।"

सेठजी—"डाइरेक्टर साहब ! अधिक बक-बक की आवश्यकता नहीं। इनका हिसाब कर दीजिए। हमारी कंपनी को ऐसे मनुष्यों की जरूरत नहीं।"

मदन—"बड़ी अच्छी बात है। मदन भी ऐसी कंपनी में

नहीं रहना चाहता, जहाँ उसके गुणों पर हरताल फेर दी जाती है, और अवगुणों पर माइक्रोस्कोप रख दिया जाता है। हिसाब कर दीजिए, अच्छी बात है, पर आप मुझे कंपनी से अलग कर रहे हैं। एग्रीमेंट के अनुसार मुझे पंद्रह दिन का वेतन और देंगे।"

सेठजी—"और कुछ नहीं मिलेगा।"

मदन—"क्यों ?"

सेठजी—"हमारी ख़ुशी।"

मदन—"आपकी ख़ुशी ?"

"हाँ-हाँ, हमारी ख़ुशी—" कहते हुए सेठजी कुरसी पर से उठे, और मदन की ओर बढ़े।

डाइरेक्टर उनसे पहले उठकर उनके और मदन के बीच में आ गया।

मदन—"मैं दावा कर वसूल कर लूँगा।"

डाइरेक्टर ने मदन का हाथ पकड़ उसे ऑफ़िस के बाहर करते हुए कहा—"ज्यादा नहीं बकते, चले जाओ।"

मदन ने फिर कुछ भी नहीं कहा, और अपनी साइकिल उठा होटल में लौट आया।

होटल के ऑफ़िस में बैठे हुए रबिन ने कहा—"क्यों दोस्त ! चेहरा उदास है ?"

"होगा।"

"कारण ?"

"नौकरी समाप्त कर चला आ रहा हूँ।"

"क्यों ?"

"सेठजी से भिड़ गया।"

"किसलिये ?"

"कहने लगे, तुम हमारे दो आदमियों को लेकर फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में क्यों गए ?"

"यह भी कोई बात हुई !अब क्या होगा ?"

"होगा क्या ? नई कंपनी खुलेगी। डाइरेक्टरी मिलेगी, और प्रति महीने वेतन वसूल होगा।"

"यह ख़ूब रही !"

"चार दिन बाद तो मुझे वहाँ छोड़ना ही था। चार दिन पहले ही सही।"

"तनख्वाह मिली या नहीं ?"

"जायगी कहाँ ? पाई-पाई वसूल न करलूँ, तो मेरा नाम मदन नहीं।"

मदन उठकर जाने लगा था। रबिन ने उसका हाथ पकड़कर कहा—"बैठो, अभी कहाँ चले ?"

"जाता हूँ उनके पास, जिनके लिये अपनी नौकरी गँवाई है।"

"चाय तो पी जाओ।"

"वहीं पिऊँगा।"—कहकर मदन चला गया।

कानजी बँगले ही पर मिले। मदन को देखते ही कहने

लगे—"क्यों, मिले फ़ोकस-कंपनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर से ?"

मदन ने अपनी सारी कथा कह सुनाई।

कानजी बोले—"उदास होने की बात नहीं।"

"नहीं, कुछ उदास नहीं हूँ।"

"यह अच्छा ही हुआ, अब हमारी कंपनी खुलने में और भी कम समय लगेगा।"

"आपने पिताजी को राज़ी किया ?"

"हाँ, हो जायँगे, ऐसी आशा है।"

"मित्र, अब मेरी लज्जा तुम्हारे ही हाथ है।"

"परमेश्वर मालिक है।"

"हाँ।"—मदन ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

"पिताजी को देने के लिये वह स्कीम लाए ?"

"उफ़्-भूल आया, ले आऊँ ?"

"नहीं, कल सही।"

"अब क्या डर है, अब तो रोज़ छुट्टी है।"

"मेरी समझ में तुम फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में जाकर उनसे बातें कर आओ।"

"अच्छी बात है।"

"अगर दो-तीन दिन के भीतर ही यह सौदा पट जाय, तो चलो, गोल्डन पाम्स को आबाद कर सारे भारत में अपना नाम चमका देंगे।"

मदन भी जोश में भरकर बोला—"हाँ हाँ, चमका देंगे। मैं डाइरेक्ट कर सकता हूँ, स्टोरी और डायलॉग्ज़ लिख सकता हूँ। मुझे दोनो मशीनों के तमाम कील-काँटे ज्ञात हैं। मुझे डार्करूम के तमाम रास्ते मालूम हैं। मूर्ख! मेरे गुणों को नहीं पहचान सके। अब जब उनके टक्कर की दूसरी कंपनी खड़ी करूँगा, तब चैन लूँगा।"

"शाबाश!"

"आप अपने पिताजी को तैयार कर लीजिए, मशीनों का सौदा मैं आज ही जाकर तय कर लाता हूँ।"—कहकर मदन उठा, और जाने लगा।

कानजी ने कहा—"सुनो मदन!"

मदन रुक गया।

कानजी बोले—"देखो, तुम ज़रा भी न घबराओ। आज ही की तारीख़ से तुम अपने को मेरा नौकर समझो। जो वेतन दे-मार-फ़िल्म-कंपनी में मिलता था, वही फ़िज़हाज़ मैं तुम्हें दूँगा।"

मदन ने कृतज्ञता-भरी दृष्टि से मित्र की ओर देखा।

कानजी बोले—"अच्छा, जाओ।"

मदन चला गया।

कानजी ने पिता के पास जाकर मदन पर जो कुछ बीती थी, वह कथा सुनाई।

पिताजी ने कहा—"केवल इसी बात में से कंपनीवालों ने

अलग कर दिया? विश्वास नहीं होता। कोई और बात होगी।"

"और कोई बात नहीं।"

"लेकिन आदमी होशियार है।"

"हमारे कारण उसकी नौकरी गई है। फ़िल्म-कंपनी आपको खोलनी है ही। शीघ्र ही खोल दीजिए, तो उस बेचारे को भी दर-दर न भटकना पड़े।"

पिताजी ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

कानजी ने उनके मौन में अच्छे लक्षण पाए।

छठा परिच्छेद

दी सैटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी

मदन ने फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में जाकर मशीनरी की लिस्ट और बीजक हस्तगत किए। कुछ कमीशन भी तय किया। वह वहाँ से चला।

होटल में आकर उसने फ़िल्म-कंपनी की स्कीम भी बगल में दबाई, और फिर कानजी के घर को रवाना हुआ।

कंपनी की धुन कानजी को बहुत पुरानी थी। जब से डोरा को देखा, तब से वह धुन और भी पक्की हो गई। अब, जब से फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी में ट्रायल हुआ है, वह उनकी हर साँस में रहने लगी है।

पिता के सामने उसका ज़िक्र करते हैं, माता और पत्नी से उसकी बातें करते हैं। सोने में उसी के स्वप्न देखते और जागते में उसी का ध्यान करते हैं। घर में उसी का सुमिरन करते और पथ में उसी की माला जपते हैं।

फ़िल्म-कंपनी! फ़िल्म-कंपनी! तेरे प्रांगण में इतिहास की बड़ी-बड़ी क्रांतियाँ चुटकियों में हो जाती हैं। तू झूठे उपकरणों को लेकर कैसे सत्य की माया दिखाती है। तूने अपने क्षण में

युग को बंदी किया है, और छोटे-से अणु में भोली-भाली जनता को विराट् का विश्वास दिलाया है। तेरा पट यह किन तारों का बिना है, इसमें दिन में भी तारिकाएँ चमकती हैं!

कानजी ने पूछा—"वहाँ हो आए मदन!"

मदन—"हाँ।"

कानजी—"क्या कहते हैं?"

"कहते हैं, पैंसठ हज़ार से कुछ भी कम न होगा, यह लिस्ट और बीजक हैं।"—कहकर मदन ने काग़ज़ात मेज़ पर रक्खे।

कानजी—"स्कीम भी ले आए?"

मदन—"हाँ।"

कानजी—"इस लिस्ट का ग्रांड टोटल क्या है?"

मदन—"लगभग अस्सी हज़ार रुपए।"

पिताजी—"कमीशन काटकर?"

मदन—"जी।"

पिताजी—"बीजकों से मिलाया?"

मदन—"जी।"

कानजी ने एक फ़ाइल पिता के सम्मुख रक्खी।

पिताजी ने पूछा—"यह क्या है?"

कानजी—"फ़िल्म-कंपनी की वह स्कीम।"

पिताजी ने जेब से चश्मा निकाला। सोफ़े पर सँभलकर बैठे, और स्कीम पढ़ने लगे।

कानजी—"देखिए, पिताजी, कितनी अद्भुत स्कीम है, कहीं से भी लीक नहीं करती।"

पिताजी—"इसकी अच्छी तरह स्टडी करनी पड़ेगी, तब पता चलेगा।"

कानजी—"यह सब मदन के ही मस्तिष्क की उपज है। इन्हें थिएटर और सिनेमा का लगभग पंद्रह वर्ष का अनुभव है।"

पिताजी ने चश्मे की लेंसों के किनारों से मदन की ओर देखा, और मदन ने नम्रता के भाव प्रकट किए।

कानजी—"दे-मार-फ़िल्म-कंपनी ने कभी कोई ऊँचे आर्ट का काम मदन को नहीं सौंपा।"

पिताजी—"क्यों?"

कानजी—"यद्यपि मालिक इस बात को जानते भी थे कि मदन उसे अच्छी तरह कर सकता है।"

पिताजी—"उनके डरने की बात क्या थी?"

कानजी—"यही कि मदन अगर पबलिक में प्रसिद्ध हो गया, तो वेतन में वृद्धि माँगेगा, या दूसरी कंपनीवाले उसे बुला ले जायँगे।"

पिताजी हँसने लगे।

मदन कहने लगा—"बात एक दूसरे पर ठहरी हुई है। कंपनी आर्टिस्ट को प्रसिद्ध करती है, और आर्टिस्ट कंपनी को चमकाता है।"

कानजी—"लेकिन मैं इसे दे-मार-फ़िल्न-कंपनी की बड़ी भूल कहूँगा, जो उन्होंने तुम्हें किसी तसवीर का डाइरेक्शन नहीं दिया।"

मदन—"वैसे तो मैं हर फिल्म मैं डाइरेक्टर को बिलकुल नई बात सुझा देता था। मैं उसके प्रत्येक ले आउट में छोटे-से-छोटा पथ दिखा देता था। आदमी है योग्य, बात समझकर मान लेता है।"

कानजी—"कभी कोई कहानी भी तुमसे नहीं ली?"

मदन—"नाम देना पड़ेगा, इसी भय से नहीं ली। वैसे मेरे सामने की कोई कहानी ऐसी नहीं, जिसमें मेरे संशोधन न हों।

पिताजी बड़ी बारीक दृष्टि से कागज़ात उलट-पलट रहे थे। कहने लगे—"साठ हज़ार में कुल सौदा करने को कहो।"

मदन—"अब कदाचित् वे लोग कुछ कम न करेंगे।"

पिताजी—"एक बार कहो तो सही देखें तो क्या, उत्तर देते हैं। अगर मान जायँ, तो कल ही चेक ले जाओ, और तमाम मशीनों को पैक कर गोल्डन पाम्स पहुँचा दो।"

कानजी—"अच्छी बात है।"

मदन—"अब देर हुई, मुझे आज्ञा दीजिए।"

कानजी ने मदन को बिदा करते हुए कहा—"कल सुबह चलेंगे मदन, मैं मोटर लेकर दस बजे तुम्हारे यहाँ आ जाऊँगा।"

मदन लौटकर अपने होटल में चला आया।

दूसरे दिन फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनीवालों से सौदा कर लिया गया। कानजी के पिता ने अंत में चेक काटकर दे ही दिया। साठ हज़ार रुपए में उनका रेकार्डिंग सेट और कैमरा, दोनो ख़रीद लिए गए।

गोल्डन पाम्स शहर के बाहर, एक ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। उसके उत्तरी कूल पर महासागर अपने सुप्रशांत वक्ष-स्थल पर कभी-कभी कोटि-कोटि सूर्य के टुकड़ों को चमकाता है, और कभी-कभी क्रुद्ध होकर अपनी उत्ताल तरंगों को गोल्डन पाम्स के आधार परके चट्टानों पर पटकता है!

गोल्डन पाम्स के बीचोबीच में एक बहुत बड़ा हॉल है। उस हॉल के चारों ओर चार सुंदर आँगन हैं, और आँगनों के बाद चार और छोटे-छोटे हॉल हैं। छोटे हॉलों के बीच-बीच में चार कमरे हैं, और चारों कमरों के कोनों पर चार उतने ही बड़े कक्ष और हैं।

गोल्डन पाम्स में चारों ओर सुमनोहर पुष्पोद्यान हैं। उद्यान के चार कोनों पर विशाल पाम के पेड़ों के चार चक्र हैं। इसके अतिरिक्त गोल्डन पाम्स की हद के बाहर भी सैकड़ों पाम के पेड़ नीले आकाश और महासागर के ऊपर अपना मस्तक ऊँचा किए हुए हैं।

कोठी के हाते में नौकर-चाकरों के रहने के लिये भी कई आउट हाउसेज़ बने हुए हैं। कोठी शहर के साथ पानी के नल औ बिजली ५. .' से बँधी हुई है।

पहले उस कोठी की ऐसी हालत न थी। कोठी का हर कमरा बिजली के लैंपों से जगमगाता रहता था। स्त्री-पुरुष और बालकों से भरा हुआ, मुखरित। चारों ओर बीसों नौकर अपने-अपने कामों में लगे रहते थे।

आजकल उसमें एक भी बिजली की बत्ती नहीं जलती। उसके कोनों में मकड़ियों के जाले, फ़र्श और फ़रनीचर पर धूल और द्वारों में ताले पड़े हुए। कोई उसकी ओर आकृष्ट नहीं होता, सब उससे डरते हैं।

आउट हाउसों में दो चौकीदार और दो माली रहते हैं। वह देवी-देवताओं का नाम जपकर किसी प्रकार खटके की रात बिता देते और हर महीने अपना वेतन वसूल करते हैं।

गोल्डन पाम्स में भूत बताया जाता है। वहाँ के चार पहले के चौकीदारों की मृत्यु का कारण भी वही समझा जाता है। बहुत दिन तक वहाँ नौकरी करने के लिये कोई आदमी तैयार ही न होता था। अब भी जो लोग वहाँ हैं, वे रात को अपने निवास से बाहर नहीं निकलते। रात-भर एक लालटैन जलाए रखते हैं, और कुछ भी संदेह होने पर चारों एक साथ हो जाते हैं।

गोल्डन पाम्स में पहले एक फ़ौजी अफ़सर रहते थे। अवसर-प्राप्त थे। भरा-पूरा परिवार था। उनकी एक विवाह-योग्य कन्या का वहाँ किसी ने वध कर दिया था। वध करनेवाले

का कहीं भी कुछ पता न चला। जगत् के असंख्य मुख असंख्य कथाएँ कहते हैं।

अफ़सर को इस घटना से भारी दुःख हुआ। वह अपना शेष परिवार लेकर विलायत लौट गए। उनके बाद समुद्री किनारे की हवा के लिये अपनी बीमार रानी को लेकर वहाँ एक राजा साहब आए। उनके साथ छोटे-बड़े सब मिलाकर तीस नौकर थे। स्त्री-कर्मचारियों में दो योरपियन नर्सें भी थीं।

राजा साहब का गोल्डन पाम्स में पहला दिन बड़े आनंद में बीता। दूसरी संध्या की बात है। राजा साहब शहर में किसी डॉक्टर से मिलने गए थे। रानी की तबियत मामूली तरह से अच्छी थी। रानी साहबा अपने कमरे में अकेली बैठी हुई कोई पुस्तक देखने लगी थीं। शहर से कुछ अतिथि आ गए थे। दोनो नर्सें उन्हें पहुँचाने के लिये फाटक तक चली गई थीं। रानी साहबा ने किताब का पृष्ठ खोला ही था कि पास के कमरे में रक्खा हुआ पियानो सुमधुर स्वर से बज उठा। रानी साहबा की नर्स रोज़ी ज़रूर पियानो बजाती थी, पर उसके हाथ में इतना रस न था।

रानी साहबा ने किताब बंद की। उस स्वर-माधुरी ने उनके कानों पर अधिकार जमाया। हठात् उन्होंने अपने मन में कहा—"लेकिन रोज़ी को तो मैंने उन मेहमानों के साथ फाटक तक भेजा है।"

स्वरों की अटूट लड़ी ने सारे वातावरण को उल्लास से भर दिया। खिड़कियों पर के शीशों और रेशमी परदों से छनकर सांध्य रवि की किरणें जगमगा रही थीं।

रानी साहबा ने आवाज़ दी—"रोज़ी!"

उन्हें कोई उत्तर न मिला। पियानो उसी प्रकार बज रहा था। रानी साहबा ने समझा, रोज़ी लौट आई होगी। उसके हाथों से मधुर पियानो बजता हुआ सुनकर उन्होंने फिर रोज़ी को आवाज़ नहीं दी। वह उठीं, और उठकर उस कमरे में गईं।

कमरे में जाकर उन्होंने देखा, एक अत्यंत रूपवती स्त्री, स्वर और ताल में खोई हुई, कोहनियों तक नंगे दोनो गौर कर-कमलों से पियानो बजा रही है।

वह उसके निकट गईं। वह रोज़ी न थी। रानी साहबा उसके और भी पास बढ़ीं। उस स्त्री ने उनके आने की कुछ भी परवा न की। वह पूर्ववत् बाजा बजाती रही।

रानी साहबा ने समझा—"यह रोज़ी की ही कोई सखी है, वही इसे यहाँ पियानो पर बैठा गई है। लेकिन यह यहाँ आई किस समय? रोज़ी ने इसके बारे में मुझसे कुछ भी नहीं कहा।"

रानी साहबा फाटक की ओर चलीं, मार्ग में ही उन्हें रोज़ी मिली।

रोज़ी बोली—"क्यों रानी साहबा!"

रानी—"वह कौन है वह रोज़ी?"

रोज़ी—"कहाँ ?"

रानी—"जो पियानो बजा रही है।"

रोज़ी—"मुझे नहीं मालूम। देखूँ।"

दोनो कक्ष की ओर चलीं।

रानी साहबा बोलीं—"बंद हो गया जान पड़ता है।"

दोनो ने कक्ष में प्रवेश किया। वहाँ किसी का पता न था। रानी साहबा पियानो की ओर संकेत कर चिल्लाईं—"रोज़ी ! रोज़ी !"

उनके शब्दों में भय और घबराहट भरी थी। उनका मुख एकदम पीला पड़ गया, पलकें चिपक गईं, और दोनो जबड़े तथा होंठ आपस में मिल गए। वह मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ीं।

राजा साहब को फ़ोन पर बुलाया गया। वह एक डॉक्टर लेकर तुरंत आ पहुँचे। दूसरे दिन सुबह होने पर रानी साहबा को जब होश हुआ, तो उन्होंने पहला प्रश्न यही किया—"पियानो कौन बजा रहा है ?"

किसी की समझ में कुछ न आया। डॉक्टर ने कहा—"हिस्टीरिया का फ़िट मालूम पड़ता है। दो-चार रोज़ नियमित दवा पीने से दिमाग़ ठीक हो जायगा।"

रानी साहबा ने दुःख-भरे स्वर में कहा—"मैंने उसे अपनी आँखों से पियानो पर देखा, और कानों से सुना। मैं बिलकुल होश में हूँ, डॉक्टर साहब।"

डॉक्टर साहब ने आँखे फाड़-फाड़कर बीमार की ओर देखा। राजा साहब घबराने लगे।

रानी साहबा ने रोते हुए कहा—"उसका पता नहीं लगा? वह न-जाने कहाँ से आई, और किधर चली गई। रोज़ी! तुम उसे नहीं पहचानती हो?"

राजा साहब ने कहा—"रानी।"

"मैं होश में हूँ स्वामी! यदि मुझे बचाना चाहते हो, तो यहाँ न रक्खो। आज ही कहीं अन्यत्र ले चलो।"

कोई उपाय काम न आया। राजा साहब को उसी दिन कोठी बदल देनी पड़ी। यह भूत क समाचार नगर में चारों ओर फैल गया। दैनिक पत्रों ने मोटे-मोटे शीर्षकों में इसे खूब कौतूहल से रँगकर छापा।

उपर्युक्त घटना हुए महीना-भर भी न बीता था कि दूसरी घटना घटी। कोठी में राजा साहब के बाद कोई नहीं आया। वह खाली पड़ी थी, और आउट हाउसों में दो चौकीदार, चार माली एवं तीन-चार मनुष्य और रहते थे।

एक रात की बात है। दोनो चौकीदार कोठी के पूर्वी बरामदे में सो रहे थे। अचानक आधी रात में गाने-बजाने की ध्वनि से उनकी नींद टूटी। दोनो ने आँखें मल-मलकर देखा, सारी कोठी बिजली की रोशनी से जगमगा रही है, पियानो बज रहा है, और कोई कोमल कंठ से अँगरेज़ी गीत गा रहा है।

दोनो चौकीदारों ने एक दूसरे को पकड़ कर हिलाया. और अपनी आँखे मलकर और कानों में उँगलियाँ डालकर फिर देखा और सुना। दोनो ने निश्चय किया, यह सपना नहीं है।

दोनो सिर पर पैर रखकर भागे। जहाँ और आदमी सो रहे थे, भागे हुए वहीं पहुँचे, और दरवाज़े भड़ भड़ाकर उन्हें उठाया। उस वक़्त कोठी की रोशनी बुझ गई थी, और गीत बंद हो गया था।

चौकीदारों ने शेष आदमियों से सारी घटना का वर्णन किया। सब भयभीत हो गए। दोनो चौकीदारों को उसी वक़्त से भयंकर ज्वर चढ़ा, और ऐसे पड़े कि फिर कभी न उठे!

बहुत दिन तक गोल्डन पाम्स में चौकीदारी करने के लिये कोई नहीं मिला। बड़ी मुश्किल से दो आदमी फिर मिले। कहते हैं, उन्होंने भी वहाँ कुछ देखा, और अपना वेतन भी छोड़कर अपने-अपने घर भाग गए। घर पहुँचकर सख़्त बीमार पड़े, और मर गए!

फिर वहाँ चौकीदारी करने कोई नहीं आया। जो आया, उसने कोठी के स्वामी से रात में कोठी में न जाने की रज़ामंदी ले ली।

अनेक वर्षों तक शून्य और परित्यक्त पड़े हुए गोल्डन पाम्स के भाग्य फिर जागने आरंभ हुए। फ़ोकस-फ़िल्म-कंपनी

की मशीनें वहाँ लाई गईं। पचास बढ़ई और राज-मज़दूर उस कोठी को स्टूडियो की शकल में बदलने के लिये काम करने लगे। रात को भी वहाँ कभी-कभी आरी-हथौड़े चलते।

कानजी के पिता ने एक दिन कहा—"कानजी! स्टूडियो में बहुत रात तक रहने की ज़रूरत नहीं।"

"क्यों पिताजी?"

"उसका कारण है।"

"भूत-बाधा? नहीं, वह कोई चीज़ नहीं। फ़िल्म की शूटिंग जब शुरू होगी, तो कभी-कभी, संभव है, मुझे रात-भर वहाँ रहना पड़े।"

"आश्चर्य है, तुम्हारे हित की बात तुम्हें बताई जाती है, और तुम उस पर अमल नहीं करते।"

पिताजी की भौंहों में बल पड़ते देखकर कानजी ने कहा—"अच्छी बात है, आप की आज्ञा शिरोधार्य है।"

मदन, रबिन और डोरा को गोल्डन पाम्स के भुतहा होने की बात बहुत सूक्ष्म ही मालुम थी। जो कुछ मालुम थी, उस पर उन्होंने कभी विश्वास नहीं किया।

गोल्डन पाम्स के बीच के सबसे बड़े हॉल में शूटिंग की व्यवस्था की जाने लगी। फाटक के पास के छोटे हॉल में कंपनी का ऑफ़िस खुला, और फ़िलहाल कुछ क्लर्क टाइप-राइटर खट खटाने लगे। इमारत में जो कुछ परिवर्तन करना था, सब कुछ कर लिया गया। मशीनें फ़िट हो गईं।

कानजी ने पूछा – "कहो मदन, स्टोरी तैयार है ?"

"देखो, हुई जाती है।"

"हुई जाती है की बात नहीं है मदन ! अब कंपनी में पूँजी फँस गई है। विलंब हानिकारक होगा।"

"ऐक्टरों को ले आओ, स्टोरी भी हो जायगी।"

"नहीं, पहले स्टोरी, फिर ऐक्टर।"

"ऐसा ही हो जायगा, दो-चार दिन की मुहलत और दो।"

"मैं आज कंपनी का नाम भी सोचकर ले आया हूँ। पिताजी ने उसे खूब पसंद किया है।"

"मैं भी तो सुनूँ।"

"दी सेटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी !"

"नाम तो अच्छा है।"

"पसंद है ?"

"बहुत अधिक।"

"ऐसा नाम कोई रख नहीं सका ! कितना ओरिजिनल और ऐट्रेक्टिव। जितना मधुर उच्चारण में है, उतना ही प्रिय दर्शन में।"

"निःसंदेह, तुम्हें यह इन्ट्यूशन से प्राप्त हुआ है।"

"मैंने इसी नाम से तमाम चीजें छपने के लिये प्रेस में ऑर्डर दे दिया है। पाँच-चार रोज में सब काम मिल जायगा। बढ़ई भी खाली हो गए हैं। उनसे सेट् तैयार करने के लिये कल जरूर सलाह-मशविरा कर लो।"

"अच्छी बात है, कल अवश्य।"

"और स्टोरी ?"

"स्टोरी भी।"

"सिनेरियो ?"

"उसकी क्या जरूरत है। डायलॉग्ज लिख लूँगा।"

"नहीं, वह भी लिखना पड़ेगा।"

मदन ने प्राण-हीन होकर कहा—"अच्छा।"

"तुम कल ही होटल छोड़कर यहाँ रहने के लिये आ जाओ।"

"अभी कुछ दिन वहीं रहूँगा। कई जरूरी काम हैं। डोरा यहाँ रहने न आवेगी।"

"क्यों ?"

"उसके पिता आज्ञा नहीं देते।"

"और रबिन ?"

"वह भी तैयार नहीं होता। कहता है, मैं ऐक्टर नहीं बनूँगा।"

"उसे ही राज़ी करो। अगर वह आ जायगा, तो डोरा के पिता को भी कोई आपत्ति न होगी।"

दूसरे ही दिन गोल्डन पाम्स के फाटक पर बड़े-बड़े अक्षरों का विशाल साइनबोर्ड लगाया गया। उसमें लिखा था—"दी सैटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी।"

दूसरा विराम—

पहला परिच्छेद

सिनेरियो

मदन ने होटल में आकर सोचा—"अब तमाम चीजें तैयार हैं। कहानी छाँटने में देर न करनी चाहिए। कथानक कहाँ से लूँ? कोई धार्मिक कहानी?.....धर्म भारतवर्ष ही क्या, सारे संसार में ख़ूब बिकता है। धार्मिक फ़िल्म में कल्पना की उछल-कूद के लिये भी खूब मैदान मिलता है, और ट्रिक-फोटोग्राफी की भी गुंजाइश रहती है।"

इतने में होटल के ब्वाय ने आकर कहा—"कोई साहब आपसे मिलने आए हैं।"

मदन बोला—"मैं तुमसे कह आया था कि बहुत जरूरी काम में लगा हूँ। कोई आवे, तो उससे कह देना, वह गोल्डन पाम्स में मिलेंगे। जाओ, अब मुझे इस तरह न छेड़ना। तुम्हें कुछ भी समझ नहीं। कंपनी की पहली तसवीर के लिये कहानी सोच रहा हूँ, कहानी। उसी की सफलता पर सारा दारोमदार है। जाओ, किसी को इधर न आने देना। कह देना, मदन यहाँ नहीं है।"

ब्वाय जाने लगा। मदन ने उसे ताला देकर कहा—"लो,

यह ताला बाहर दरवाज़े पर लगाकर ताली अपने पास रक्खो। जो यहाँ तक आ भी जायगा, तो उसे मुझे बिना बाधा पहुँचाए ही लौट जाना पड़ेगा।"

ब्वाय ताला-ताली लेकर ज्यों ही जाने को हुआ, मदन ने उससे फिर कहा—"कानजी, डोरा और रबिन पूछें तो उन्हें ताली दे देना।"

ब्वाय ने मदन के कमरे के द्वार बंद कर ताला लगाया, ताली जेब में रक्खी, और चला गया।

मदन फिर विचारने लगा—"लेकिन धार्मिक फ़िल्म तो आज कल की हवा है। अगर उसी हवा में हम भी बह गए, तो फिर क्या हुआ। हमें तो कुछ नवीनता लेकर प्रकट होना है। यदि नवीनता न हुई, तो हम कैसे लोगों को आकृष्ट कर सकेंगे? एक प्रकार से धर्म तो प्रत्येक फ़िल्म की जान है। किसी भी फ़िल्म में डेविल को गौरव-प्राप्त नहीं दिखाया जाता।"

मदन ने कुछ क्षण विश्राम देकर फिर विचार किया—"तब क्या फिर कोई ऐतिहासिक कहानी ढूँढ़ी जाय। परंतु उसमें ऐतिहासिक रंग देने के लिये बहुत धन की आवश्यकता होगी। परिच्छद और स्थापत्य की रेखाओं पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। जनता की आँखें अब बहुत खुल गई हैं।"

वह माथे पर हाथ रखकर, आँखें मूँद कुछ ध्यान-सा करने लगा। फिर मन में कहने लगा—"कोई सामाजिक कथानक क्यों न हो। सेटिंग और परिच्छद भी अभी न बनाने

पड़ेंगे। जिस प्रकार के ऐक्टर होंगे, उन्हें ठीक उसी प्रकार कहानी में अंकित करूँगा। ठीक रियल लाइफ़ की तसवीर बनाऊँगा।"

उसने सिगरेट् निकालकर जलाई, और धुएँ के चक्र में कहानी के स्वप्न देखते हुए कहने लगा—"निश्चय ही कहानी-रचना एक इंस्पिरेशन की चीज़ है। वह इंस्पिरेशन किस प्रकार प्राप्त हो सकता है, इसे कोई नहीं बता सकता। अनेक लोग समझते हैं, एकांत इंस्पिरेशन के लिये आवश्यक वस्तु है। कभी-कभी मैं भी यही समझता हूँ।"

मदन को कुछ याद आती है, वह उठकर प्रवेश-द्वार की चिटख़नी बंद कर देता है। इसके बाद वह आईने में अपना मुख देखता और कहता है—"बस, यही तय हुआ, ठीक प्रकृति में से चरित्र लूँगा, और उन्हें बिना रँगे अंकित करूँगा। आइडिया! कहानी तो फिर लिखी जायगी, पहले कानजी से कहूँगा, लाइए हज़रत, पहले तारिका दीजिए, कहानी फिर बनेगी।"

इसी समय मदन का ध्यान दूसरी ओर आकृष्ट हुआ। कोई बाहर से उसके द्वार का ताला खोल रहा था। मदन ने उसी अवकाश में भीतर से चिटख़नी खोल दी।

रबिन ने हँसते हुए प्रवेश कर कहा—"इस तरह क़ैद में पड़े क्या कर रहे हैं जनाब!"

डोरा भी कमरे के अंदर आ गई थी, कहने लगी—"आपके कमरे में ताला पड़ा देखकर मैं दो बार लौट गई।"

रबिन ने मदन के कंधे पर हाथ रखकर कहा—"अजीब सिड़ी हो!"

"यह सिनेमा की लाइन ही ऐसी बेढब है कि सिड़ी भी होना ही पड़ता है।"—मदन ने कहा।

डोरा बोली—"स्टूडियो तो तैयार हो गया। अब शूटिंग कब से होगी?"

मदन—"कहाँ, अभी कोई कहानी ही नहीं सोच सका हूँ। जब कहानी सोच ली जाय, तो उसी हिसाब से सेट्स तैयार हों, कपड़े बनें, और ऐक्टर नौकर रक्खे जायँ।"

डोरा—"फिर कहानी कब सोचिएगा?"

मदन—"कब बताऊँ? हर पहलू से विचारकर लिखना है।"

रबिन—"एक कहानी मैं बताऊँ?"

मदन—"कौन-सी?"

रबिन—"किसी भारी लड़ाई की फ़िल्म बनाओ।"

मदन—"यह असंभव बात है। इसके लिये बहुत सामान बनाना पड़ेगा। अनेक अतिरिक्त ऐक्टरों को रखना पड़ेगा। खर्च करने के लिये एक निश्चित रक़म से अधिक हमारे पास नहीं है।"

रबिन—"हमें ऐक्टर बनाने के लिये तो तुम तैयार हो गए हो।"

मदन—"तुम जन्म के ऐक्टर हो, तुम्हें कोई क्या बनावेगा।"

रबिन—"वेतन तो सुना दो, क्या दोगे ?"

मदन—"सब बताया जायगा, अधीर क्यों होते हो ? बाक़ायदा एग्रीमेंट लिखे जायँगे।"

रबिन—"अच्छा ?"

मदन—"आप लोगों के रोज़ाना काम में कोई बाधा नहीं डाली जायगी। जो समय आपके खेल-तमाशे और मनोरंजन का है, उसी में काम लिया जायगा।"

ऑफ़िस में ज़ोर-ज़ोर से कोई घंटी बजाने लगा था। रबिन के कान उधर ही थे, कहने लगा—"कोई आ गया है। नीचे चलोगी डोरा ?"

"आप चलिए, मैं अभी पाँच मिनट में आती हूँ।"

रबिन डोरा से कुछ संकेत में कहना चाहता था, पर डोरा ने उसकी ओर देखा ही नहीं। रबिन नाराज़ होकर चला गया।

मदन ने कहा—"मिस डोरा, किसी कहानी का आइडिया तो दो। कुछ सूझ ही नहीं रहा है।"

डोरा—"मैं क्या बताऊँ ?"

मदन—"जो भी समझ में आवे, कहो।"

डोरा—"मेरे कुछ भी ध्यान में नहीं आता।"

मदन—"मैं एक इंटरकास्ट मैरेज का थीम लेना चाहता हूँ। कैसा रहेगा ?"

डोरा के मुख पर अद्भुत भाव उदय हुए। वह उठ खड़ी

हुई, और कहने लगी—"अब इस समय जाने दीजिए, फिर मिलूँगी।"

"नहीं डोरा, ज़रा देर ठहरो। दो-चार प्वाइंट तो देती जाओ।"

"फिर सोचकर बताऊँगी।"—कहकर डोरा जाने लगी।

मदन ने ताला-चाबी उसे देते हुए कहा—"कृपया यह ताला उसी प्रकार बाहर से लगा देना।"

"चाबी ?"

"अपने ही पास रख लेना, मैं रात-भर में आज कहानी सोच लेना चाहता हूँ।"

"चाबी नौकर को दे जाऊँगी। किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ेगी, तो—"

"खाना खा चुका हूँ। किसी चीज़ की आवश्यकता न होगी। चाबी नौकर को न दे जाना, नहीं तो रबिन आकर मुझे बातों में लगा देगा और कहानी उसी प्रकार रह जायगी।"

डोरा हँसने लगी।

रबिन ने ज़ोर देकर कहा—"नहीं, हँसने की बात नहीं। मैं बहुत सीरियस हूँ। कृपा कर रबिन से भी न कहना कि मेरे कमरे की चाबी तुम्हारे पास है।"

डोरा ने ताला लगाकर चाबी अपनी जेब में रक्खी, और चली गई।

बारह बजे रात तक मदन ने कई प्रकार से इंस्पिरेशन का आह्वान किया पर कुछ न हुआ। वह सो गया, और सुबह

जब उसकी नींद खुली, तो उसने डोरा को अपने सिरहाने खड़ा पाया।

डोरा ने पहला प्रश्न किया—"क्यों, स्टोरी लिखी ?"

"कितना मधुर स्वप्न था। मत-मतांतरों के संकुचित दलों में हम लोग विभाजित थे। काल तीव्र गति से हम सबको निगल जाने के लिये हमारा पीछा कर रहा था। अचानक एक स्वर्गीय देवी प्रकट हुई। तुम्हें विश्वास न होगा डोरा !"

"कैसा ?"

"वह तुम्हारे ही समान सुंदरी थी।"

डोरा के मुख पर लज्जा प्रकट हुई।

"उस देवी ने उन विभाजित जातियों को एक सूत्र में गुँथ जाने का आदेश दिया, और विश्व-मैत्री का मधुर मंत्र सिखाया।"

"आपकी बात कुछ समझ में नहीं आई।"

"कुछ एब्स्ट्रैक्ट जरूर है। आर्टिस्टों को कभी-कभी स्वप्नों में विषय मिल जाते हैं। मैं भी इसी स्वप्न पर अपना कहानी का आधार रक्खूँगा।'

"मुझे आज्ञा दीजिए, स्कूल जाना है।"—कहकर डोरा ने बिदा ली।

नहा-धो, खा-पीकर मदन भी गोल्डन पाम्स को चला। कानजी उससे पहले वहाँ पहुँच गए थे। कहने लगे—"लो, आज ये फ़ोटोग्राफ़र और ऑडियोग्राफ़र भी, दोनो नौकर रख लिए गए हैं। अब तुम्हारी स्टोरी की ही देर है।"

"स्टोरी भी हो जायगी।"

"न हो, तो किसी से लिखा ली जाय। डाइरेक्ट तुम्हीं करना।"

"लिखवा लीजिए।"

"तुम नाराज़ हो गए?"

"नहीं तो।"

"लेकिन तुमसे अच्छी और लिखेगा कौन?"

"देखिये, थीम तो मैंने सोच लिया है।"

"कौन-सा?"

"इंटर-नेशनैलिटी का। कहिए, है न ज़ोरदार।"

"है।"

"इससे बढ़कर व्यापक आकर्षण की और कौन वस्तु होगी?"

"ठीक है। लेकिन भाषा के माध्यम ने पैरों में बेड़ियाँ डाल दीं। मूक चित्रों को दिन होते, तो कैसा आनंद था।"

"ऐक्टर दीजिए। कहानी गूँथ डालूँगा।"

"ऐक्टर पंसद करो, और रख लो। तुम्हारे ही हाथ में तो सब कुछ है।"

"बहुत अच्छा।"

"एग्रीमेंट का ड्राफ़्ट किया?"

"वह भिन्न-भिन्न मनुष्यों के लिये तरह-तरह का होगा।"

"रबिन और डोरा, दो ऐक्टर तो ये हो गए तीसरा मैं।"

'आप ऐक्टर बनेंगे ?"

"क्यों नहीं ? ऐक्टिंग बहुत बड़ी कला है।"

"अच्छी बात है, चौथा ऐक्टर मैं हुआ। इन्हीं चार पात्रों से तब तक कहानी बनाता हूँ।"

"कम-से-कम ऐक्टर लेना। खर्च और गड़बड़, दोनो कम होंगे।"

"यही सोच रहा हूँ। कल तक कहानी के तमाम लोकेशन्स भी चॉक ऑउट कर लूँगा। कल ही सेट्स के ढाँचे तैयार कर लेने के लिये बढ़इयों को आज्ञा दे दूँगा। एक आर्ट-डाइरेक्टर और एक म्यूज़िक-डाइरेक्टर को फ़िलहाल कल ही से बुला लेना पड़ेगा।"

"बहुतों की अर्ज़ियाँ रक्खी हैं। छाँटकर रख लेंगे।"

दिन-भर मदन स्टूडियो में देख-भाल करता रहा। गोल्डन पाम्स के बीच का सबसे बड़ा हॉल इनडोर शूटिंग के लिये चुना गया। फाटक के पास के छोटे हॉल में ऑफ़िस रक्खा गया। उससे मिले हुए बाईं ओर के कमरे में पहले ही से बाथ-रूम था, वह उसी प्रकार रहने दिया गया। उससे मिले हुए छोटे हॉल को परिच्छद-कक्ष बनाया गया। परिच्छद-कक्ष से सटा हुआ कमरा मेक-अप के लिये छाँटा गया। उसके बाद के छोटे हॉल में डार्करूम बनाया गया था। डार्करूम के बाद प्रिंटिंग-रूम और उसके बाद एडिटिंग और फिर शो-रूम नियत किए गए।

रबिन ने डोरा को बुलवाने के लिये एक ब्वाय भेजा. और उसके आने पर तीनो व्यक्ति मदन के कमरे में गए।

मदन ने कहा—"मैंने कानजी से आप लोगों के वेतन के लिये आज बातें की थीं। सब कुछ पहले ही साफ़-साफ़ तय कर लेना अच्छा होता है।"

रबिन—"क्या वेतन तय किया ?"

मदन—"अस्सी-अस्सी रुपए महीने।"

रबिन—"हम दोनो के ?"

मदन—"हाँ।"

रबिन—"और अपने ?"

मदन—"वही एक सौ पाँच रुपया महीना, जो मुझे दे-मार-कंपनी में मिलता था।"

रबिन कुछ विचार में पड़ गया प्रतीत होने लगा था, और डोरा का मुख उत्साह से भरा।

मदन कहने लगा—"कंपनी चल जाने पर बहुत जल्द आपके वेतनों में वृद्धि कर दी जायगी। फिर आप लोग अपना काम तो करते ही रहेंगे। स्टूडियो में क्लब की तरह से जाओगे। मोटर तुम्हें लेने आवेगी, मोटर में ही घर पहुँचाए जाओगे। क्या हानि है ?"

डोरा—"कुछ भी नहीं। ऐक्टिंग सीखेंगे मुफ़्त में।"

रबिन मन-ही-मन डोरा की इस बात से बहुत कुढ़ा। उसने कहा—"अच्छी बात है। वेतन महीने-महीने ले लेंगे।"

"हाँ, महीने-महीने ही मिलेगा। मेरी भी यही इच्छा है। आज मैं एग्रीमेंटों का ड्राफ़्ट बनाऊँगा। उसमें यह एक ख़ास क्लॉज़ होगा।"

रबिन बोला—"ठीक है, उसमें यह भी शर्त रहनी चाहिए कि अगर पहली तारीख़ को वेतन न मिले, तो एग्रीमेंट रद समझा जाय।"

मदन ने कहा—"अच्छी बात है, इस पर विचार करूँगा। अभी तो मेरा मन कहानी बनाने में उलझा हुआ है।"

रबिन—"क्या कहानी बनाई है?"

मदन—"अभी तो उसकी रेखा-मात्र सोच सका हूँ।"

डोरा—"सुनें तो।"

मदन—"अभी उसमें बहुत सोचना है।"

रबिन—"जितना सोचा है। उतना ही कह डालो।"

मदन—"केवल चार मुख्य ऐक्टरों की कहानी, जिनमें तीन पुरुष हैं, और एक स्त्री।"

रबिन—"किस तरह?"

मदन—"अभी चरित्रों का परिचय तो हो जाने दो। सुनो, पुरुषों में से एक फ्रेंच डॉक्टर है, दूसरा अमेरिकन व्यापारी और तीसरा हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर।"

डोरा—"और स्त्री?"

मदन—"एक जापानी कुमारी।"

रबिन—"कैरेक्टर तो इंटर-नेशनल हैं।"

मदन—"हाँ, उद्देश्य यही विश्व-मैत्री का है। सारे संसार के एक होने की जरूरत है। इंटर-डाइनिंग हो, इंटर-मैरेज हो। इससे क्या होगा? इससे सारे जगत् में स्थायी शांति फैलेगी। तमाम विश्व एक सूत्र में गुँथ जायगा। धरा-धाम से सर्व-नाशक युद्ध सदा के लिये मिट जायगा। सारे जगत् के सहित्य, कला और धर्म का एक अद्भुत समन्वय होगा। संसार में एक नई उप-जाति पैदा होगी। करोड़ों सुपर-मैन और सुपर-उमेन नई और पुरानी दुनिया में अन्य ग्रहों से संबंध जोड़ते नज़र आवेंगे।"

रबिन—"वाह! थीम तो अद्भुत है!"

मदन—"कहानी का संक्षिप्त इस प्रकार है—जापानी कुमारी फ्रेंच डॉक्टर को प्यार करती है, पर अमेरिकन व्यापारी के जाल में फँस जाती है, और अंत में हिंदुस्थानी से उसका विवाह होता है।"

रबिन—"खूब!"

मदन—"अभी क्या खूब है! ज़रा डिटेल में लिख लेने दो, तब पूरा मज़ा आवेगा।"

रात को बड़ी देर तक मदन ने कुछ विस्तार के साथ कहानी लिखी, और एग्रीमेंटों का ड्राफ़्ट बनाया।

दूसरे दिन स्टूडियो में जाकर उसने कानजी को कहानी सुनाई। कानजी ने कहानी में अनेक संशोधन बताकर उसका सिनेरियो और कथोपकथन लिखने की आज्ञा दी।

इसके बाद उन्होंने एग्रीमेंटों का ड्राफ़्ट पास किया, और क्लर्क ने उसकी कुछ कॉपियाँ टाइप कीं।

सात दिन की छुट्टी लेकर मदन ने सिनेरियो लिखा। आठव दिन रबिन और डोरा ने कुछ आवश्यक परिवर्तन कराकर एग्रीमेंटों में दस्तख़त किए।

दूसरा परिच्छेद

रिहर्सल

मदन ने कंपनी के आर्टिस्ट को सेटों और परिच्छेदों के लिए परामर्श दिया। आर्टिस्ट ने तमाम स्केच और मॉडल तैयार किए, और कानजी की अंतिम स्वीकृति प्राप्त कर बढ़ई और दर्ज़ियों ने अपना-अपना काम सँभाला।

उधर दो-तीन बाजे बजानेवाले और नौकर रख लिए गए। कंपनी का ऑरकेस्ट्रा तैयार हुआ। मदन ने म्यूज़िक-डाइरेक्टर को तमाम गीतों की सूची दी, और कहा—"लीजिए, यह लिस्ट है। मैंने इसमें गीतों के भाव और परिस्थिति का भी वर्णन कर दिया है। आप शांत चित्त से गीतों की तर्ज़ें निकालिए। बिलकुल नई, चुभती और फड़कती हुई हों। ऐसी हों कि पहले दर्जेवाला भी उन पर रीझे, और चौथे दर्जेवाला भी नाच उठे।"

संगीत-नायक भी अपने काम में लगा।

फ़िल्म की कास्टिंग आरंभ हुई। जापानी कुमारी की भूमिका मिस डोरा को मिली। इसमें कोई विवाद न उठा।

मदन ने कानजी के लिये अमेरिकन व्यापारी का पार्ट

रक्खा था, पर उन्होंने उसे पसंद नहीं किया, और कहने लगे—"भाई मदन, यह पार्ट मेरी प्रकृति के विरुद्ध पड़ता है, इसे मैं ठीक-ठीक अदा न कर सकूँगा।"

मदन—"मैंने यह बिलकुल आपके नेचर के अनुकूल लिखा है। मैं कहता हूँ, आप यह पार्ट ऐसी सुंदरता से करेंगे कि तारिका-मंडल में अपने पहले ही चित्र से सुशोभित हो जायँगे।"

रबिन बोला—"मुझे भी तुमने जो फ्रेंच डॉक्टर का पार्ट दिया है, वह पसंद नहीं।"

"क्यों?"

"इस क्यों का क्या उत्तर दूँ? नहीं है।"

मदन ने रबिन को समझाते हुए कहा—"मैंने बहुत सही चुनाव किया है। मेरी पसंद में अगर आप लोगों ने इस तरह बाधा रक्खी, तो ठीक बात न होगी। मैंने सैकड़ों फ़िल्में तैयार की हैं, और हज़ारों नें काम किया है। मैं प्रोफ़ेशनलमैन हूँ। मेरा तजुरबा पक्का है, और मेरी छाँट बहुत सच्ची।"

रबिन बोला—"कुछ भी हो, पर जब मेरी तबियत ही उस पार्ट में नहीं है, तो मैं उसे करूँगा क्या ख़ाक!"

मदन—"तबियत है कैसे नहीं? जापानी गर्ल फ्रेंच डॉक्टर से अनुराग करती है। उसके लिए वह कुमारी अपने स्वर्ग-मर्त्य को तृणवत् त्याग देती है।"

रबिन कुछ नाराज़ होकर बोला—"तो इससे क्या होता है?"

मदन—"इससे ? इससे तुम्हारे ऐक्टिंग में ऐसा नेचुरल टच पड़ेगा कि जब तुम अपना चित्र-पट स्वयं देखोगे, तभी पता चलेगा।"

रबिन—"क्या नेचुरल टच पड़ेगा ?"

मदन ने डोरा की ओर संकेत किया। डोरा का ध्यान दूसरी ओर था।

रबिन कहने लगा—'बड़े धूर्त हो तुम मदन !"

मदन ने उसे क़ाबू में कर कानजी से कहा—"अमेरिकन लखपती का पार्ट आपके नेचर को बिलकुल सूट करेगा।"

कानजी बोले—"लेकिन मैं हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर का पार्ट करना चाहता हूँ।"

मदन—'उसमें मैंने गाने रक्खे हैं, परंतु आप गा नहीं सकते।"

कानजी—"गाने तो बन रहे हैं न ? उसके लिये न बनाए जायँ। अमेरिकन लखपती का पार्ट तुम खेलो। गाने उसी में रख लेना।"

मदन—'अमेरिकन के पार्ट में गानों की कोई ज़रूरत नहीं। कानजी, मैं आपका नौकर हूँ, मुझे किसी बात के लिये उज्र. नहीं। जैसा आप कहें, मैं करने को तैयार हूँ। लेकिन चित्र-पट अगर फ़ेल हो जाय, तो मेरे ऊपर उसकी कोई ज़िम्मेदारी न रहे। यह बात अभी साफ़ हो जानी चाहिए।"

कानजी चक्कर में पड़े, कहने लगे—"पहले चित्र-पट के फ़ेल हो जाने का अर्थ क्या कंपनी का फ़ेल हो जाना नहीं है ?"

मदन—"अगर आपके पिताजी फिर दूसरी तसवीर निकालने के लिये रुपया न दें, तो ज़रूर उसका अर्थ वही है।"

कानजी के मुख पर चिंता की छाया पड़ी।

मदन कहने लगा—"देखिए, घबराने की बात नहीं। जिस बात में मैंने अपनी आयु बिताई है, उसमें मेरा अधिकार है। जिसमें मेरा अधिकार है, उसमें अगर आपने बाधा रक्खी, तो बात न बनेगी। आपके लिये ही मैंने वह पार्ट लिखा है, जहाँ कहीं आपको उचित न जँचे, वहाँ चार आदमियों की राय से उसमें संशोधन किया जा सकता है।"

डोरा बोली—"रबिन, मैं ज़रा स्टूडियो में जाती हूँ। वह नया सेट् मुझे बड़ा प्रतीत होता है।"

रबिन ने कहा—"चलो, मैं भी चलूँगा।"

दोनो के जाने पर कानजी ने धीरे-धीरे कहा—"मदन, जापानी कुमारी का विवाह अमेरिकन लखपती के साथ ही हो जाना अधिक नैचुरल जान पड़ता है।"

"क्यों?"

"क्योंकि वह सुंदर भी है, और लखपती भी। सोसाइटी की अनेक कुमारियाँ जिसे वरना चाहती हैं, उसका त्याग कर एक परतंत्र हिंदुस्थानी से वह जापानी कुमारी विवाह करे, कुछ जँचता नहीं।"

"नहीं कानजी, मैं समझता हूँ, आपका ध्यान कथानक पर नहीं गया। स्थिति इस प्रकार है, अमेरिकन लखपती ठगकर

जापानी कन्या को अमेरिका ले गया है। वह जब उसके समीप अपने विवाह का प्रस्ताव रखता है, तभी उस कुमारी को उसका छल-प्रपंच याद आता है, और वह विवाह करने को राज़ी नहीं होती।"

"तो ऐसा क्यों नहीं करते कि अमेरिकन विना किसी प्रपंच के ही उस कुमारी को ले जाय?"

"यह कैसे हो सकता है? कुमारी तो उस फ्रेंच डॉक्टर को चाहती है न?"

"वह फ्रेंच डॉक्टर को न चाहे। एक दिन जब कि वह नाट्यशाला में नाचती हो, अमेरिकन को देख ले, और उस पर अनुराग करने लगे।"

"तो फिर वह फ्रेंच डॉक्टर किस मर्ज़ की दवा होगा?"

"उसे जापानी कुमारी से प्रेम करता हुआ दिखाओ, पर वह कुमारी उसकी ओर दृष्टिपात भी न करे।"

"इससे स्वाभाविकता जाती रहेगी। रबिन और डोरा का जो संबंध वास्तव-जगत् में है, यह ठीक उसके विपरीत है। इससे डोरा और रबिन दोनों नाराज़ हो जायँगे।"

"एक बार संक्षेप में फिर अपना कथानक तो सुनाओ।"

"सुनिए, जापानी लड़की पेरिस की एक नाट्यशाला में नर्तकी है। धीरे-धीरे बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त करती है। बड़े-बड़े राजकुमार उससे मैत्री करने में अपना धन्य भाग्य समझने लगते हैं। उसके सामने जब कभी कोई विवाह का प्रस्ताव

रखता था, तो वह चिरकुमारी रहने की इच्छा प्रकट करती थी।"

कानजी ने बीच में कहा—'उसे चिर कुमारी ही क्यों नहीं रहने देते। बड़े मज़े की सिचुएशन पैदा होगी।"

मदन बोला—"अजी नहीं, इससे कोई मतलब हल न होगा और स्टोरी का सारा चार्म रह जायगा, वह आगे न बढ़ सकेगी। .....अचानक एक दिन नाचते-नाचते वह गिर पड़ती है, और उसका हाथ टूट जाता है। उसी दिन से वह शय्यागत होती है। पेरिस की जनता को जापानी नर्तकी का अभाव खटकने लगा। नर्तकी का रोग बढ़ता ही गया, और उसके नीरोग होने की अनेक लोगों को चिंता होने लगी। कुछ लोग यह भी कहने लगे, अगर वह अच्छी भी हो गई, तो नृत्य के काम की न रहेगी। संसार की भरी जगह जब ख़ाली हो जाती है, तभी ख़ाली जगह भर जाती है। जापानी नर्तकी के स्थान में दूसरी नर्तकी नाचने लगी, और पेरिस उस पहली नर्तकी को भूल गया। जापानी नर्तकी का रूप और उसकी संपत्ति, सब बीमारी की शरण हुए। वे अनेक लोग, जो फूलों के गुच्छे और उपहारों के बंडल लेकर उसका मार्ग रोक लेते थे, न-जाने कहाँ अदृश्य हो गए! ऐसे समय में वह फ्रेंच डॉक्टर उस नर्तकी का उपचार करना आरंभ करता है। नर्तकी ज्यों-ज्यों अच्छी होती है, त्यों-त्यों उस डॉक्टर से प्रेम करना आरंभ करती है।"

कानजी बोले—"उसका टूटा हुआ हाथ ?"

मदन—"उसे डॉक्टर ने बिलकुल अच्छा कर दिया। नर्तकी फिर जाकर अपने पद पर प्रतिष्ठित हुई। उपासकों का दल फिर उसके चारों ओर मँडलाने लगा। नर्तकी उनका स्वार्थ देख चुकी थी, मन-ही-मन उनसे घृणा करने लगी।"

कानजी ने फिर कहा—"अमेरिकन लखपती और जापानी नर्तकी की पहली भेंट कहाँ हुई ?"

मदन—"पेरिस की नाट्यशाला ही में। कहता हूँ, अब उसी की बारी है। अमेरिकन धनपति की विदेशों में कई रत्नों की कानें और मिट्टी के तेल के कुएँ हैं। उसे हवाई जहाज में उड़ने का बेहद शौक़ है। उसके पास आठ-दस एक-से-एक बढ़कर हवाई जहाज हैं। उसने एक बार सफलता-पूर्वक अपने जहाज द्वारा संसार की पूरी परिक्रमा भी की है। एक बार वह अपने हवाई जहाज में उड़ता हुआ पेरिस आया। रात को उसी जापानी कुमारी का नृत्य देखने गया। उसके नृत्य से ऐसा मोहित हुआ कि उससे मित्रता जोड़ ली। एक दिन उसे लेकर हवाई जहाज में उड़ा आकाश मार्ग से उसे पेरिस का दृश्य दिखाया। नर्तकी पहले कभी न उड़ी थी, बहुत प्रसन्न हुई। वह बार-बार उससे अमेरिका चलने का अनुरोध करने लगा। नर्तकी डॉक्टर को छोड़कर कहीं न जाना चाहती थी। अमेरिकन उस डॉक्टर से बड़ी घृणा करता था। एक दिन अमेरिकन धनपति ने उस नर्तकी को हवाई जहाज द्वारा कुछ दिन के लिये जापान चलने

के लिये राज़ी कर लिया। नर्तकी डॉक्टर से बिदा लेकर चली। अमेरिकन धनपति ने जहाज़ जापान की ओर नहीं, अमेरिका की तरफ़ बढ़ाया। नर्तकी कुछ समझ तो गई थी, पर कुशल धनपति ने बातों-ही-बातों में उसके टेंपर को क़ायम रक्खा। न्यूयार्क में जहाज़ उतरने पर जब सारा भेद नर्तकी को मालूम हुआ, तब उसका क्रोध उस नए शहर की नवीनता में खो गया। अमेरिकन ने उससे नर्तकी-वृत्ति छुड़ाकर स्वयं विवाह कर लेना चाहा, पर वह न मानी। उसका मन अटलांटिक समुद्र-पार पेरिस के डॉक्टर के पास था। वह पेरिस लौट जाने का हठ करने लगी। एक दिन पेरिस से उसके पास तार आया कि डॉक्टर की मृत्य हो गई।

"कैसे ?"

"उस वक्त तो नहीं, पर कुछ दिन बाद वह मरा था। अमेरिकन ने अपना मतलब हल करने के लिये यह चाल चली थी। उसने दो-तीन पत्रों में भी डॉक्टर की मृत्यु का संवाद छपा हुआ नर्तकी को दिखाया था। नर्तकी के पास जो बाहर से डाक आती थी, उस पर उसने गुप्त सेंसर बिठा दिए थे। नर्तकी को डॉक्टर की मृत्यु का विश्वास हो गया, फिर भी उसने अमेरिकन से विवाह नहीं किया।"—इतना कहकर मदन चुप हो गया।

"इसके आगे फिर? तुमने सिनेरियो और स्टोरी में भी इसके आगे कुछ नहीं लिखा।"

"हाँ, अभी उसे लिखने के लिये इंस्पिरेशन नहीं मिला, ज़रा-सा ही तो है। उसमें भी अंतिम क्लाइमैक्स तो सोचा हुआ रक्खा है।"

"कौन-सा ?'

"हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर के साथ जापानी नर्तकी का विवाह।"

रबिन और डोरा घूम-फिरकर आ गए थे।

कानजी ने कहा—"अमेरिकन का अंत में क्या होगा ?"

मदन—"उसके तेल के कुएँ में आग लगाई जायगी या उसके रत्नों की कान में इक्सप्लोज़न होगा. या उसका हवाइ जहाज़ किसी चट्टान से टकरा दिया जायगा।"

रबिन—"वाह ! दृश्य तो ख़ूब मार्के के रहेंगे। अगर रियलइफ़ेक्ट पैदा कर सको, तो क्या बात है। सारी पबलिक दाँतों के नीचे उँगली दबाकर नहीं, चबाकर रह जायगी !"

कानजी—'इस प्रकार उस धनपति की मृत्यु हो।"

मदन—'हाँ।'

डोरा बोली—"वह चेरी के फूलों से कुसुमिति गार्डन का सेट् बड़ा लुभावना बना है।"

मदन—'हाँ, उसमें कैसी सच्ची मगोलिन रेखाएँ अंकित की गई हैं। सब आप ही के लिये हैं।"

डोरा प्रसन्नता के भाव प्रकट करने लगी।

मदन बोला—"अब हमें देर नहीं करनी चाहिए। कल से रिहर्सल शुरू हो जाना चाहिए।"

कानजी—"ज़रूरी बात है। साथ ही कुछ एडवांस प्रोपेगैंडा भी हो जाना चाहिए।"

मदन ने कहा—"ठीक है।"

चारों उठे, और कुछ देर स्टूडियो का निरीक्षण कर बिदा हुए।

दूसरे दिन से रिहर्सल ख़ूब ज़ोरों के साथ चल पड़ा। डोरा अपने गाने बिठाने लगी, और एक मेम आकर उसे पश्चिमी नृत्य-कला सिखाने लगी।

उसी दिन से मदन गोल्डन पाम्स में रहने लगा। आफ़िस के दाहनी तरफ़ जो कमरा था, वहीं उसकी चारपाई बिछाई गई।

चौकीदार ने चुपके से मदन के कान में कहा—"इस कमरे में भूत है।"

मदन बोला—"मुझे किसी भूत से तुम कम समझते हो? देख लिया जायगा।"

चौकीदार अपना-सा मुँह लेकर चला गया।

तीसरा परिच्छेद

ताड़ना

मदन ने चारों ऐक्टरों की कई भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में फ़ोटो लेकर ब्लॉक बनवाए, तथा सैटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी और उसके महान् उद्देश्यों के वर्णन के साथ उन्हें भारतवर्ष-भर के प्रमुख दैनिक पत्रों को भेजा।

गोल्डन पाम्स का एक कमरा आर्टिस्टों का क्लब और रिटाइरिंग रूम बनाया गया था। वहाँ कुछ कोष, विश्वकोष, विश्व-साहित्य की कुछ चुनी हुई पुस्तकें तथा सिनेमा के आर्ट और टैकनिक्स पर कुछ किताबें भी रक्खी हुई थीं। वहाँ आठ-दस समाचार-पत्र भी आते थे। एक शतरंज का सेट्, ताश के पैकेट् तथा कुछ और इंडोर गेम्स भी रक्खे हुए थे।

कभी कभी वे चारों ऐक्टर अवकाश के समय वहाँ एकत्र होकर घड़ी-दो-घड़ी मनोरंजन करते, और कभी-कभी किसी गुप्त और आवश्यक विषय पर मंत्रणा भी। मदन ने क्लब की एक दीवार पर लाल पेंसिल से लिख रक्खा था—"ऑल आइडियाज़ प्रोपैगेट फ्रॉम दिस रूम।" उन चारों के अतिरिक्त

कंपनी के म्यूज़िक-डाइरेक्टर, फ़ोटोग्राफ़र तथा ऑडियोग्राफ़र भी वहाँ सलाह-मशविरे के लिये बुलाए जाते।

उस दिन रिहर्सल के बाद वे चारों वहाँ बैठे हुए थे।

कानजी ने कहा—"क्यों मदन! फिल्म का नाम अभी तक नहीं सोच सके। अब शूटिंग शुरू होनेवाली है।"

मदन—"नाम? सोचने को तो कई सोच रक्खे हैं, पर निश्चित नहीं कर सका हूँ कि कौन-सा रक्खा जाय। नाम सोच डालना आसान बात नहीं है कानजी!"

रबिन बोला—"सारी कहानी लिख डाली, और नाम का एक लफ़्ज़ नहीं सोच सकते।"

मदन—"हाँ, एक लफ़्ज़ होने के कारण ही तो वह कठिन है।"

रबिन—"क्यों?"

मदन—"क्योंकि वह लफ़्ज़ ऐसा होना चाहिए कि सारी कहानी को ढक सके। एक लफ़्ज़ में सारी कहानी का मतलब आ जाय। वह शब्द सुनने में भी मधुर हो, और देखने में भी सुंदर।"

कानजी—"हाँ, उसमें कुछ ऐसी बिजली हो कि लोग तसवीर देखने को खिंचे आवें।"

मदन—"आप लोग ही कोई नाम बतावें।"

रबिन—"मेरी समझ में उसका नाम रखिए 'फ्रेंच डॉक्टर।"

कानजी—"मेरे विचार में 'फ्रेंच डॉक्टर' से अधिक व्यापक नाम होगा 'अमेरिकन उड़ाका'।"

मदन बोला—"क्यों कुमारी डोरा! आप भी तो कुछ कहें न?"

डोरा—"ज़रूर कहूँगी, फ़िल्म का नाम 'जापानी ऐक्ट्रेस' क्यों न हो?"

मदन—"ठीक है, तब मुझे भी कुछ-न-कुछ कहना चाहिए। फ़िल्म का नाम रक्खा जाय 'हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर।' लेकिन नहीं, इन तमाम नामों का दायरा बहुत छोटा है। फ़िल्म का नाम रखिए 'विश्व-प्रेम'!"

कानजी—"लफ़्ज़ ज़रा मुश्किल है, आम फ़हम नहीं। कुछ और सोचो।"

मदन—"क्या सोचूँ? 'मुहब्बत की दुनिया' कैसा रहेगा?"

कानजी—"ठीक है।"

मदन—"एक नाम और समझ में आता है—'इंटर मैरेज'!'

कानजी—"बस-बस, यह और भी ठीक है।"

मदन—"एक और।'

कानजी—"हो गया, अब और अधिक न सोचो। इन्हीं दो नामों में से एक रख लिया जायगा।"

मदन—" 'विश्व-प्रेम' और 'मुहब्बत की दुनिया' दोनो को

छोड़िए। जब इंटरमैरेज होगी, तो दोनो अपने-आप हो जायँगे।" सब हँसने लगे।

कानजी ने उठते हुए कहा—"पेरिस के सेट भी आज तैयार हो जायँगे। शूटिंग कल से शुरू होगी न ?"

मदन—"निःसंदेह।"

चारों उठकर स्टूडियो की ओर चले।

मदन ने कानजी से कहा—"चौकीदार मेरे कमरे में भूत बतलाता है। क्या यह सच है ?"

कानजी—"मुझ से क्या पूछते हो, तुम्हें कुछ मालूम दिया ?"

मदन—"कुछ मालूम तो नहीं दिया, पर नींद शांति से न ले सका, और सपने भयानक देखे।"

रबिन हँसने लगा।

मदन ने बात टालकर कहा—"कल आप लोगों को बहुत जल्द आना पड़ेगा।"

दूसरे दिन की शूटिंग के लिये तमाम सेट् लगाकर ठीक हो गए थे।

कानजी ने कहा—"रोशनी का प्रबंध तो ठीक होगया है न ?"

मदन ने स्थान-स्थान के स्विच खोलकर कहा—"हाँ, सब ठीक है।"

कानजी की मोटर में वह, डोरा और रबिन बिदा हुए। मदन दूसरे दिन का समस्त सामान ठीक कराने में लगा। रात

बहुत बीत गई थी। मदन के खाने-पीने का प्रबंध भी आज से वहीं किया गया था। मेक-अप-रूम के दाहनी तरफ़ बाहर की ओर जो कमरा था, वहाँ शुरू से ही किचन था। उसे उसी प्रकार रहने दिया गया।

रसोइए ने फिर आकर कहा—"खाना ठंडा हो गया।"

मदन ने उसे अपने कमरे में खाना लगाने की आज्ञा दी। वह चला गया।

कंपनी के तमाम छोटे-बड़े नौकर-चाकरों के रहने के लिये गोल्डन पाम्स के हाते में आउट हाउसों के अतिरिक्त और भी कुछ मकान बना लिए गए थे।

मदन ने तमाम नौकर-चाकरों को बिदा कर कहा—"अब आप लोग जाइए, कल बहुत सुबह उठना है।"

मदन अपने कमरे में आया। उसकी मेज़ पर खाना लग चुका था। नौकर पानी का गिलास रख रहा था।

मदन ने उससे पूछा—"इस इमारत में भूत है क्या?"

नौकर—"पुराने नौकर-चाकरों के मुख से सुना तो है।"

मदन—"कभी तुमने भी देखा?"

नौकर—"नहीं देखा सरकार! झूठ कहने से क्या लाभ।"

मदन—"कैसा भूत है?"

नौकर—"एक नौजवान, ख़ूबसूरत मेम बिलकुल सफ़ेद कपड़े पहने फाटक के बाईं ओर के पाम के पेड़ों के बीच से

प्रकट होकर, कोठी के चारों ओर घूमकर उसके अंदर चली जाती है, और पियानो बजाने लगती है।"

मदन की दृष्टि उस कमरे में रक्खे हुए पियानो पर गई। पियानो शुरू से ही वहीं रक्खा हुआ था। कंपनी के लिये एक नया और बड़ा पियानो अलग खरीद लिया गया था।

मदन ने मुँह में निवाला रखते हुए पूछा—"पियानो कहाँ बजाती है?"

"इसी कमरे में और यही पियानो सरकार!"

मदन उसी प्रकार भोजन करता रहा।

नौकर कहने लगा—"आप अँगरेज़ी पढ़े-लिखे हैं, आप थोड़े इन बातों में विश्वास करते हैं। लेकिन मैंने सुना है, उस भूत के कारण चार चौकीदारों की जान गई है।"

मदन ने भोजन समाप्त किया। नौकर ने उसे हाथ धुलाते हुए कहा—"यह कमरा बदल दीजिए सरकार!"

"नहीं। तुम्हें मालूम नहीं, मुझे संगीत बहुत प्रिय है। मैं सुनना चाहता हूँ, वह कैसा पियानो बजाती है।"—मदन ने सिगार जलाते हुए कहा।

"सारी बात विश्वास की है।"

"क्या तुम समझते हो, मुझे इन बातों में विश्वास नहीं?" मदन सोने की तैयारी करने लगा।

"यह खिड़की बंद कर दूँ?"

"नहीं, हवा बहुत सर्द नहीं।"

"लेकिन सरकार, बत्ती रात-भर जलती रहने दीजिएगा।"—कहकर नौकर जाने लगा।

"उसकी भी क्या जरूरत है।" कहकर मदन ने अपने कमरे का द्वार बंद कर चिटखनी चढ़ा दी। नौकर निष्क्रांत हो गया था।

सिगार पीते-पीते मदन पलँग पर चला गया, और कुछ देर तक दूसरे दिन के विचारों में डूबा हुआ धुआँ उड़ाता रहा। फिर सिगार खिड़की की राह फेंक दिया। बाहर चाँदनी छिटक रही थी।

मदन ने सोने से पहले बिजली का बटन दबा दिया। उसके कमरे के शीशों से होकर भीतर आई हुई चाँदनी स्पष्ट होकर चमकने लगी। दिन-भर का थका हुआ मदन कुछ ही देर में नाक बजाने लगा।

आधी रात के बाद, जब उसके कमरे से ज्योत्स्ना तिरोहित हो गई थी, मदन अचानक जाग उठा। उसने उठते ही कमरे में रोशनी की। पलँग से कूदकर चारों कोनों में देखा, पियानो की ओट में, बड़ी इल्मारी के अंदर और चारपाई के नीचे भी तलाश किया।

वह मन-ही-मन कहने लगा—"कोई नहीं है। तब क्या जिन विचारों को लेकर सोया था, वे नींद में दृढ़ होकर मेरे ज्ञान-तंतुओं को भ्रम में डाल गए! नहीं, ऐसी बात नहीं है, मैंने बहुत साफ पियानो बजता हुआ सुना। मदन को तुम्हारे

अस्तित्व में संदेह नहीं, तुम जो भी हो, हे स्पिरिट ! फिर प्रकट होओ।"

मदन के कमरे में शांति थी। बाहर गोल्डन पाम्स के हाते के अंदर दो-तीन कुत्ते भूँक रहे थे। मदन ने प्रकाश बंद कर कुछ देर प्रतीक्षा की, पर उसने फिर न कुछ देखा, न सुना। उसे पता भी न रहा, उसे फिर कब नींद आ गई। सुबह जब उसकी आँख खुली, तब उसने देखा, उसका सारा कक्ष बाल-रवि की सुकोमल किरणों से जगमगा रहा था !

मदन फ़ौरन ही उठ बैठा, और ज़रा-सी देर में तमाम प्रातः कालीन कृत्यों से निवृत्त हो गया। वस्त्र और जूते पहनकर उसने मेज़ पर से स्क्रिप्ट उठाया, और स्टूडियो के अंदर दाख़िल हुआ।

स्टूडियो में सब लोग आकर काम पर जम गए थे। मदन वहाँ से निकलकर मेक-अप-रूम में गया। वहाँ भी तमाम चीज़ें यथास्थान रक्खी गई थीं। उसके बाद उसने परिच्छद-कक्ष का निरीक्षण किया। वहाँ जो कुछ कसर उसे दिखाई दी, वह मिनटों में ठीक कर दी गई।

कानजी भी अपनी मोटर में रबिन और डोरा को लेकर आ पहुँचे।

उस दिन केवल रबिन और डोरा ही का काम था। चित्र-कला में गति होने के कारण मदन मेक-अप का भी उस्ताद था। डोरा की भौंहों पर उस्तरा फेर दिया गया। मदन ने

उसकी आँखों के ऊपर नई भौंहें चिपकाईं। ग्राज पेंट से मदन ने उसके चेहरे पर ऐसी कारीगरी की कि प्रत्येक जानकार कहने लगा—"वाह, पूरा मंगोलियन मुख बन गया।"

मदन बोला—"हाँ, अब इस मुख को बहुत सावधानी से याद रखने के लिये स्टिल फ़ोटोग्राफ़ की जरूरत है; क्योंकि हर नए मेक-अप के समय अगर ठीक ऐसा ही मुख न बनाया जायगा तो बड़ी आफ़त होगी।"

स्टिल फ़ोटोग्राफ़ लेने के बाद शूटिंग शुरू हुई। जापानी कुमारी के कुछ दृश्य जापानी साज-सज्जा में लिए गए। इसके बाद वह पेरिस पहुँचाई गई। मार्ग में जहाज़ और रेल की यात्रा के तमाम दृश्य सबसे अंत में लेने के लिये छोड़ दिए गए। पेरिस के नृत्य-गृह में जापानी कुमारी के आरंभिक दिन दिखाए गए। धीरे-धीरे वह किस प्रकार पेरिस में प्रसिद्ध हो गई, इसकी भी शूटिंग की गई। रबिन की डॉक्टरी के कुछ दृश्य लेने के बाद उस दिन का काम समाप्त किया गया।

दूसरे दिन केवल रिहर्सल था। अमेरिकन ने अपने पेरिस के होटल में जापानी नर्तकी को चाय-पान का निमंत्रण दे रक्खा था। सुमधुर एकांत पाकर अमेरिकन उसके प्रति अपना अनुराग दिखाते हुए उसका हाथ पकड़ लेता है।

नर्तकी हाथ छुड़ाकर कहती है—"बस, खबरदार! इससे आगे न बढ़िए।"

रबिन घबराने लगता है। उसने कभी स्टोरी पढ़ने की

परवा ही न की थी। स्टोरी में कुछ लिखा था भी नहीं। मदन के स्क्रिप्ट में जरूर कुछ विस्तार के साथ था, पर उसे पढ़ लेना हरएक का काम न था। मदन के अक्षर बहुत रद्दी थे। एक प्रकार का शार्टहैंड समझिए। कुछ लोग कहते हैं, वह जान-बूझकर ही वैसा लिखता था कि हरएक उसे पढ़ न सके।

मदन बोला—"यहाँ अमेरिकन को नर्तकी का चुंबन लना चाहिए।"

रबिन बिगड़ उठा। कहने लगा—"क्या कहा? चुंबन लेना चाहिए?"

मदन—"हाँ। इमोशन को चरम सीमा पर पहुँचाना होगा, उसके बाद नर्तकी अमेरिकन के दोनो हाथों को छुड़ा उसे भूमि पर पटक देगी।"

डोरा सकुचाकर एक ओर खड़ी हो गई थी।

मदन ने कहा—"हाँ, कानजी, फिर शुरू कीजिए।"

रबिन ने बीच में जाकर कहा—"नहीं, ऐसा न होने पावेगा।"

मदन—"क्या मज़ाक़ तुम्हें सूझा है। सीन का सारा इफ़ेक्ट जाता रहेगा।"

रबिन—"मदन! तुमने सुधार के लिये कंपनी खोली न?"

मदन—"फिर क्या उधार थोड़े हो रहा है। उसमें बुराई ही क्या है? एक भाव का विकास ही जो है न?"

रबिन—"कुछ भी हो। वह न होने पावेगा।"

मदन—"पागल हुए हो क्या? इसमें कोई रिअलिटी नहीं है, एक अमेरिकन प्रेमी एक जापानी ऐक्ट्रेस का चुंबन कर रहा है। ऐसे दृश्य संसार में असाधारण नहीं हैं। एक कल्पना को तुम क्यों सत्य समझ रहे हो।"

कानजी बोले—"अच्छा, आगे बढ़िए। इस समय झगड़ा न बढ़ाइए।"

मदन ने आगे बढ़ने का संकेत दिया।

चौथा परिच्छेद

अँगूठी

शाम को होटल में वापस आकर रबिन ने डोरा से कहा—"डोरा, मैं तुमसे कहता न था, मदन एक पक्का डेविल है।"

डोरा को यह बात चुभती-सी प्रतीत हुई। उसने पूछा—"क्यों डियर!"

"आश्चर्य है तुम मुझसे इसका सबूत चाहती हो!"

"फिर भी कहो तो सही, तुमने उसमें क्या बुराई देखी?"

"तुम पूछती हो, बुराई? अरे, वह सिर से पैर तक बुराई के सिवा और किसी चीज का बना हुआ नहीं है।"

"वह अपने लिये बुरे हो सकते हैं। इतने ही से उन्हें बुरा कह डालने में तुम कुछ विचार नहीं कर रहे हो।"

"अगर तुम्हारा भोलापन इतना बढ़ जायगा तो, जरूर ही मैं तुम्हें भी मूर्ख संबोधन दूँगा। उसने कानजी और तुम्हारे पार्ट में आज कैसी खराब बिजनेसें रक्खी थीं। उसकी शरारत सब मैं जानता हूँ, यह सब उसने जान-बूझकर ही किया था।"

"मैं नहीं समझती, वे ख़राब बिजनेसें क्या थीं ? पश्चिम के समाज में चुंबन एक साधारण बात है।"

"कुछ भी हो, अगर मदन को मैंने फिर वैसा ही पाया, तो ज़रूर मैं उसकी कंपनी छोड़ दूँगा, और तुम्हें भी वहाँ जाने से रोक दूँगा।"

रबिन का स्थानापन्न मैनेजर दिन-भर के आमद और ख़र्च का हिसाब लेकर आ गया था।

डोरा ने उठते हुए कहा—"अच्छा, मैं जाती हूँ।"

चार दिन तक लगातार फिर शूटिंग हुई। समस्त दृश्य पेरिस के ही थे। भीड़ के दृश्यों को मदन सबके अंत में लेने के लिये छोड़ता जा रहा था।

जापानी नर्तकी के नाचते-नाचते हाथ का टूटना, उसका शय्यागत होना, उसकी बीमारी का बढ़ना और फ्रेंच डॉक्टर का उसके उपचार के लिये आने तक के दृश्य लिए गए।

फ्रेंच डॉक्टर के परिश्रम से नर्तकी अच्छी हो चली। एक दिन उसने कहा—"डॉक्टर महोदय !"

डॉक्टर ने कहा—"क्या कहती हो ?"

"मैं फिर उसीतरह नाच सकूँगी। मैं अब किसी कोण में अपना हाथ घुमा सकती हूँ। मैंने आज दर्पण में अपना मुख देखा है। मेरा रूप फिर लौट रहा है।"

"परमेश्वर को धन्यवाद !"

"ऐसे दुर्दिन में, इस परदेस में जब मेरे समस्त उपासक अदृश्य हो गए थे, आपने आकर मेरी रक्षा की। यह विदेशिनी आपकी जाति की नहीं, आपके धर्म की नहीं।"

"मैं जाति, रंग और धर्म की भिन्नता को कुछ नहीं मानता। इस समस्त जगत् में जो मनुष्यता का नाता है, क्या वह हम सबको एक ही सूत्र में नहीं गूँथ लेता?"

"तुम्हें धन्य है डॉक्टर! ऐसे ऊँचे विचार का मनुष्य मैंने और दूसरा नहीं देखा।"—कहकर नर्तकी ने अनुराग-भरी दृष्टि से डॉक्टर की ओर देखा।

डॉक्टर ने भी उसकी ओर मुग्ध होकर निहारा, और फिर प्रेम के आवेश में उसका हाथ पकड़ लिया।

नर्तकी ने अपना मस्तक डॉक्टर के कंधे पर रखकर कहा—"तुम्हारे इस ऋण का प्रतिशोध किस प्रकार कर सकूँगी, नहीं जानती।"

"केवल प्रेमभ-री दृष्टि से।"

मदन ने रबिन को डोरा का चुंबन कर लेने का संकेत दिया, और उसने उस आज्ञा का पालन किया। दृश्य समाप्त हुआ।

मदन ने छिपाकर कानजी की ओर इशारा किया, और धीरे-धीरे कहा—"देखा!"

कानजी ने वैसे ही उच्चारण में कहा—"देख रहा हूँ।"

टैकनीशियन मशीनें बंद कर चुके थे। स्टूडियो के अतिरिक्त

बल्ब बुझा दिए गए थे। रबिन और डोरा कल्पना का जगत् छोड़कर आगे को आ रहे थे।

मदन ने बढ़कर, रबिन से हाथ मिलाकर कहा—"वाह दोस्त खूब! आज तुमने बहुत नेचुरल पार्ट किया।"

रबिन बोला—"डोरा ने भी आज कमाल किया।"

मदन—"इनकी बात ही जाने दो, यह तो बॉर्न एक्ट्रेस हैं।" कानजी ने उन दोनो को ओट में मदन की कोहनी पकड़कर दबाई।

रबिन और डोरा ने कपड़े बदले, और मुँह-हाथ धोए।

मदन बोला—"चलिए, मेरे कमरे में चलिए। मैंने 'इंटर-मैरेज' का एक फ़ोल्डर-ऐडवर्टाइज़मेंट लिखा है, जाने से पहले उसे देख लीजिए।"

चारों मदन के कमरे की ओर चले।

कमरे के अंदर जाते ही रबिन की दृष्टि डोरा के इनलार्जमेंट पर पड़ी। उसने कहा—"किसकी? डोरा की तसवीर! कहाँ से लाए?"

मदन बोला—"फ़िल्म का एक टुकड़ा काटकर इनलार्ज किया और उसे ट्रांसपेरेंट रंगों से रँगा है।"

रबिन—"किसलिये यहाँ रक्खी है?"

मदन—"बड़े वहमी हो? रोज़ मुझे ही डोरा का मेक-अप करना पड़ता है। अगर एक दिन का मेक-अप दूसरे दिन के से न मिलेगा, तो सारी फ़िल्म काटकर फेंक देनी पड़ेगी। इस

इनलार्जमेंट को सामने रखकर मैंने इस जापानी नर्तकी के मुख की एक-एक रेखा और एक-एक नस का अध्ययन किया है।"

कानजी बोले—"हम लोगों की भी तीन तसवीरें इनलार्ज कर उनमें रंग भरो मदन! फिर ये चारों चित्र फ्रेम कराकर क्लब-रूम में टाँग दिए जायँगे।"

"यही मैं भी सोच रहा था।"—कहकर मदन ने फ़िल्म का विज्ञापन कानजी के हाथ में दिया।

सबने उस विज्ञापन की प्रशंसा की।

रबिन बोला—"कुमारी कुसुम!"

मदन—"हाँ।"

"ऐडवर्टाइज़मेंट के लिये ऐसा करने की ज़रूरत है।"

कानजी—"ठीक है। स्क्रीन-नेम अलग भी होता है।"

डोरा अपने नए नाम की ओर आकृष्ट हुई।

रबिन—"लेकिन यह पबलिक को धोका देना तो न होगा?"

मदन—"तुम्हारी मॉरेलिटी का काँटा बड़ा अजीब है रबिन!"

दो-तीन दिन की शूटिंग में रबिन के तमाम मुख्य दृश्य प्रायः समाप्त हो गए। कुछ दृश्यों के टुकड़े बाक़ी थे, वे सब अंत में लेने के लिये रक्खे गए थे।

अमेरिका के सेट् बनने शुरू हुए, और कानजी पूरे हीरो बनकर डोरा के साथ खेलने लग गए थे।

उस दिन रबिन ने आकर ज्यों ही अपना वेश बदलने

की तैयारी की, मदन ने कहा—"आज तुम्हारा कोई पार्ट नहीं।"

"कोई पार्ट नहीं! क्यों?"

"इसका क्या उत्तर हो सकता है रबिन! नहीं है, स्टोरी ही इस प्रकार है।"

"स्टोरी लिखनेवाले तुम हो। जिधर चाहो, उसे घुमा सकते हो।"

"नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है? स्वाभाविकता की रक्षा भी तो कोई चीज़ है न?"

अमेरिकन व्यापारी के साथ डोरा के प्रेम-दृश्य लिए जाने लगे। रबिन का दम घुटने लगा।

हवाई जहाज़ की यात्रा के दृश्य भी छोड़ दिए गए। जापानी नर्तकी अमेरिकन धनपति की नई दुनिया के महल में दिखाई गई।

रबिन ने कहा—"मदन! तुमने ग़लत कहानी लिखा है।"

"क्यों?"

"तुम्हें डॉक्टर को भी अमेरिका ले जाना चाहिए।"

"क्यो?"

"क्योंकि वह नर्तकी को अपने प्राणों से भी बढ़कर चाहता है।"

"लेकिन डॉक्टर बीमार पड़कर पेरिस में ही मर जाता है।"

"चुप रहो, मैं रेगुलर हैविट्स का हूँ, कभी बीमार नहीं पड़ता, और न मुझे अभी मरने की ही ज़रूरत है।"

"डॉक्टर ऐक्ट्रेस के वियोग में ही बीमार पड़ जाता है।" और, जब वह प्राण त्यागता है, तो नर्तकी का चित्र उसकी आँखों के सामने होता है। इस बात से डॉक्टर के निःस्वार्थ प्रेम में अद्भुत प्रकाश पड़ेगा।"

"यह बिलकुल अननेचुरल हो रहा है। तुम्हें डॉक्टर के साथ ही नर्तकी का विवाह करा देना चाहिए।"

कानजी, जो अब तक चुप थे, कहने लगे—"फिर मदन के खेलने को कोई पार्ट न रहेगा। उनके टेलेंट का अगर इस फ़िल्म में हम उपयोग न कर सके, तो फ़िल्म कभी पास न होगी।"

मदन—"इसके सिवा फ़िल्म में मेरा नाम न रह सकेगा। उस नाम को मशहूर करने में हमारा हज़ारों रुपया विज्ञापन में खर्च हो चुका है।"

रबिन—"फ़िल्म के डाइरेक्शन में तो तुम्हारा नाम जायगा ही।"

कानजी—"लेकिन मदन डाइरेक्टर इतने प्रसिद्ध नहीं, जितने ऐक्टर।"

रबिन—"कानजी, अगर आप लोग मेरा कहा न मानेंगे, तो, मैं कहता हूँ, फ़िल्म कभी पास न हो सकेगी।"

मदन—"रहने दो। तुम आज स्टूडियो में आए हो। कभी होटल छोड़कर बाहर की दुनिया देखी भी है?"

डोरा, सकरुण-मुख, चुपचाप थी।

रबिन उस दिन बहुत उदास होकर होटल लौटा। होटल में वह डोरा को साथ ले गया, और कहने लगा—"डोरा, मेरा कहना मानोगी ?"

"क्या बात है ?"

"मैं कल से फ़िल्म-कंपनी में न जाऊँगा।"

'क्यों ? अभी तुम्हारा पार्ट है।"

"पार्ट जाय चूल्हे में। मैं निश्चय कर चुका हूँ, उन बेईमानों के बीच में अब न जाऊँगा।"

"तुम्हारे शेष पार्ट का क्या होगा ? उसे कौन करेगा ? वे हर्जाने का दावा कर देंगे, तो ?"

"देख लिया जायगा।"

"नहीं डियर रबिन ! तुम जेंटलमैन हो, मैं विचार भी नहीं कर सकती कि इस प्रकार किसी को धोका दोगे।"

"काँटा काँटे से निकाला जाता है। वे बेईमान अच्छे बरताव के योग्य ही नहीं। डोरा, मेरा विश्वास है, तुम ज़रूर मेरा कहना मानोगी। मैं कहता हूँ, कल से तुम भी स्टूडियो में न जाओ। उनकी गरज़ होगी, तो नाक घिसते हुए हमारे दरवाज़े पर आवेंगे।"

"नहीं रबिन, वे लोग अच्छे हैं। आपके एक दिन के नहीं, बरसों के मित्र हैं। उनके बारे में एकदम ऐसी धारणा कर लेना सरासर अन्याय है।"

"तुम मूर्ख हो, तुम्हें संसार का अनुभव ही नहीं।"

"मूर्ख ही सही। उनके लाखों रुपए खर्च हुए हैं। हमारे न जाने से उनकी सारी फ़िल्म बरबाद हो जायगी।"

"हो जाने दो, यह दंड भी उनके लिये कम है।"

"वे दावा ठोक देंगे, और हमारा सब कुछ नीलाम कराकर पाई-पाई वसूल कर लेंगे। सारे शहर में हमारी बदनामी हो जायगी।"

"डोरा! रविन इन बातों से नहीं डरता।"

"लेकिन उन्होंने आपके साथ कोई भी तो बुरा व्यवहार नहीं किया।"

"बीच में ही मेरा पार्ट ठप कर दिया, इससे अधिक और बुराई क्या हो सकती है?"

'तुम उनके नौकर हो। वह जहाँ चाहें, तुम्हारा पार्ट समाप्त कर सकते हैं।'

"वह छोकरा मदन! मैं उसका नौकर? भूखा मरता था। मैंने उसे होटल में जगह दी, खाना खिलाया। वे दिन उसे याद नहीं आते। आज वह जहाँ चाहे, वहाँ मेरा पार्ट रोक सकता है! डोरा!"

"रविन! डियर!"

"तुम्हारी मरहम-पट्टी से कुछ न होगा। मैं साफ़ आदमी हूँ, साफ बात पसंद करता हूँ। तुम कल से स्टूडियो जाओगी?"

"जाने को मजबूर हूँ, क्योंकि मैं अपने पिता के लिये कोई आफ़त ख़रीदना नहीं चाहती।

"अंतिम बात ?

"हाँ।"

"सोच लिया ?"

"हाँ।"

तब मैं तुम्हारा कोई नहीं। लाओ मेरी इंगेजमेंट रिंग !"

डोरा ठक रहकर खड़ी रह गई।

रबिन ने अपना हाथ बढ़ाकर उसकी उँगली से अपनी दी हुई अँगूठी निकाल ली, और कहा—"इस होटल में तुम्हारे आने की भी कोई ज़रूरत नहीं।"

डोरा म्लान और विनत मुख वहाँ से अपने घर चली।

पाँचवाँ परिच्छेद

छिन्न बंधन

डोरा के जाने पर रबिन बड़ी देर तक सोचता और विचारता रहा कि अब क्या करना चाहिए। वह कमरे की आराम कुरसी पर मुँह लटकाए बैठा था। धीरे-धीरे उसे नींद आ गई।

संध्या हो चुकी थी, और दीपकों के प्रकाश में सारा शहर जगमगाने लग गया था।

होटल के नौकर ने देखा, रबिन के कमरे में अभी तक प्रकाश नहीं हुआ था। उसने मालिक को बाहर जाते भी नहीं देखा था। वह कमरे में गया, और उसने लैंप का स्विच दबा दिया।

रोशनी के कारण रबिन की आँखें उचट गईं। वह उठा, उसने घड़ी की ओर देखकर आश्चर्य-नाट्य किया। बालों में कंघी करते हुए उसने शीशे में अपना मुख निहारा और टोप पहनकर होटल के बाहर निकल आया।

सड़क पर आकर सोचने लगा, किधर जाऊँ। होटल की सबसे नीचे की मंज़िल का एक दूकानदार उससे पूछने लगा—"क्यों मिस्टर, आपकी फिल्म कब रिलीज़ होगी?"

रबिन ने सुनी अनसुनी कर अपना ध्यान दूर पर जाती हुई एक गाड़ी की ओर किया।

दूकानदार ने ज़ोर से कहा—"कहिए मिस्टर रबिन !"

रबिन को इस बार उसकी तरफ़ देखना पड़ा।

दूकानदार—"कहिए, आदाब अर्ज़, फ़िल्म-कंपनी के क्या हाल हैं ? फ़िल्म कब निकलेगी ?"

रबिन निश्चय न कर सका, उसे क्या उत्तर दे। उसके मुख पर उलझन प्रकट हो रही थी। उसने जल्दी-जल्दी उत्तर दिया—"इस समय क्षमा कीजिएगा, बड़ी आवश्यक बात में फँसा हूँ। फिर मिलूँगा।"

रबिन तीव्र गति से आगे बढ़ गया और सीधे ईस्टर्न शू-फ़ैक्टरी में जा पहुँचा। देखा, डोरा अपने पिता के पास बैठी कुछ बातें कर रही थी। दूर पर रबिन को आता देखकर सहम गई, और उठकर चल दी।

डोरा के पिता के भावों में रबिन ने कोई परिवर्तन नहीं देखा। उन्होंने कुरसी की ओर संकेत कर कहा—"आओ रबिन !"

रबिन कुरसी पर बैठते हुए सोचने लगा—"तब क्या डोरा ने अभी तक इनके समीप उस बात की चर्चा भी नहीं की ?"

पिता ने पूछा—"कंपनी के क्या हाल हैं ?"

रबिन ने मन में निश्चय किया, तब मैं भी कुछ न कहूँगा। उसने उत्तर दिया—"वैसे ही हाल है।"

कानजी विशेष दिनों को छोड़कर दस बजे रबिन के होटल में अपनी मोटर ले आते थे। उसी समय डोरा भी वहीं आ जाती थी। फिर रबिन और डोरा को लेकर वह स्टूडियो की ओर प्रस्थित होते थे।

नित्य के निश्चय के अनुसार उस दिन दस बजे कानजी अपनी मोटर लेकर रबिन के होटल में आए।

होटल में रबिन का पता न था। कानजी ने पूछा—"कहाँ गए ?"

नौकर बोला—"कंपनी में।"

कानजी की समझ में न आया। उन्होंने पूछा—"कितनी देर हुई ?"

"घंटा-भर।"

"साइकिल पर ?"

"हाँ।"

"साथ में मिस डोरा भी ?"

"नहीं, अकेले ही।"

कानजी डोरा के पिता की दूकान पर पहुँचे, तो द्वार पर ही उन्हें डोरा खड़ी मिली। कानजी को देखते ही वह उनकी ओर दौड़ी हुई चली आई। डाइवर ने मोटर रोककर उसका द्वार खोल दिया। डोरा भी उसमें बैठ गई।

मोटर स्टूडियो की ओर चली। मार्ग में कानजी बोले—"रबिन आज पहले ही स्टूडियो चल दिए।"

डोरा ने साश्चर्य कहा—"अच्छा !"

"आपको नहीं मालूम ?"

"नहीं ।"

कंपनी में पहुँचकर मदन को अकेला देखकर कानजी ने कहा—"रबिन कहाँ हैं ?"

मदन ने रूखेपन से कहा—"मालूम नहीं ।"

कानजी ने चिंता के साथ कहा—"तब आज उनके दृश्य की शूटिंग कैसे होगी ?"

मदन ने कहा—"वह दृश्य छोड़ देंगे । आपका और मिस डोरा का सीन ले लेंगे । उसके सेट् भी तो लगे हुए हैं न ?"

कानजी—"वह कल की बातों से कहीं रूठकर तो नहीं बैठे हैं ?"

मदन—"रूठेंगे, तो अपना सुहाग ले लेंगे । फ़िल्म उनके बल पर नहीं बन रही है ।"

कानजी—"अगर कहीं कुसुम कुमारी रूठ गईं, तो ?"

डोरा रूमाल से मुख ढक हँसने लगी ।

मदन—"नहीं, यह न रूठेंगी । तमाम फ़िल्म इनके ही ऐक्टिंग से भरी है । रूठकर क्या यह अपने उस चित्र को मिटा डालेंगी । क्यों मिस डोरा ?"

डोरा—"हाँ, किसी काम को अधूरा छोड़ देना बुद्धिमानी नहीं ।"

कानजी—"मदन, अगर सचमुच रबिन न आया, तो क्या होगा ?"

मदन—"एक ही दृश्य तो उसका बाक़ी है, जहाँ उसकी मृत्यु होती है। अगर वह न लौटा, तो मैं आपको अपने मेक-अप का कौशल दिखाऊँगा।"

कानजी—"वह क्या ?"

मदन—"मैं ठीक उसका मेक-अप बनाकर उसकी मृत्यु-शय्या में पड़ जाऊँगा।"

कानजी—"आवाज़ कैसे मिलाओगे ?"

मदन—"मरते समय अनेक मनुष्य गूँगे भी तो हो जाते हैं। गूँगे का ऐक्टिंग कर आवाज़ की विषमता छिपा दी जायगी।"

डोरा—"ठीक चेहरा रबिन की भाँति बना लोगे ?"

मदन—"और नहीं तो क्या ?"

शूटिंग शुरू हुई। अमेरिकन और नर्तकी के प्रेम-परिपूर्ण दृश्य लिए गए।

संध्या-समय जब डोरा कानजी के साथ लौट रही थी, मदन ने उससे कहा—"कुसुमकुमारी ! आपके हाथ की अँगूठी कहाँ गई ?"

डोरा ने साधारण भाव से कहा—"मालूम नहीं।"

कानजी—"कहीं गिर गई क्या ?"

डोरा चुप रही। कानजी ने भी उसे उत्तर देने के लिये बाध्य नहीं किया।

उधर न-जाने कहाँ-कहाँ घूम-फिरकर संध्या-समय रबिन अपने होटल में आया। उसके आते ही मैनेजर ने एक रजिस्टर उसके सामने रक्खा।

रबिन के मनोराज्य में दूसरी ही उथल-पुथल मची हुई थी। उसे मैनेजर की यह कृति पसंद न हुई। उसने रजिस्टर उठाकर फेक दिया, और कहा—"आकर एक क्षण साँस भी तो नहीं लेने देते। जाओ, ले जाओ इसे, फिर आना।"

मैनेजर रजिस्टर उठाकर चला गया। रबिन ने मेज़ पर दृष्टि की। एल्बीक सिलवर के फ्रेम में डोरा की तसवीर सामने ही रक्खी थी। रबिन ने उसे उठाकर देखा, और अपने मन में कहा—"नहीं-नहीं, यह हरिणी उन व्याधों के बीच में असहाय न छोड़ दी जायगी। मैंने उससे अपनी अँगूठी वापस ले ली, तो क्या हुआ? मनुष्यता का नाता मुझे मजबूर करता है कि मैं उसके पिता को जाकर सावधान कर आऊँ। फिर उनकी इच्छा, चाहे जैसा करें।'

रबिन उसी समय उठकर ईस्टर्न शू-फ़ैक्टरी में पहुँचा। डोरा स्टूडियो से वापस आ गई थी, पर दूकान में न थी। उसके पिता कुछ गाहकों से बातें कर रहे थे। रबिन भी एक कुरसी खींचकर बैठ गया।

गाहकों के चले जाने पर डोरा के पिता रबिन की ओर आकृष्ट हुए।

रबिन ने कहा—"मैं बहुत जरूरी काम से आपके पास आया हूँ।"

"कहो।"

"बात यह है, कानजी और मदन, ये दोनो आदमी ठीक नहीं। आप डोरा को उनकी कंपनी में जाने से रोकिए।"

"उसे तुम्हारा साथ प्राप्त है, फिर भय कैसा?"

"मैंने आज से उनकी कंपनी छोड़ दी।"

"क्यों?"

"उनमें मनुष्यता का अभाव देखकर।"

"बात क्या है रबिन! समझ में नहीं आती। स्पष्ट कहो। वेतन का कोई झगड़ा उठा है क्या?"

"नहीं।'

"फिर?"

"कानजी जरूर एक शरीफ़ आदमी का लड़का है, लेकिन मदन जमाने-भर का छटा हुआ। मैं एक अरसे से उसे जानता हूँ। कानजी की सज्जनता की कोई छाप मदन पर नहीं पड़ी, लेकिन मदन ने अपना पूरा रंग कानजी पर चढ़ा दिया।"—कहकर रबिन उठ खड़ा हुआ।

डोरा के पिता बोले—"तुम बहुत जोश में हो। ठहरो, कुछ क्षण विश्राम लेकर ठीक-ठीक बात समझाओ।"

रबिन—"अपनी शक्ति-भर सब कुछ समझा चुका। इनके

पीछे मेरे होटल की आमदनी आधी रह गई। बहुत जरूरी काम है।"

"ठहरो तो सही। मैं डोरा को बुलाता हूँ।"

"नहीं, उसे मेरे सामने न बुलाइए।"—कहकर रबिन चलने लगा।

"सुनो तो सही।"

"बस, अब कुछ नहीं। मेरा कर्तव्य था कि मैं यह सब सूचना आपको दूँ। अब आप अपना कर्तव्य पहचानिए।"—कहकर रबिन चला गया।

पिता ने डोरा को बुलवाकर पूछा—"डोरा, बात क्या है? रबिन कंपनीवालों से बहुत नाराज है।"

"पिताजी, बात कुछ भी नहीं।"

"उसने नौकरी छोड़ दी?"

"काम पर तो आज नहीं गए। नौकरी छोड़ने के लिये उन्होंने न किसी से कुछ कहा, न लिखकर ही कुछ भेजा।"

"वह कहता है, कंपनीवाले अच्छे लोग नहीं।"

"मैं तो ऐसा नहीं समझती।"

"लेकिन रबिन बहुत होशियार आदमी है। मैं उसकी सलाह मानता हूँ। तुम कल से कंपनी में न जाने पाओगी।"

कंपनी में भेड़िए नहीं हैं। वे सब लोग मनुष्यता रखते हैं। संसार में ऐसे अविश्वास से काम नहीं चलता पिताजी!"

"लेकिन मुझे रबिन की बात टाल देना उचित नहीं जान पड़ता।"

"मुझे भी आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। पर एग्रीमेंट का क्या होगा?"

पिता ने चिंतित होकर कहा—"हाँ, एग्रीमेंट का क्या होगा? मैं रबिन से भी पूछना भूल गया।"

"वे हर्जाने का दावा ठोक देंगे।"

"हूँ, अच्छा कल, जब तुम कंपनी में जाओ, तो साथ में नौकरानी को लेती जाना।"

छठा परिच्छेद

दो शिकारी

दूसरे दिन ठीक दस बजे कानजी की मोटर रबिन के होटल के पास रुकी। कानजी ने होटल की सीढ़ियाँ पार कीं। उन्होंने देखा, रबिन ऑफ़िस में बैठा कुछ लिख रहा है।

कानजी के जूतों की खट-खट से भी जब उसका ध्यान न टूटा, तो उन्होंने द्वार पर से ही पुकारा—"गुड मार्निंग मिस्टर रबिन !"

रबिन का ध्यान लिखते-लिखते उधर गया, तो वह कुरसी छोड़कर उठे, और विनम्र स्वर में कहा—"गुड मार्निंग सर !"

"क्यों, तबियत तो ठीक है न ?"

"नहीं ।"—कहकर रबिन ने कुरसी खींचकर कानजी के निकट रक्खी।

"कल स्टूडियो में इसलिये नहीं आए ? और मैं आज भी देख रहा हूँ कि तुम वहाँ चलने के लिये तैयार नहीं हो।"

"नहीं, न चलूँगा। कहिए, तो मैं अभी इस्तीफ़ा लिखकर

"शर्त के अनुसार पंद्रह का नोटिस दिए बिना आप हमारी नौकरी छोड़ कैसे सकते हैं ?"

"मेरा पंद्रह दिन इधर का वेतन काट लीजिए।"

"सुनो, यह ख़याल छोड़ दो। हमारी कंपनी में ऐक्टरों की कमी नहीं। जिसको भी कपड़े पहनाकर हम ऐक्शन की फ़ील्ड में निकाल देंगे, जिसका भी ब्लॉक बनवाकर अख़बार में छपवा देंगे, वही प्रसिद्ध हो जायगा। कंपनी को अपनी चीज़ समझो। मदन ने तुमसे ऐसा क्या कह दिया, जो तुम इतने निर्मम हो गए ?"

"हाँ, वह मदन; मैं आपको भी सचेत करता हूँ। आप उसके फेर में न पड़ें।"

कानजी ने कहा—"देर हो रही है तुम न चलोगे, तो मैं जाता हूँ। डोरा अपने घर ही होगी ?"

"डोरा की वह जाने।"—रबिन ने पीठ फेरते हुए कहा।

कानजी सीढ़ियों पर उतर गए थे, शू-कंपनी में जाकर देखा, डोरा अपने पिता और एक आया के साथ उसकी ही प्रतीक्षा कर रही थी।

डोरा के मोटर में बैठ जाने के बाद उसके पिता ने कहा—"डोरा के साथ के लिये इसे भी ले जाइए।"

कानजी हँसते हुए बोले—"साथ क्या वहाँ आजकल सौ से अधिक आदमी काम पर लगे हैं। आप किसी दिन उधर

आए नहीं । आज चलिए न इसी मोटर पर। मैं दूसरी मोटर पर चला आऊँगा।"

डोरा और उसकी आया, दोनो मोटरकार की पिछली सीट पर बैठ गईं, कानजी ड्राइवर के पास डट गए।

डोरा के पिता हँसकर कहने लगे—"आज नहीं, कल रबिन को साथ लेकर आ ऊँगा। वह आप लोगों से कुछ नाराज़ है।"

'कानजी ने ड्राइवर को चलने का संकेत देकर कहा—"हाँ, नाराज़ हैं, विना बात ही।"

स्टूडियो में पहुँचकर डोरा आया को लेकर मेक-अप-रूम में गई। कानजी ने मदन के पास जाकर रबिन की नाराज़ी का वर्णन किया।

मदन बोला—"आप उसकी ख़ुशामद न करें। उसे ग़रज़ हो, तो सौ बार आवे। डोरा के मन में तो कोई उदासी नहीं है न?"

"नहीं, वह तो पहले से भी अधिक सुंदर और गीतमयी हो उठी है।"

"उसके नाराज़ होने से अवश्य हमारी हानि हो सकती है। रबिन-जैसे तो दर्जनों रँगकर सीन में उतारे जा सकते हैं। डोरा के साथ दूसरी स्त्री कौन तुम्हारी मोटर से उतरी?"

"उसकी नर्स है। उसके पिताने साथ के लिये भेजी है।'—कानजी ने मुसकाते हुए कहा।

"वाह, क्या बात है! दिखाव अच्छा है इसका। मैं जापानी

नर्तकी के लिये एक की कल्पना कर चुका हूँ। किसे वह पार्ट दूँ, यही सोच रहा था। वे दोनो अतिरिक्त ऐक्ट्रेसें, जो आपने हाल ही में नौकर रक्खी हैं, किसी काम की नहीं। चलिए, कदाचित् इस पर पार्ट ठीक बैठ जाय।"

दोनो मेक-अप-रूम में गए। डोरा नर्स को अपने परिच्छद और अलंकार दिखा रही थी।

मदन बोला— मिस कुसुम, आज आप एक नई ऐक्ट्रेस ले आई हैं क्या ?"

डोरा हँसती हुई बोली—"हाँ।"

मदन कहने लगा—"हँसी नहीं कर रहा हूँ। अमेरिकन धनपति ने जापानी ऐक्ट्रेस के लिये एक नर्स रख ली है। इन्हें उन वस्त्रों में से कोई-न-कोई जरूर फ़िट होंगे। मैं आपके आज के दृश्यों में इन्हें भी निकालूँगा।"

"विना रिहर्सल के ही ?"

"हाँ।"

नर्स के मुख पर हँसी के भाव अंकित हुए।

डोरा बोली—"क्यों आया ! ऐक्ट्रेस बनोगी ?"

नर्स ने कहा—"हाँ-हाँ, क्यों नहीं ?"

नर्स नवीनतम सदी की थी। घुटनों तक का स्कर्ट पहनती थी।

मदन बोला—"अच्छी बात है, इन्हें सिखा-पढ़ाकर आपके पास भेजूँगा। दो-चार लफ़्ज रहेंगे। आज विना रिहर्सल के भी हो जायगा।"

दासी सजाई गई। वह दृश्य में निकली। सबको उसके ऐक्टिंग से संतोष हुआ।

कानजी कहने लगे—"मदन, ख़ूब दोस्त ! तुमने फिल्मलैंड के लिये एक नया सितारा खोज लिया।

मदन—"ऐक्टिंग के जर्म हरएक के दिमाग़ में नहीं रहते। जिसके रहते भी हैं, तो उसे पता नहीं रहता कि मेरे पास क्या है। वह तो कोई गुरु मिलें, जिसे पहचान हो, तो अनेक एक्ट्रेसें प्राप्त हो सकती हैं।"

चार-पाँच दिन तक अमेरिकन और नर्तकी के दृश्य बेखटके चलते रहे। नर्तकी को डॉक्टर की मृत्यु का समाचार दिया गया। उसके दृश्य का शोक कम करने के लिये अमेरिकन उसे समुद्र-तट की सैर के लिये ले जाने लगा। दासी भी साथ-साथ मोटर तक चली। अमेरिकन ने कहा—"दासी, तुम यहीं रहो।"

दासी ने स्वामिनी की ओर देखा। वह अपने डॉक्टर के वियोग में सुध-बुध भूली हुई थी।

कुछ दूर तक क्लोज़-अप लेने के लिये अमेरिकन की मोटर में ही प्रबंध किया गया था। अमेरिकन स्वयं ड्राइव कर रहा था। मोटर चल दी।

उस दृश्य का अंतिम भाग डिस्टेंस शॉट में धूसरित किए जाने को था, इसलिये एक अन्य कर्मचारी और कुछ अतिरिक्त सामान लेकर डाइरेक्टर साहब एक दूसरी मोटर पर चले।

दासी को कुछ निराश पाकर उन्होंने उसे अपनी मोटर में ले लिया। दूसरी मोटर मदन .खुद ड्राइव कर रहे थे।

समुद्र-तट पर अनेक प्रकार के शॉट्स लिए जाने के बाद मदन ने कहा—"बस, अब एक शॉट और ले लेने पर शूटिंग समाप्त होगी।"

मशीनें भूमि पर जमाने के बाद मदन ने कानजी से कहा—"अब आप ऐक्ट्रेस को लेकर दूर क्षितिज की ओर चलिए।"

कानजी ने कहा—"कितनी दूर ?"

मदन—"बिलकुल दूर, हमारी दृष्टि से ओझल हो जाइए। नेचुरल फ़ेड ऑउट लिया जायगा।"

कानजी की प्रसन्नता को मदन ने ही लक्ष्य किया। वह मोटर लेकर क्रमशः छोटे होकर दूरी के शून्य में मिल गए।

मदन और उसके साथी शॉट ले लेने के बाद कानजी और डोरा के लौट आने की प्रतीक्षा करने लगे।

आधा घंटा बीत गया, पर मार्ग पर उनके लौट आने के कोई चिह्न न दिखाई दिए।

दासी कहने लगी—"कहाँ निकल गए ? अब तक तो उन्हें लौट आना चाहिए था न, क्यों डाइरेक्टर साहब !"

मदन कहने लगा—"हाँ।"

फ़ोटोग्राफ़र बोला—"कोई ऐक्सीडेंट तो नहीं हो गया ?"

दासी बोली—"मोटर तो है ही, चले चलें।"

"ठीक है।"—कहकर वे सब मोटर पर बैठे। मदन ने मोटर

के चक्के पर हाथ रक्खा। और सेल्फ़ तथा एक्सीलरेटर पैर से दबाए, कोई गति पैदा न हुई। मदन ने तीन-चार बार कोशिश की, कुछ फल न हुआ। वह कहने लगा—"पेट्रोल तो है, बैटरी कमज़ोर हो गई। हैंडिल से कोशिश करूँ।" उसने हैंडिल घुमाया। नं० २ प्लग ने स्पार्क नहीं दिया। वह बोला—"क्या प्लग है नहीं, जा न सकेंगे। लेकिन कोई चिंता की बात नहीं। कानजी क्या कोई नौसिखिए ड्राइवर हैं।"

दासी अपने मन में सोचने लगी—"मदन कोई धूर्तता तो नहीं कर रहा है।"

मदन मोटर के पुर्जे खोलने और कसने लगा। आधे घंटे में जब उसका एक्सीलरेटर भटभटाने लगा, तो सबने क्षितिज में देखा, कानजी की मोटर चली आ रही थी। मदन ने सबसे मोटर में बैठने को कहा।

कानजी आकर बोले—"हमें कदाचित् देर हो गई।"

मदन—"नहीं, क्या देर हुई, कुछ भी नहीं।"

कानजी—"मोटरकार के पिछले दोनो पहियों में पंक्चर हो गए। अतिरिक्त पहिया एक ही था। दूसरे पहिए को जोड़ने और पंप करते यह वक़्त हो गया। मेरे दोनो हाथ दुखने लगे हैं। कुमारी डोरा यदि सहायता न देतीं, तो शायद और भी देर हो जाती।"

चार-पाँच दिन बीत गए, पर रबिन ने भूलकर भी फ़िल्म-कंपनी की ओर न देखा। कानजी ने जब कभी रबिन के पास

जाने की चर्चा की, मदन ने कहा—"इस तरह मनाने की क्या आवश्यकता है, वह आपका नौकर है।"

डोरा की दासी को नियमित रूप से उसके साथ जाने की आज्ञा थी। उसके पिता दो बार रबिन के होटल में गए। दोनो बार वह नहीं मिला। उस दिन लौटते समय वह होटल में कह आए, अब जब रबिन लौटकर आवें, तो मुझे आकर सूचित कर जाना। लेकिन रबिन ने आकर नौकर से कह दिया—'इस समय उनके पास जाने की कोई आवश्यकता नहीं, कल देख लिया जायगा।"

दूसरे दिन प्रभात समय ही डोरा के पिता रबिन के होटल में आ पहुँचे।

रबिन के भाव के रूखेपन को वह आते ही जान गए। रबिन ने उन्हें अभिवादन किया, पर बैठने को कुरसी न दी। वह कुरसी पर बैठे, और रबिन किसी चीज़ के खोजने का बहाना करने लगा।

डोरा के पिता बोले—"क्या खो गया?"

"एक रिंग।"

"कब खोई?"

"रात मेरी उँगली में ही थी, अभी मैं कहीं बाहर गया भी नहीं।"

'यहीं गिरी है, तो क्या चिंता है, मिल ही जायगी। तुम कंपनी में नहीं गए?"

रबिन ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया—"नहीं।"

'चलो, मेरे साथ चलो। आज ही।"

"आपके साथ जाकर क्या होगा। मुझे डर लगता है क्या ?"

"मुझे वे दोनों शरीफ़ प्रतीत होते हैं। तुम्हें क्यों उनसे ऐसी घृणा हो गई ?"

"आपको भी सब मालूम हो जायगा। तसवीर बन रही है। उनकी सारी करतूतें तब प्रकट होंगी, जब वह फ़िल्म परदे पर आवेगी। घबराइए नहीं।"

डोरा के पिता ने चिंता से कहा—"रबिन, तुम्हारे इस वाक्य का क्या अर्थ है ?"

"ये सब क्या समझाने की बातें हैं। लेकिन जान पड़ता है, आपके अधिकार से जब बात चली जायगी, तब आपकी समझ में आवेगी।"

"तब तुम क्या कहते हो ?"

"मुझे जो कुछ कहना था, कह चुका ?"

"डोरा को कल से कंपनी में न जाने दूँ ?"

रबिन निरुत्तर रहा।

वह लाठी सँभालकर उठते हुए कहने लगे—"अच्छी बात है, कल से डोरा कंपनी में न जायगी।"

रबिन के भावों में परिवर्तन हुआ, वह कहने लगा—"एग्रीमेंट का भय न कीजिए। मैंने वकील को दिखाया था।

वह कहता था, अधिक-से-अधिक कंपनीवाले पंद्रह दिन का वेतन काट लेंगे, इससे अधिक कुछ नहीं।"

डोरा के पिता के मन में एक दूसरा विचार आया। उन्होंने कहा—"मैं डोरा के साथ रोज़ नौकरानी भेज देता हूँ। वह स्टूडियो अकेली नहीं जाती।"

रबिन उन्हें विचलित समझकर बोला—'कीजिए, जो आपकी इच्छा।"

हठात् रबिन को फ़र्श पर अँगूठी मिल गई। उसने उसे उठाकर डोरा के पिता के निकट कर कहा—'मिल गई अँगूठी।"

डोरा के पिता ने चौंककर देखा, वह ठीक उस अँगूठी से मिलती थी, जो रबिन ने डोरा को दे रक्खी थी। उन्होंने घबराकर कहा—"डोरा स्टूडियो में न जायगी।"

वह अपनी शू-फ़ैक्टरी को चल दिए।

तीसरा विराम—

पहला परिच्छेद

हवाई जहाज़ में

संध्या-समय डोरा के लौट आने पर उसके पिता ने कहा—"डोरा, मैंने बहुत सोच-विचारकर निश्चय किया है। कल से तुम स्टूडियो में न जाओगी।"

"आप फिर उसी फ़िज़ूल बात पर लौट गए पिताजी! कल हवाई जहाज़ पर की शूटिंग है। दो हवाई जहाज़ बहुत बड़े किराए पर ले लिए गए हैं। कल रात में भी शूटिंग होगी। कानजी के पिता ने आज्ञा दी है कि फ़िल्म बहुत शीघ्र तैयार हो जानी चाहिए। इसलिये दो-चार दिन रात को भी समय निकालकर काम पूरा कर दिया जायगा।"

"तुम भी हवाई जहाज़ पर चढ़ोगी?"

"और नहीं तो क्या? फ़िल्म-हीरोइन तो मैं ही हूँ।"

"नहीं-नहीं, कहीं गिर पड़ीं तो?"

"पिताजी, आप भी क्या बात सोचते हैं? हवा में उड़ने के लिये मेरे मन में आज अजीब उमंग भरी हुई है।"

"लेकिन मैं तुम्हें न जाने दूँगा।"

"केवल चार-पाँच दिन की बात है। मेरा मन न तोड़िए, और कानजी से व्यर्थ की शत्रुता न मोल लीजिए।"

"शत्रुता कैसी ?"

"पूरी शत्रुता है। इतना रुपया उनका खर्च हुआ है। अगर कल से मैं वहाँ न जाऊँगी, तो वह सब धन पानी की धार में बह जायगा। रबिन के वहाँ न जाने से उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा, इसी से उन्होंने रबिन के गले में क़ानून का फंदा नहीं डाला।"

रबिन का नाम सुनते ही पिता को कुछ याद आया। उन्होंने पूछा—"डोरा, रबिन ने जो तुम्हें इंगेजमेंट रिंग दी थी, वह कहाँ है ?"

"क्यों ?"

"ऐसे ही पूछता हूँ।"

"उन्होंने वापस माँग ली।"

"कारण ?"—पिता ने क्षीण स्वर में पूछा।

डोरा नाराज़ होकर बोली—"उनकी चीज़, माँग ली। इसमें और क्या कारण हो सकता है ?"

पिता उत्तजित होकर उठ खड़े हुए, और एक हाथ की हथेली पर दूसरे हाथ की मुट्ठी मारते हुए कहने लगे—"लेकिन तम्हारा अब फ़िल्म कंपनी से कोई संबंध न रहेगा। तुम अब वहाँ न जाने पाओगी।"

डोरा बोली—"मैं ज़रूर जाऊँगी।"

पिता—"अगर रबिन 'जाओ' कह देगा, तो जाओगी, नहीं तो हरगिज़ नहीं।"

दूसरे दिन कानजी अपनी मोटर लेकर शू-फ़ैक्टरी में आ पहुँचे। मदन ने उनसे रबिन के पास बिलकुल न जाने को कह दिया था।

कानजी के आने से पहले पिता ने डोरा को स्टूडियो में न जाने के लिये बहुत समझाया, लेकिन वह अपने हठ पर दृढ़ रही। पिता ने समझा, कदाचित् रबिन की सहायता से कुछ सफलता मिल सके। वह उसे बुला लाने के लिये होटल की ओर चले, पर वहाँ उन्हें रबिन न मिला।

इस अवकाश में डोरा माता से कह आई कि नौकरानी साथ है, और वे दोनो आज रात को घर वापस न आवेंगी, वहीं स्टूडियो ही में रहेंगी।

पिता के होटल से लौटने के पहले ही डोरा और उसकी नौकरानी बिस्तर बाँध कानजी के साथ स्टूडियो चली गई।

दिन-भर हवाई जहाज़ पर शूटिंग हुई। डोरा ने वह दिन बड़े आनंद में बिताया। पर उसकी नौकरानी उदास थी, क्योंकि उसे हवाई जहाज़ पर ले जाने की कोई आवश्यकता नहीं समझी गई।

संध्या-समय मदन ने कहा—"अब बहुत थोड़ी-सी छुट्टी बची हुई है।"

कानजी बोले—"सबसे बड़ी छूट. फ्रेंच डॉक्टर की मृत्यु का दृश्य तो बचा ही हुआ है।'

मदन—"उसमें क्या रक्खा है। घंटा-भर मेक-अप में अवश्य लगेगा, पंद्रह मिनट में ले लिया जायगा। बोलना कुछ है नहीं, केवल स्वरों के इफ़ेक्ट देकर दृश्य समाप्त कर दिया जायगा। कुछ बैकग्राउंड म्यूजिक से सीन में करुणा जगा दी जायगी। मृत्यु का दृश्य केवल छाया का ही ले लेंगे।"

कानजी—"कुमारी डोरा का दृश्य में कोई काम नहीं है, तो इन्हें व्यर्थ ही रोक लेने से लाभ ?"

डोरा—"क्या हानि है, मैं दर्शक बनकर आप लोगों के साथ जागती रहूँगी। मदनजी, आप रबिन की आकृति धारण करेंगे न ?"

मदन—"हाँ, उसमें क्या कठिनता है ? नाक पर थोड़ा ग्रीज़ पेंट लगा लेने से उसकी लंबी नाक और भारी ठोड़ी निकाल ली जायगी। उसके बाद जिन बालों को वह धारण करता था, वे सब यहीं रक्खे हैं। अगर उसकी बीमारी लंबी दिखाई गई, तो कुछ दाढ़ी भी बढ़ा ली जायगी, कुछ गाल भी पिचका लिए जायँगे।"

कानजी—"कुमारी डोरा के विश्राम के लिये कहाँ ठीक होगा ?"

मदन—"मैं अपना कमरा इनके लिये छोड़ दूँगा।"

कानजी—"और तुम ?"

मदन—"मेरा क्या है ? स्टूडियो के ही किसी सोफ़े पर पड़ रहूँगा।"

कानजी—"नहीं, तुम्हारा बिस्तर मेरे कमरे में लगवा दिया जायगा।"

मदन—"अच्छी बात है।"

कानजी नौकरों को बुलाकर वैसा ही प्रबंध करने लगे।

मदन को अपने कमरे के पियानो की बात याद आ गई। उसने वह घटना छिपा रक्खी थी। उसकी इस समय इच्छा हुई, उस बात को प्रकट कर दे, पर फिर कुछ समझकर चुप हो गया।

रात को टेकिंग आरंभ हो जाने के कुछ देर बाद कानजी बोले—"मदन, मेरा भी कोई काम नहीं, और डोरा भी दर्शक ही के रूप में हैं। कहो, तो हम लोग विश्राम करें। दिन-भर के थके हैं।"

मदन को तुरंत ही एक बात याद आ गई। वह बोला—"डोरा, तुम्हारा पार्ट है। डॉक्टर को मरते समय तुम्हारा विज़न दिखाया जायगा। चलो, मेक-अप कर कपड़े पहन लो।"

कानजी खिन्न होकर कहने लगे—"तुम्हारा बड़ा विकट संचालन है मदन ! तुम श्रांति देकर विश्राम नहीं देना चाहते।"

मदन ने हँसते हुए कहा—"आप जाकर विश्राम करें न ?"

"नहीं, मैं भी न जाऊँगा।"—कानजी ने जमुहाई लेकर कहा।

रात को एक बजे तक शूटिंग होती रही। एक बजे के बाद सब आराम करने चले गए। आधे घंटे में सारी स्टूडियो के दीपक बुझ गए, केवल स्टूडियो के भीतरी फाटक में एक बल्ब जल रहा था। उसके उज्ज्वल प्रकाश में कंपनी का चौकीदार अपने मुँह से सुस्ती निकालता हुआ बीच-बीच में कह रहा था—"जागते रहो।"

अंधकार में पड़े-पड़े मदन जाग ही रहा था। उसके मस्तिष्क के विचारों का क्रम टूटता ही न था। अंत में वह उठा। उसने चुपचाप जूता, कपड़े पहने, कमरे का द्वार खोला, और दबे पैर दूसरे कमरे में चला गया।

रात के सन्नाटे में चौकीदार ने फिर पुकारा—"जागते रहो।"

मुह ढके हुए नींद का बहाना कर कानजी भी जाग ही रहे थे। मदन को चुपचाप शो-रूम का द्वार खोलकर उसके अंदर जाते देख उनके मन में भ्रम उपजा। उन्होंने गर्दन उठा मदन की ओर कान दिए।

स्टूडियो की दूसरी ताली मदन के ही पास रहती थी। जब उन्होंने मदन को स्टूडियो खोलकर उसके अंदर जाते सुना तब वह पड़े न रह सके। चुपचाप उठे, और एक कंबल ओढ़ बिना जूते पहने छिपकर मदन का अनुसरण करने लगे।

जब मदन स्टूडियो से बाथ-रूम में गया, तो कानजी

स्टूडियो के अंदर जाकर एक सेट् के खंभे की ओट में छिप गए। उन्होंने क्षीण प्रकाश में मदन की छाया-मूर्ति को मेक-अप और कसट्यूम के कमरे में जाते देखा। वह बाथ-रूम में आ गए।

मदन ने इस बार कसट्यूम के कक्ष का द्वार खोलकर बंद कर दिया था कानजी मदन की कार्य-गति पर आँख नहीं रख सके। द्वार में यद्यपि काँच जड़ा था, पर उसके दूसरी ओर परदा पड़ा था।

कानजी ने दूसरे कमरे की ओर देखा, वहाँ भी परदा पड़ा था, पर कुछ हटा हुआ। उन्होंने काँच के पास आकर देखा, डोरा मुँह खोलकर सोई हुई थी। स्टूडियो के फाटक पर जले हुए बल्ब की रोशनी, खिड़की के काँच से होती हुई, फ़र्श पर बिखरी थी।

परिच्छद के कमरे में मदन न-जाने क्या कर रहा था। कानजी वहीं बाथ-रूम में खड़े थे। द्वार खोलकर परिच्छद के कमरे में चले जाने का विचार कर ही रहे थे कि उन्हें मदन की आहट सुनाई दी। वह चुपके से स्टूडियो में जाकर देखने लगे।

कानजी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा, मदन अँधेरे में फ्रेंच डॉक्टर का वेश बनाकर आ गया। वह और भी चकराए, जब उन्होंने उसे डोरा के कमरे का द्वार बहुत धीरे-धीरे खटखटाते सुना।

जब मदन की खट-खट का कोई असर न हुआ, तो उसने धीरे-धीरे आवाज़ दी—"डोरा !"

डोरा ने जागकर पूछा—"कौन ?"

"धीरे-धीरे बोलो। मैं हूँ मदन ! बड़ा ज़रूरी काम है, द्वार खोलो।"

डोरा उठने लगी।

मदन बोला—"प्रकाश करने की आवश्यकता नहीं। एक बिलकुल नया विचार सूझा है कल तक भूल जाऊँगा।"

डोरा ने द्वार खोलते हुए कहा—"क्या काम है ?"

"परिच्छद के कमरे में चलो। तुम्हारा एक दृश्य लिया जायगा।"

"इस समय ?"

"हाँ, मिनटों में मेक-अप हो जायगा। दासी सो रही है या जागती ?"

"सो रही है। उसे भी उठा लेती हूँ।"

"नहीं-नहीं, उसे रहने दो। चलो।"

दोनो परिच्छद-कक्ष में गए। मदन ने ज्यों ही वहाँ रोशनी की, त्यों ही डोरा के कमरे में पियानो बज उठा।

बाहर चौकीदार "जागते रहो।" कहनेवाला था कि उसकी आँखों में, उसकी समझ के अनुसार, मनुष्य-हीन कक्ष का प्रकाश और उसके कानों में अँधेरे कमरे का बाजा पड़ा। "अरे बाप रे ! भूत ! भूत !" कहते हुए वह बेतहाशा अपने डेरे की ओर भागा!

उसके शब्द सुनकर मदन और डोरा भी बाथ-रूम की तरफ़ भागे। कानजी कंबल ओढ़े बाथ-रूम में आकर उन दोनो का निरीक्षण करने लगे थे। उन दोनो को वहीं भागते आते देखकर वह भी कंबल सँभाल स्टूडियो की ओर लपके।

मदन ने उन्हें उधर भागते हुए देख लिया। अँधेरे में कंबल के कारण वह डरावने दिखाई देने लगे थे। उन्हें देखकर मदन के मुखसे भी अपने-आप निकल पड़ा—"अरे बाप रे!"

डोरा फुर्ती के साथ अपने कमरे में चली गई। उसने अंदर जाकर द्वार बंद कर लिए, और रोशनी की। मदन भी उस कमरे में जाना चाहता था, पर डोरा ने उसे न आने दिया।

पियानो बंद हो गया था, और दासी ने जागकर पूछा—"क्या बात है?"

डोरा बोली—"चुप रहो, बाहर चौकीदार कहता है, भूत उठा है।"

वहाँ से निराश होकर मदन देवता का नाम स्मरण कर स्टूडियो में घुसा, और ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा—"हे भूत! मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास करता हूँ। मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है, मुझे मेरे कमरे में जाने दो।"

कानजी ने बिजली का बटन दबा दिया, और मदन के निकट आकर कहने लगे—"क्यों दोस्त!"

मदन की जान में जान आई, और उसने कहा—"आपने डरा दिया !"

बाहर चौकीदार पाँच-सात मनुष्यों को और इकट्ठा कर शोर मचाने लगा था। कानजी ने उसे आवाज़ देकर कहा—"चुप रहो, हम लोग हैं। व्यर्थ का बवाल न उठाओ।"

चौकीदार अपनी भूल पर पछताने लगा। मदन ने अपने वस्त्र खोल डाले।

कानजी ने कहा—"क्यों हज़रत ! अब बताओ, बात क्या थी ?"

"बात कुछ नहीं। एक आइडिया—एकदम स्पार्क सूझा था, उसी को मैटीरिएलाइज़ करने के विचार से यहाँ आया था।"

"खूब समझता हूँ दोस्त ! अच्छा चलो, सो रहें।"

मदन जाते हुए कहने लगा—"लेकिन यह पियानो कौन बजाता है ?"

कानजी ने कोई उत्तर नहीं दिया। दोनो जाकर सो गए।

दूसरा परिच्छेद

हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर

दूसरे दिन सुबह उठते ही कानजी ने फिर वही बात छेड़कर कहा—"कल रात तुम्हें जो थॉट-वेव प्राप्त हुई, उसका ठीक-ठीक पता तुमने नहीं दिया मदन! तुम्हारे मन में मुझसे छिपाकर रखने के लिये भी कोई स्थान है, इसका मुझे विश्वास होने लगा है।"

"केवल एक ही बात कल कहने से रह गई थी। मुझे सोमनाबुलिज्म-नामक बीमारी भी है। इस बीमारी में मनुष्य की चेतना अर्द्ध-जाग्रत् रहती है। रात की घटना निश्चय ही सोमनाबुलिज्म से ही आरंभ हुई थी।"—मदन ने कहा।

"ठीक है दोस्त!"

"मुझे भारी खेद है। एक साधारण घटना को आप बहुत बड़ा रूप दे रहे हैं, और न-जाने मेरे विरुद्ध अपने मन में क्या-क्या नहीं सोच रहे हैं? मदन इतना बुरा नहीं है कानजी!"

"कितना?"

"जितना आप सोचते हैं।"

"मैं कुछ नहीं सोचता। अच्छा, यह तो बताओ, वह कल रातवाली विचार की लहर आज कार्य में बदलेगी या नहीं ?"

"आप तो हँसी करते हैं कानजी ! मैंने अपनी आँखों के आगे बड़ा स्पष्ट चित्र देखा था, बिलकुल डिवाइन ! उसे सपना कदापि न कहूँगा। इसी मैटीरियल प्लेन पर देखा था कानजी ! रात को फिर भी बहुत कुछ याद था, इस समय तो सब-का-सब भूला गया है। अब उसका ध्यान ही छोड़िए। फ़िल्म बहुत जल्द पूरी कर डालनी है, नहीं तो क्रिसमस के सीज़न तक हम उसे मार्केट में न रख सकेंगे।"

"देर तुम्हारे ही हाथ की है।"

"बस, अब मुझे केवल अपना ही कैरेक्टर तो और शामिल कर लेना है। कहानी सोच ली है।"

"क्या सोची ?"

"सुनिए। जन्म-भूमि भारतवर्ष में हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर के कुछ दिन दिखाए जायँगे।"

"लेकिन यह कैरेक्टर तुमने बड़ी देर में इंट्रोड्यूस किया ?"

"कुछ देर में नहीं। संपादन करते समय इस टुकड़े को जहाँ चाहेंगे, वहाँ काटकर चिपका देंगे।"

कानजी चुपचाप रहे।

"प्रोफ़ेसर किसी बंदरगाह के कॉलेज में नियुक्त किया जायगा। रिसर्च के लिये कुछ समुद्री जीवों के नमूने एकत्र करने के लिये। वह जल-मार्ग से पृथ्वी की परिक्रमा करना

चाहता है। अमेरिका का एक वर्ल्ड क्रूज़ पृथ्वी के पर्यटकों को लेकर वहाँ आता है। प्रोफ़ेसर जहाज़ पर जाकर उसके अधिकारियों से बर्मा, श्याम, पूर्वी द्वीप-समूह, चीन, जापान और पनामा होते हुए न्यूयॉर्क तक के लिये तय करता है।"

कानजी बोले—"आनंद तो तब होता, जब हम लोग उन्हीं स्थानों में जाकर दृश्य और शब्द अंतिम करते।"

मदन—"पर ऐसा हो कैसे सकता है? यदि हम उसके लिये साधन जुटा भी लें, तो हमारे पास समय कहाँ? किसी तरह इफ़ेक्ट पैदा कर लिया जायगा। कुछ विदेशी फ़िल्मों में से काट-छाप, जोड़-चिपकाकर लोकल कलर दे देंगे।"

कानजी—"अच्छा, फिर क्या होगा?"

मदन—"उधर अमेरिकन धनपति जापानी नर्तकी का मन बहलाने के लिये उसे साथ लेकर हवाई जहाज़ में पृथ्वी की परिक्रमा करने की तैयारियाँ करता है।"

कानजी—"फिर हवाई जहाज़ किराए पर लेना होगा क्या?"

मदन—"अब कोई आवश्यकता नहीं। मैंने पहले ही इस बात का ध्यान रख आपके और डोरा के दृश्य ले रक्खे हैं। वहीं से लेकर कुछ टुकड़े यहाँ चिपका देंगे।"

कानजी—"अच्छा, फिर?"

मदन—"प्रोफ़ेसर अपने निरीक्षण नोट करता हुआ जाता है। क्रमशः उसका जहाज़ हवाई-द्वीप में पहुँचता है।"

कानजी—"हवाई-द्वीप कहाँ है?"

मदन—"उत्तरी अमेरिका के पश्चिम में। यह प्रशांत महासागर के स्वर्ग के नाम से प्रसिद्ध है। द्वीप-वासियों के नृत्य का दृश्य दे देने से बड़ा सुंदर स्थानीय रंग आ जायगा।'

कानजी—"हमारी फ़िल्म की भौगोलिक महत्ता भी कुछ कम न रहेगी, आगे।"

मदन—"बस, इसी प्रकार शेष कहानी शूटिंग करते-करते बना ली जायगी।"

कानजी—'फ़िल्म कहाँ ख़त्म होगी?"

मदन—"इंटर-मैरेज उसका नाम है, वहीं समाप्त होगी।"

कानजी—"विवाह किसके साथ होगा?"

मदन—'मैं आपसे कह चुका हूँ न? हिंदुस्थानी प्रोफ़ेसर से होगा।"

कानजी—"नहीं, यह बात ठीक नहीं।"

मदन—"फिर ठीक क्या है?"

कानजी—"अमेरिकन धनपति के साथ उसका विवाह करो।"

मदन—"अमेरिकन धनपति हवाई जहाज़ के एक्सीडेंट में मार डाला जायगा।"

कानजी—"उसे इस प्रकार बेमौत मार डालने से तुम्हें लाभ?"

कानजी—"कहानी में एक क्लामेइक्स पेदा होगा।"

कानजी—"तुम्हारा क्लाइमेक्स जाय चूल्हे में। जापानी नर्तकी की शादी होगी अमेरिकन से।"

मदन—"देखिए, आप कैपीटेलिस्ट हैं। जैसा चाहें वैसा करा सकते हैं। लेकिन कहना मानिए, फ़िल्म का सत्यानास न कीजिए। पहली फ़िल्म है, इस बात को याद रखिए। हिंदुस्थान की फ़िल्म है, अगर आपने हिंदुस्थानी का गौरव न बढ़ाया, तो कोई पूछेगा भी नहीं।"

कानजी—"तुम तो बड़े इंटरनेशनल बनते थे, आज तुम्हारी वह इंटरनेशनेलिटी कहाँ गई?"

मदन—"आप मालिक हैं, जी चाहे, सो कीजिए।"

दिन-भर शूटिंग हुई। संध्या-समय डोरा दासी-सहित घर को चली।

रबिन को उस दिन तक यह पक्का विश्वास था कि निश्चय ही कंपनीवाले मेरे पास आकर मुझे बुला ले जायँगे। लेकिन जब उसने सुना कि मदन ने उसका पार्ट समाप्त कर दिया है, तब वह बिलकुल निराश हो गया। मन में कहने लगा—"कदाचित् कंपनीवालों से बिगाड़ कर मैंने भारी भूल की। उन्होंने मेरा कोई भी अपमान नहीं किया था। अब क्या हो सकता है?"

अचानक उसकी दृष्टि मेज़ पर रक्खी हुई डोरा की फ़ोटो पर गई। उसने उसे उठाया, रख दिया। फिर उठाया, कुछ देर तक उसे देखता रहा। जेब से रूमाल निकालकर उस पर जमी हुई धूल झाड़ दी। फिर बड़े यत्न के साथ तसवीर उसी स्थान पर रख दी।

उसने उठकर, द्वार बंद कर चिटखनी चढ़ाई। फिर संदूक़

खोलकर एक चिट्ठियों की फ़ाइल निकाली। उसने उसे मेज़ पर रक्खा, और मन में कहने लगा—"ये सब उसी के पत्र हैं। यद्यपि वह बात करने में इतनी चतुर नहीं, लेकिन लेख में अपने भाव प्रकट करने में अच्छे-अच्छे उसकी बराबरी नहीं कर सकते!"

रबिन ने समय—क्रमानुसार उन चिट्ठियों को बड़ी अच्छी तरह फ़ाइल कर रक्खा था। वह डोरा का पहला पत्र पढ़ने लगा—

"प्रिय मिस्टर रबिन,

आप अब बिलकुल अच्छे हैं, यह समाचार देनेवाला आपका यह पत्र मुझे बड़ा ही प्रिय प्रतीत होता है। आप शीघ्र ही यहाँ वापस आ जायँगे, यह पढ़कर और भी प्रसन्नता हुई।

आपने एक दिन कहा था, समुद्र-तट पर जो पहली सीपी दिखाई दे, वह जिसका नाम लेकर सोते-समय सिरहाने रख ली जायगी, वह अवश्य स्वप्न में दिखाई देगा। मैंने कई बार इसकी परीक्षा की, और किसी दिन भी इसे सच नहीं पाया। अब समझ में आता है, आपने मुझे अच्छा मूर्ख बनाया।

पिताजी की सुकामनाओं के साथ।

आपकी प्रिय मित्र—

डोरा।

पुनश्च—

अधिक आपका पत्र पाने पर।

डो०'

—मैंने जब उससे पूछा कि तुमने सोते-समय स्वप्न में किसे देखने की इच्छा की ? उसने इसका उत्तर कभी नहीं दिया। कैसे सुंदर थे वे दिन ! जीवन में तब यह कटुता न थी।"

रबिन ने फिर बीच का एक और पत्र निकालकर पढ़ा—

"प्रिय रबिन,

तुमने फिर पूछा है, कोई किसी की चिंता क्यों करता है ? यही प्रश्न मेरे मन में भी है। मैं भी निरंतर यही सोचती हूँ, इस स्वार्थ-भरे जगत् में क्यों एक दूसरे को याद करता है। वह नहीं आवेगा, यह अच्छी तरह जानकर भी क्यों एक दूसरे की प्रतीक्षा करता है। तुम्हीं उत्तर दो।

कल सिनेमा जाने का निश्चय था, आप नहीं आए। आज मिलने पर आप एक नया बहाना बना देंगे और कदाचित् उसका विश्वास करने के लिये आपको शहर-भर में मुझसे अधिक सीधी दूसरी न मिलेगी।

विशेष शाम को मिलने पर।

तुम्हारी प्रिय—

डोरा।"

रबिन ने एक दीर्घ श्वास लेकर कहा—"सिनेमा ! सिनेमा देखता हूँ, इस सिनेमा की जड़ बड़ी गहरी धसी हुई है।"

उसने एक पत्र और निकालकर उसे बीच से पढ़ा—

"...विधाता ने पुष्प को इतना सुंदर क्यों बनाया ? वह

लोग शांति से मान गए, तो ठीक ही है, नहीं तो मैं पुलिस की सहायता लूँगा।"

रबिन कुछ उनकी ओर आकृष्ट हुआ, बोला—"जब मैंने आपसे कहा, वे लोग धूर्त हैं, तब आपने मेरी बात ही नहीं सुनी।"

"अवश्य ही भूल हुई। लेकिन बेटा मैं उनसे डरा नहीं। तुम जाओ, वह तुम्हारा कहना मान लेगी। उन लोगों से बहुत अधिक बातें करने की भी आवश्यकता नहीं। तुम्हारा क्रोध भयंकर है, देखना, कहीं जोश में आकर हाथ-पैर न चला देना। वहाँ वे सब लोग एक गुट के हुए, तुम्हारी कौन मदद करेगा। कहीं तुम्हारे ठौर कुठौर मार देंगे, तो—"

रबिन ने उत्तेजित होकर कहा—"रबिन क्या मिट्टी का पुतला है!"

"तुम जा रहे हो न?"

"हाँ।" कहकह रबिन ने नौकर से सड़क पर साइकिल ले जाने को कहा।

डोरा के पिता ने कहा—"देखना बेटा, सावधानी के साथ।"

रबिन स्टूडियो चला, और डोरा के पिता अपनी दूकान।

स्टूडियो के बाहरी फाटक पर पहुँचकर ज्यों ही रबिन ने उसके अंदर प्रवेश करना चाहा, त्यों ही चौकीदार ने उसका मार्ग रोककर कहा—"कहाँ? पास है?"

"चुप रहो। नए ही नौकरी पर आए हो, इसी से मुझे नहीं जानते। हटो।"

"नहीं, बाबूजी, मुझे किसी को भी विना पास अंदर न जाने देने की कठोर आज्ञा मिली है। मैं ग़रीब आदमी हूँ, मेरी रोटी, मेरी!—"

एक परिचित ऐक्टर को आता हुआ देखकर रबिन ठहर गया। ऐक्टर के निकट आने पर रबिन ने उससे पूछा—"डोरा कहाँ है?"

"वह तो गई। पंद्रह मिनट से अधिक हो गए होंगे।" रबिन निराश होकर लौट गया।

पाँचवाँ परिच्छेद

संपादन

डोरा के पिता ने होटल से लौटकर देखा, डोरा दासी को लेकर स्टूडियो से वापस आ गई थी। उन्होंने चुप रहकर अपना क्रोध प्रकट किया, और मन में सोचने लगे—"रबिन को स्टूडियो भेजकर व्यर्थ ही हैरान किया!"

पिता के नेत्रों में तीक्ष्णता का आभास पाकर डोरा वहाँ से चली गई।

कुछ देर में रबिन ने आकर पूछा—"डोरा यहाँ आ गई है न?"

डोरा के पिता ने उत्तर दिया—"हाँ, अभी। तुम्हें बड़ा कष्ट हुआ। बैठो।"

रबिन कुरसी पर बैठ गया।

पिता ने कुछ मंद स्वर में कहा—"तुम उसे समझाकर ठीक करो।"

रबिन नीरव रहा।

पिता ने फिर कहा—"मैं ज़रा भी नहीं चाहता कि वह कल से कंपनी जाय।"

रबिन अपने मन में कहने लगा—"अब आई है इनकी बुद्धि ठिकाने।"

डोरा के पिता बोले—"तुम्हारे चुप रह जाने से अब काम बिगड़ जायगा रबिन! वह सरलता से मान जानेवाली नहीं। उसे अपने साथ होटल ले जाओ, और कौशल-पूर्वक अपने पक्ष में करो।"

रबिन बग़लें झाँकने लगा।

डोरा के पिता अंदर की ओर जाते हुए कहने लगे—"तम यहीं बैठो, मैं उसे तुम्हारे पास भेजता हूँ।"

रबिन अपने को बड़ी आफ़त में फँसा समझने लगा। डोरा के विरह ने उसके मन में उसके प्रति फिर प्रेम उपजा दिया था। पर उसने अपनी अँगूठी ले ली थी, इससे वह इस सोच-विचार में पड़ गया कि डोरा के आ जाने पर उससे किस प्रकार बातें आरंभ करूँगा।

डोरा के निकट जाकर उसके पिता ने अपना क्रोध छिपा लिया, और स्नेह-कोमल स्वर में बोले—"डोरा!"

"हाँ पिताजी!" डोरा भी विनम्र उच्चारण में बोली।

"रबिन तुम्हारी प्रतीक्षा के साथ दूकान में बैठा है। कदाचित् किसी आवश्यक काम से आया है। उसके पास जाओ"—कहकर पिता ने डोरा की ओर देखा।

"लेकिन पिताजी—"

"नहीं, मैं कुछ भी न सुनूँगा। जाओ, रबिन बड़ा कुशल

और होशियार लड़का है। उससे मनोमालिन्य रखना उचित नहीं। वह तुम्हें बुला रहा है।"

डोरा ने अपने में सोचा—"बुला रहे हैं! जान पड़ता है, उन्हें अपने किए पर पछतावा हुआ है।"

डोरा बड़े सुंदर स्वभाव की लड़की थी। वह इस बात को भूल गई कि रबिन ने दी हुई अँगूठी वापस लेकर उसका अपमान किया था। वह रबिन के पास जाना निश्चित करने लगी।

पिता बोले—"क्या सोचने लगी हो? जाती क्यों नहीं?"

"जाती हूँ।"कहकर डोरा दूकान की ओर बढ़ा।

रबिन का हृदय अधिक जोर से धड़कने लगा था। उसने मेज़ पर रक्खा हुआ दैनिक पत्र उठा लिया, और उसके पन्ने उलटने लगा। उसके कान उस मार्ग पर जमे हुए थे, जहाँ से डोरा दूकान में आ रही थी।

अचानक रबिन ने अपने मन में कहा—"उसी की आहट है।"

वह और भी सँभलकर बैठ गया। बड़ी एकाग्रता से समाचार-पत्र पढ़ने लगा। डोरा ने सावधानी से दूकान में प्रवेश किया। उसने रबिन को पढ़ने में लीन देखकर अपने आने को और भी सजीव किया। यह निष्फल हुआ। रबिन ने उसकी ओर दृष्टि न की। उसके निकट कुछ दूर तक जाकर डोरा ने अपनी गति फिरा दी, और दूकान के एक

कारीगर की ओर दृष्टिकर उच्च स्वर में पूछा—"कितने बज गए ?"

कारीगर ने घड़ी देखकर समय बताया। डोरा ने रबिन की पीठ पर कहा—"बड़ी देर हो गई !"

फिर भी रबिन ने उधर न देखा। डोरा लौट चली, और मन में कहने लगी—"मुझे पहले बोलने की क्या पड़ी है !"

अचानक रबिन ने पुकारा—"डोरा !"

डोरा ने जहाँ पुकार सुनी, वहीं रुक गई, पर पीठ नहीं फिराई।

रबिन ने फिर कहा—"यहाँ आओ डोरा !"

स्नेह-भरा संबोधन उसे रबिन के पास खींच ले गया। वह रबिन के निकट जाकर खड़ी हो गई। उसने कुछ बोलने का परिश्रम किया, पर मुख में ताले पड़ गए। आँखें नीची कर मेज के किनारे पर उँगली से रेखाएँ खींचने लगी। उसका हृदय स्पंदित था।

रबिन ने उसका हाथ पकड़ लिया, और उसे धीरे-धीरे दबा कर कहा—"डोरा !"

"हाँ, कहो न ? क्या काम है ?"

"तुम इतनी कठोर हो ?"

"भगवान् जानते हैं।"

"रबिन ने उठकर कहा—चलो, होटल चलो। तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

"चलिए।"

दोनो होटल की ओर चले। मार्ग में कोई कुछ न बोला। अपने कमरे में पहुँचकर रबिन ने कहा—"बैठो डोरा!"

बड़े संकोच के साथ वह कुरसी पर बैठी।

रबिन ने कहा—"डोरा, पिता की आज्ञा संसार में बहुत बड़ी वस्तु है। वह भाग्य से ही मिलती है। रबिन अभागा है, क्योंकि उसे माता-पिता का सुख नहीं मिला!"

"मै यह बात मानती हूँ।"

"तो मैं समझता हूँ, तुमने कल से स्टूडियो न जाने का निश्चय कर लिया है?"

रबिन आगे भी कुछ और कहना चाहता था, पर डोरा बीच ही में कहने लगी—"लेकिन फ़िल्म प्रायः समाप्त है। अब इस बात को सोचना सरासर मूर्खता है।"

रबिन गहरी निराशा में डूब गया। डोरा से ऐसा उत्तर पाने पर उसके मन में बड़ा क्रोध उपजा। उस सबको छिपा और दबाकर उसने कहा—"डोरा!"

"हाँ।"

"तुम्हें न-जाने कब से प्यार करता चला आ रहा हूँ। वह अवधि अनेक जन्मों-सी प्रतीत होती है।"

डोरा ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा—"हाँऽऽ क्यों नहीं?"

"तुम मेरे मन की बात नहीं जानतीं!"

"कोई नहीं जान सकता। एक बात अवश्य कहूँगी।"—इतना ही कहकर डोरा रुक गई।

"हाँ-हाँ, कहो।"

"नहीं, न कहूँगी।"

रबिन ने उसका हाथ पकड़कर स्नेह-आग्रह किया—"सच बात कहने के लिये किसी का क्या डर डोरा! कहो, अब तुम्हें कहना ही पड़ेगा।"

डोरा ने अपने दाहने हाथ की अनामिका दिखाई। उसमें उसने अनेक दिन तक रबिन की प्रणय-अँगूठी पहनी थी।

रबिन ने समझकर भी न समझने का भाव दिखाया, और कहा—"तुम्हें मेरी शपथ डोरा! कहो न?"

"यदि शब्दों ही में सुनना चाहते हो, तो सुनो रबिन! मैं कहूँगी, बहुत दिन मेरी यह उँगली तुम्हारे प्रेम की स्मृति से घिरी थी।"

रबिन ने वह हाथ खींचकर अपने मुख की ओर बढ़ाना चाहा, पर डोरा ने उसे छुड़ा लिया। रबिन ने मलिन होकर कहा—"तो क्या डोरा! तुम समझती हो, वह अँगूठी अब किसी और की उँगली पर है?"

"ऐसा न भी समझूँ, तो होता क्या है?"

रबिन ने लंबी साँस लेकर छोड़ी और कहा—डोरा, यदि तुम मेरे विचारों को पढ़ सकतीं!"

"रबिन, अब कुछ नहीं हो सकता। तुम जो भी प्रयास

करोगे, वह हमारे प्रीति के डोरे में ग्रंथि लगाए विना उसे जोड़ नहीं सकता।"

"भगवान् साक्षी है! डोरा तुम्हारा यह मधुर मुख एक क्षण के लिये भी मैंने नहीं भुलाया।"—कहकर रबिन ने इंगेजमेंट रिंग निकाली।

डोरा ने कहा—"लेकिन कभी-कभी बहुत ही छोटी घटना हमारे हृदयों में बड़ा अंतर पैदा कर देती है।"

"यह अँगूठी तुमसे ले ली गई थी, पर तुम्हारे प्रति घृणा प्रकट करने के लिये कदापि नहीं।"

"फिर?"

"कुछ अंश तक क्रोध हो सकता है।"

"क्रोध से घृणा की उत्पत्ति होने में क्या देर लगती है?"

"अच्छा, क्षमा करो।"—कहकर रबिन ने डोरा का हाथ पकड़ लिया।

डोरा ने मुँह फेर लिया, और नीरव रही।

रबिन ने उसकी उँगली में अँगूठी पहना दी। डोरा छिपे-छिपे अपनी आँखों में ब्लॉटिंग पेपर की भाँति रूमाल को छाप रही थी। अँगूठी पहनाकर रबिन ने उसकी कोमल-स्वच्छ हथेली में अपने अधर स्थापित कर दिए। डोरा ने अपना हाथ खींच लिया।

रबिन ने उसकी ओर मुँह कर कहा—"कहो, क्षमा कर दिया।"

संकोच-क्षुब्ध स्वर में उसने कहा—"देखती हूँ, तुमने मेरे निकट कोई अपराध नहीं किया"

"डोरा! डोरा तुम स्वर्ग-विच्युत देवी हो। तुम्हारी उपासना कर मैं भी धन्य हुआ हूँ।"

डोरा के मुख पर बड़ा विरस भाव उदय हुआ। उससे जान पड़ा, रबिन की प्रशंसा उसे प्रसन्न नहीं कर रही थी।

उसने फिर कहा—"तुम्हारे वियोग की अवधि मैंने किस प्रकार बिताई, क्या कहकर प्रकट करूँ?"

डोरा—"यह सब रहने दो। मुझसे काम क्या है?"

रबिन—"कहूँगा, जरा विश्राम लो। इस कुरसी पर बैठो। क्या तुम्हें मेरा साथ अच्छा नहीं ज्ञात होता?"

डोरा लजाकर चुपचाप कुरसी पर बैठ गई।

रबिन ने कहा—"डोरा, उस अवधि में तुमने लौटकर भी तो नहीं देखा, रबिन की क्या दशा है।"

"देखती क्या? तुमने साफ़ ही नहीं कह दिया था कि यहाँ न आना।"

"पर मेरा अर्थ यह नहीं था।"

"मैं क्या जानती थी कि तुम कहते कुछ हो, और उसका अर्थ होता कुछ और है।"

"क्यों डोरा, तुम्हारे मन में मेरे पास आने की इच्छा क्या सचमुच उपजी ही नहीं?"

डोरा के मुख पर फिर बड़ा कष्टकर भाव दिखाई दिया। बात टालकर बोली - "मतलब की बात कहो न।"

"चाय पियोगी ?"—कहकर रबिन ने नौकर को चाय लाने की आज्ञा दी।

नौकर के चाय लाने तक दोनो नीरव रहे। रबिन अपने मन में सोच रहा था कि क्या कहकर फिर कंपनी की बात छेड़ूँ। दोनो चाय पीने लगे। रबिन ने आरंभ किया—"स्थिति बड़ी गंभीर हो गई है डोरा !"

"किस प्रकार ?"

"फ़िल्म-कंपनी के तमाम स्विच इस समय तुम्हारे हाथ में हैं। तुम इतनी डरपोक हो गई हो। ऐसे काम न चलेगा।"

डोरा उत्सुक होकर सुनने लगी।

रबिन कहता जा रहा था—"मेरी कदापि ऐसी इच्छा नहीं कि फ़िल्म्-कंपनी की पहली तसवीर मार्केट में न आवे। मुझे अब तुम उस फ़िल्म में काम न करो, इसमें भी कोई आपत्ति नहीं।"

डोरा ने धीरज की साँस लेकर कहा—"फिर झगड़ा ही और कौन-सा रह जाता है ?"

रबिन—"झगड़ा रह क्यों नहीं जाता ? रबिन तुम्हारा मित्र है। उसके अपमान को तुम अपना अपमान न समझोगी क्या ? बड़े आग्रह से वे लोग मुझे अपनी कंपनी में ले गए, और बड़े परिश्रम से मैंने उनका काम किया। उसका फल मुझे

यह मिला कि आज वे जगह-जगह मुझे बदनाम करते फिरते हैं। कहते हैं, रबिन के बिना भी कंपनी चल सकती है मेरी टेक न रक्खोगी ? क्या सारे शहर में मुझे लज्जित देखने में तुम्हें सुख मिलता है ?"

डोरा—"पर तुमने कंपनी स्वयं ही छोड़ दी थी न ?"

रबिन—"हाँ, इस विश्वास पर कि तुम मेरा साथ दोगी। लेकिन अब भी कुछ देर नहीं हुई। रबिन का कहना मानकर कंपनी के सूत्र अपने हाथ में लो, और यह सिद्ध कर दो कि रबिन के बिना कंपनी नहीं चल सकती, नहीं चल सकती।"

डोरा—"मैं कैसे कंपनी के सूत्र अपने हाथ में ले सकती हूँ ?"

रबिन—"मेरी बात मानो, अपने स्वरूप को पहचानो। कल से जब तक वे लोग रबिन से क्षमा न माँग लें, तब तक कंपनी न जाओ। उनका मतलब है। वे आकर तुम्हारे द्वार पर नाक घिसेंगे।"

डोरा—"यदि वे न आए, तो।"

रबिन—"आवेंगे कैसे नहीं ? अभी बहुत शूटिंग बाक़ी है।"

डोरा—यदि उन्होंने मुझे भी डॉक्टर की भाँति मार दिया, तो ?"

रबिन—"यह असंभव के बिलकुल निकट की बात है। ऐसी

हो नहीं सकता। एक बार दृढ़ निश्चय करो। प्रतिज्ञा करो, कल कंपनी न जाकर सुबह दस बजे यहाँ होटल आ जाओगी। फिर देखना तमाशा। मदन और कानजी दिन-भर यहीं के चक्कर काटते रहेंगे। मेरी बात मानो डोरा! इसमें विचार करने के लियें अब कोई जगह नहीं।"

डोरा—"उनसे क्या कहूँगी?"

रबिन—"उनसे कुछ भी कह दिया जायगा। तुम्हारा सामना ही न पड़ेगा। तुम इस कमरे में बैठी हुई पुस्तक और अखबार पढ़ती रहोगी। मैं देखूँगा, वह अभिमानी किस तरह फिर मेरे होटल की सीढ़ियों पर आरोहण करता है। मैं उसकी ओर पीठ फेर लूँगा। देखूँ, उसे किस तरह मुझसे बोलने का साहस होता है।"

डोरा चुपचाप अथाह विचार के सागर में तैर रही थी। उसका ओर-छोर कहीं कुछ भी न था। चारों ओर केवल पानी! पानी! पानी!

रबिन ने अपनी जेब से लाल अक्षरों में 'ज़हर' का लेबल लगी हुई शीशी निकालकर कहा—"मेरी बात मान लेने का अभी विश्वास दिलाओ डोरा! नहीं तो यह देखो, यह पोटेशियम साइनाइड की शीशी है। अगर कल सुबह तुमने गोल्डन पाम्स की ओर पैर बढ़ाए, तो रबिन इस शीशी का विष खाकर अपने प्राण त्याग देगा।"

डोरा काँप उठी। उसका रबिन पर अनुराग था। उसने

अपने को रबिन के कठोर बंधन में पाया। वह विकल हो उठी। एक ओर तारिका थी, और एक ओर प्रेम। किससे छोड़कर किसे ग्रहण करूँ. सोचते-सोचते डोरा उदास हो गई।

रबिन ने कहा—"कहो, तैयार हो ?"

"हाँ।"

"किसलिये ?"

"कल स्टूडियो न जाऊँगी।"

"और परसों भी नहीं, जब तक मैं अनुमति न दूँ, तब तक नहीं।"

डोरा कुछ न बोली। रबिन ने शीशी मेज पर रख दी, और उठते हुए कहने लगा—"कल स्टूडियो न जाओगी, प्रतिज्ञा करती हो न ?"

"हाँ।"

रबिन ने डोरा से हाथ मिलाया। वह भी उठ खड़ी हुई।

रबिन ने कहा—"चलो, पिताजी को यह समाचार सुनाऊँ, जिससे वह तुम पर प्रसन्न हों।"

दोनो कमरे के बाहर आए। रबिन अपना विजय से उन्नत मस्तक लिए हुए जा रहा था। सीढ़ियों पर हठात् डोरा रुककर कुछ सोचने लगी।

रबिन ने कहा—"क्या बात है ?"

"बटुआ तुम्हारे कमरे में भूल आई हूँ, जाकर ले आती हूँ।"—कहकर डोरा रबिन के कमरे की ओर दौड़ी।

रबिन वहीं खड़ा रहा।

डोरा ने कमरे में पहुँचकर वह शीशी उठा ली, और उसे अपने बटुए में रखकर रबिन के पास चली आई।

रबिन—"मिला ?"

डोरा—"हाँ।"

चौथा परिच्छेद

द्वंद्व

रबिन और डोरा दोनो ईस्टर्न शू-फ़ैक्टरी में आए। पिता को देखकर डोरा के पैर कुछ पिछड़ने लगे थे, पर रबिन उसे साहस देता हुआ पिता के निकट गया। डोरा एक ओर मुँह कर खड़ी हो गई।

पिताजी ने कहा—"आओ रबिन !"

रबिन बोला—"डोरा ने मेरी बात मान ली है।"

पिताजी—"बड़ी प्रसन्नता की बात है।"

डोरा अपने मन में कह रही थी—"बात कहाँ मान ली ? केवल कल ही तो स्टूडियो न जाने को कहा है। कल का दिन किसी प्रकार टाल दूँगी। सिर के दर्द का बहाना कर लूँगी। जुलाब की टिकिया खा लूँगी।"

रबिन—"हाँ, अगर डोरा उसी दिन हमारी बात मान लेती, तो अब तक कानजी सौ बार हमारी ख़ुशामद करने आ गए होते। अब भी कोई हानि नहीं।"

डोरा धीरे-धीरे दूकान के दूसरे भाग की ओर चली गई थी।

पिताजी कहने लगे—"तुमने सुगमता से इसे राज़ी कर लिया।"

'बड़ी सावधानी से काम लेने की ज़रूरत है। अभी बिलकुल राज़ी नहीं हुई। केवल कल के दिन स्टूडियो न जाने का वादा किया है। आप इससे कुछ कहिए-सुनिएगा नहीं।"

"केवल कल के दिन न जाने से क्या हो जायगा?"

"धीरे-धीरे ही सब कुछ होगा। आप कुछ भी न कहें, इतनी प्रार्थना करता हूँ।"

"न कहूँगा।"

रबिन ने आवाज़ दी—"डोरा!"

डोरा धीर गति से वहाँ चली आई। पिताजी ने उसके आने से पहले ही कुछ गर्दन घुमा ली थी।

डोरा—"रबिन तुमने मुझे पुकारा?"

रबिन—"हाँ।"

डोरा—"क्या कहते हो?"

रबिन—"तुम कल गोल्डन पाम्स न जाओगी।"

डोरा"—नहीं।"

रबिन—"कानजी के आने से पहले ही सुबह सात बजे होटल आ जाओगी। चाय भी वहीं पियोगी, और खाना भी वहीं।"

डोरा—"अच्छी बात है।"

रबिन ने पिताजी के सामने जाकर कहा—"कल सुबह जब कानजी डोरा को लेने आवें, तो आप कृपा कर उनसे कह दीजिएगा कि रबिन के होटल में गई है।"

पिताजी ने सिर हिलाकर अपनी सम्मति प्रकट की।

रबिन चब उनसे बिदा माँगकर चला गया, तब पिताजी ने डोरा की ओर दृष्टि की। वह उसी जगह प्रतिमा की भाँति अचल खड़ी थी।

पिताजी को कहना पड़ा—"डोरा! कुरसी पर बैठ जाओ, बड़ी देर से खड़ी हो।"

डोरा ने मंद स्वर में कहा—"हाँ, पिताजी!"

उसने कुरसी पर बैठकर समाचार-पत्र उठा लिया।

पिताजी बोले—"अपने अभिभावकों की उपेक्षा कर मनमानी करना उचित नहीं। लोग नाम रखने लगते हैं। मैं तुमसे प्रसन्न हूँ, तुम समझदार लड़की हो।"

डोरा उस समय अपने मन में सोचन लगी थी—"हे भगवान्! परसों ये लोग मुझे न जाने किस जाल में जकड़ दें। लक्षण ठीक नहीं जान पड़ते।"

पिताजी की दूकान में कई लोग आ गए। डोरा उन लोगों के लिये स्थान करने के लिये कुरसी छोड़कर उठ खड़ी हुई, और धीरे-धीरे वहाँ से चली गई।

वहाँ से आने पर डोरा को बटुए में रक्खी हुई शीशी की याद आई। उसने बटुआ खोलकर उसे देख लिया।

संध्या पूर्ण रूप से छा गई थी। सड़कों और दूकानों में बिजली की रोशनी जगमगाने लगी थी। डोरा दूकान से निकलकर धीरे-धीरे सड़क पर चली गई। उसने बटुए से शीशी निकाली, और उसके लेबल के लाल अक्षरों को फिर एक बार पढ़ा—"ज़हर !"

डोरा पास ही के डस्ट-बिन के निकट चली गई। उसने इधर-उधर देखकर शीशी का काग खोला, सावधानी से उसे मुँह फेरकर कूड़े के ऊपर उलट दिया, और शीशी भी उसी में फेंक घर चली गई।

दी सैटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी के एक क्लब में उस समय कानजी और मदन चाय पी रहे थे।

कानजी के मुख पर संतोष न था। उन्होंने तीखे स्वर में मदन से कहा—"लेकिन तुमने डोरा को जाने क्यों दिया ?"

"मैं विवश था।"

"विवश कैसे थे ? क्या तुम कंपनी के डाइरेक्टर नहीं हो ? तुमने अधिकारों का दुरुपयोग किया, और मालिक को हानि पहुँचाई। आज रात को बहुत कुछ शूटिंग हो सकती थी।"

"क्या ख़ाक होती, सेट् कहाँ तैयार है ?"

"झूठा बहाना।"

"मिस्त्री और पेंटर को बुलाकर पूछ लीजिए।"

"डोरा की बात टाल नहीं सकते। उसने कुछ ऐसी लकड़ी

तुम्हारे सिर पर घुमाई है। क्यों डाइरेक्टर साहब !"—कानजी ने कुछ अगंभीर होकर कहा।

मदन ने उस परिहास को सीधा नहीं लिया। वह बिगड़ उठा, और कहने लगा—"वह क्या लकड़ी घुमावेगी ? मदन ने क्या कभी ऐक्ट्रसें नहीं देखी हैं। आप भी क्या बातें कहते हैं। मैं आपसे कई बार कह चुका हूँ, अगर मुझसे काम नहीं सँभलता, तो—"

कानजी ने बीच ही में कहा—"मदन, तुम्हें अचानक क्रोध चढ़ आया। मेरा कहने का मतलब है, फ़िल्म को यथासंभव शीघ्र निकाल डालना इस समय हमारा मुख्य कर्तव्य है।"

"सुबह से आधी रात तक कमर सीधी नहीं करने पाता। आपने कब मुझे सोता हुआ पाया, जो आप कर्तव्य का ज्ञान सिखाते हैं। मैंने डोरा से बार-बार कहा कि आज न जाओ।"

"फिर उसने तुम्हारा कहना माना क्यों नहीं ? क्या इससे तुम्हारी कमज़ोरी साबित नहीं होती ?"

"कभी नहीं। डाइरेक्टर को चारो दिशाओं की तरफ़ देख-कर चलना होता है। डोरा मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर नहीं गई। वह कहने लगी कि उसके पिता उससे बहुत रुष्ट हैं। यदि आज वह न गई, तो कल से स्टूडियो आ सकेगी या नहीं, इसमें संदेह है। इसी से मैंने उसे जाने दिया।"—मदन ने कुछ शीतल पड़कर उत्तर दिया।

कानजी ने और भी शांति होकर कहा—"अच्छा, छोड़ो इन

बातों को, कल देखा जायगा। खा-पीकर एक हंड्रेडअप बिलियर्ड का हो जाय। डोरा के बिना आज कोई भी काम नहीं।"

मदन बोला—"काम है कैसे नहीं, सारी फ़िल्म का संपादन करना भी तो मेरे ही सिर पर लदा है।"

"आज की रात में ही थोड़े सब कुछ हो जायगा। फिर उस संपादन में क्या रक्खा है?"

संपादन में रक्खा कैसे नहीं? अगर अच्छा संपादक हो, तो बुरी-से-बुरी फ़िल्म भी सँभाल सकता है, और यदि संपादक ठीक न हो, तो अच्छी-से-अच्छी फ़िल्म भी बदनाम हो सकती है।"

"अच्छा, तुम्हीं जीते सही। पर बहुत दिनों से क्यू छुआ भी नहीं। आज बिलियर्ड खेलने को बड़ा जी कर रहा है।"

मदन का सारा क्रोध उतर गया था। उसे बिलियर्ड का कुछ कम शौक़ न था, कहने लगा—"आप मालिक हैं, जो चाहें, वह हो सकता है।"

खा-पीकर दोनो बिलियर्ड-रूम में गए। अपने-अपने क्यू छाँटकर दोनो मेज़ पर आ डटे। मेज़ की जेबों से गेंद निकाल लाल गेंद अपने स्थान पर रख दी गई।

मदन बोला—"आरंभ कीजिए।"

कानजी—"नहीं, तुम ब्रेक करो।"

मदन बोला—"अच्छा, तो टॉस कर लो। मैंने फ़्लैट लिया।"

कानजी ने मेज़ पर क्यू फेंका, और मदन चिल्लाया—"फ़्लैट !"

फ़्लैट ही आया, और कानजी को ब्रेक करना पड़ा। वह बोले—"अभी आता हूँ।" बाहर जाकर उन्होंने हिप फ़्लास्क निकाला, और उसमें से कुछ पिया। पीकर कमरे में लौट आए। और अपनी बॉल को डी के अंदर रक्खा, क्यू चलाया। खेल आरंभ हो गया।

मदन ने पचीस का ब्रेक बना दिया। और बोर्ड पर अपने पॉइंट मार्क कर दिए। कानजी ने अपनी बारी में ह्वाइट पॉट कर दिया ! मदन बोला—"ब्रेवो !"

कानजी मन-ही-मन कटकर बोले—"सॉरी।"

मदन ने तीस का ब्रेक और बनाकर पचपन पॉइंट बना लिए।

अब कानजी ने ग्यारह का ब्रेक बनाकर बोर्ड में तेरह पर मार्कर रक्खा।

मदन बोला—"ग्यारह पॉइंट आप फ़्लूक से बना गए।"

कानजी—"शट अप बेइमान !"

"सँभलकर मुँह खोलिए। नौकर-मालिक का रिश्ता भूल जाइए। मैंने क्या बेईमानी की ?"

"इस खेल में ही नहीं। फ़िल्म-कंपनी में भी तुम आरंभ से ही मुझे धोखा देते चले आ रहे हो। समझते हो, कानजी तुम्हारे काले कार्यों का परिचय ही नहीं रखता।"

कानजी ने समझा था, इस बात से मदन कुछ लज्जा अनुभव करेगा। परंतु उसने और भी माथा ऊँचा कर कहा—"ख़बरदार! होश में आओ। समझकर मुँह से शब्द निकालो। तुम मालिक हो, तो इससे होता क्या है। आत्मगौरव सबके है।"

"चुप रहो चांडाल! तुम्हारी नस-नस में मेरा नमक भीगा है। तुम्हें मेरे सामने मुँह खोलते लज्जा नहीं मालूम होती!"

"लज्जा मालूम होने को क्या मैंने चोरी की है। लज्जा तुम्हें मालूम नहीं होती।"

"चुप रहो।"—कानजी ने कहा। उनके दोनो पैर लड़खड़ाने लगे थे, पर वह सँभल गए।

"चुप क्यों रहूँ? जब तक मुँह में बोलने की शक्ति है, तुम्हारी टेढ़ी बातों का अवश्य ही सीधा उत्तर दूँगा।"

"मेरी जूठन खानेवाले कुत्ते! तू डोरा को चाहता है?"

"ख़बरदार! तुम बहुत नशे में हो, इसी से मैं अब तक तुम्हें मुआफ़ करता चला जा रहा हूँ, लेकिन अब अधिक नहीं। कुशल चाहते हो, तो चुप रहो।"

"न नशे में हूँ। पहले तो हूँ ही नहीं, अगर हूँ भी, तो गधे! क्या यह सब तूने नहीं सिखाया?"

"क्यों सफ़ेद झूठ बोलता है? तू मेरे साथ परिचित होने से पहले से पीता है।"

"मैं फिर तुझे सचेत करता हूँ, तू चुपचाप में जो कुछ कहता हूँ, उसे सुनता जा। बेइमान! तूने बड़े-बड़े उजले सपने दिखा-

कर हमारा लाखों रुपया इस फ़िल्म-कंपनी के पेट में डाल दिया। उसके मूल धन के वसूल होने की भी कोई आशा नहीं दिखाई देती।"

"बड़े भोले-भाले, दूध-पीते हो न ?"

"तू फिर बोला ? तेरे सिर पर मौत खेलती हुई जान पड़ती है। ज़बान क़ाबू में रख कि जान सलामत रहे।'

"ऐसे मारनेवाले मर गए। किसी कुली या चपरासी को इन धमकियों से डराना।"

"अच्छा ?"—कहकर कानजी को इतना क्रोध चढ़ा कि उन्होंने अपने चारों ओर अँधेरा-ही-अँधेरा देखा।

"हाँ-हाँ मदन परमेश्वर से डरता है। तेरे जैसे गीदड़ों से नहीं।"

कानजी ने मेज़ पर रक्खी हुई सोडे की बोतल उठाई, और मदन के सिर पर दे मारने को बढ़े। मदन ने तुरंत ही पास पड़ी हुई कुरसी उठा ली, कानजी ने ज्यों ही सोडे की बोतल मदन के सिर पर मारनी चाही, मदन ने कुरसी से आत्म-रक्षा ही नहीं की, बल्कि कुरसी खींचकर कानजी की तरफ़ बढ़ाई। कुरसी का पाया कानजी की कलाई में लगा, और सोडे की बोतल उनके हाथ से छूटकर फ़र्श पर जा पड़ी।

कानजी के क्रोध का पारावार न रहा। उन्होंने अपनी जेब से छ चैंबर का भरा रिवालवर निकाला, और कमरे से बाहर जाने के द्वार पर खड़े होकर मदन की ओर निशाना लगाया।

मदन के प्राण सूख गए। उसने कुरसी भूमि पर फेककर दोनो हाथ सिर के ऊपर उठा लिए, लेकिन इसका कानजी पर कुछ भी असर न हुआ। उन्होंने 'धड़ाम' से गोली छोड़ ही तो दी।

मदन भूमि पर गिर पड़ा, और गोली सामने की खिड़की के काँच को चकनाचूर करती हुई बाहर के अंधकार में न-जाने कहाँ चली गई।

यह दृश्य देखकर अब कानजी का नशा उतरा। उनका मुख पीला पड़ गया। उन्होंने काँपते हुए हाथों से रिवालवर छिपा दिया, और साथ ही कमरे की बत्ती बुझा दी।

रात के बारह बज चुके थे। समस्त स्टूडियो दिन-भर के कठिन परिश्रम से गहरी नींद में था। एक-दो रात के चौकीदार कुछ जागते और कुछ सोते हुए पहरा दे रहे थे।

एक चौकीदार ने धड़ाका सुनकर क्लब की ओर आने का साहस किया। उसके आते-आते क्लब के अंदर की रोशनी बुझ गई थी। उसने बाहर खड़े होकर खिड़की के काँच की राह अंदर झाँका।

अन्दर अँधेरे में खड़े हुए कानजी ने कहा—"चौकीदार!"

प्रभु की आवाज़ पहचानकर चौकीदार ने विनत होकर कहा—"जी सरकार!"

'कोई खटका नहीं। सोडे की बोतल से गोली निकल

गई, शायद उसी की आवाज़ तुम्हें इधर खींच लाई। जाओ, अपनी ड्यूटी पर जाओ।"

"जो आज्ञा सरकार!"—कहकर चौकीदार अपने स्थान पर चला गया।

कानजी उस अंधकार में खड़े-खड़े सोचने लगे—"अब क्या किया जाय?"

हठात् उन्होंने निश्चय किया, शहर में अपने घर चल देना चाहिए। वह तुरंत ही बाहर आए, और मोटर पर चढ़ कर स्टूडियो के फाटक पर पहुँचे। वहाँ फिर उन्हें वही चौकीदार मिला।

कानजी ने मोटर रोककर कहा—"चौकीदार! मैं हूँ कानजी! अभी टेलीफ़ोन आया, एक आवश्यक काम से घर जा रहा हूँ। कोई पूछे, तो कह देना, कानजी संध्या-समय ही मकान चले गए थे। समझे न? देखना, भूल न होने पावे।"

"नहीं सरकार!"

दूसरे ही क्षण कानजी अपनी मोटर-सहित छू हो गए।

पाँचवाँ परिच्छेद

अग्नि-कोप

कानजी के शहर जाने के बाद चौकीदारों ने भी अपने सिर का भार हलका पाया, और लंबी तानी।

गोल्डन पाम्स की खास इमारत में उस रात को कोई भी न सोया था। सब लोग कार्टरों में गहरी नींद में पड़े थे।

ढाई बजे रात को एक बढ़ई ने शोर किया—"आग लग गई! आग लग गई।

बढ़ई सग्रहणी का शिकार था। रात को लोटा लेकर जब बाहर आया, तो देखता है सारी इमारत चारो ओर से गगन चुंबी ज्वालाओं में धधक रही है। आग की लपटों से हर अँधेरे कोने में दिन की भाँति प्रकाश फैल गया है।

यह देखकर बढ़ई के होश उड़ गए! लोटा जमीन पर फेंक उसने चारो ओर दौड़कर आवाज़ लगाई—"आग लगी! आग लगी! बचो, बचाओ!"

रात के चौकीदार उसकी आवाज़ सुनकर सबसे पहले जागे, और बढ़ई से तेज़ चाल और ऊँचे स्वर में कहने लगे—

"उठो, जागो ! आग लगी ! जान माल की रक्षा करो ! मालिक का नमक अदा करो !"

बढ़ई कानजी के कमरे की ओर जा रहा था। वह चौकीदार बोला—"उधर कहाँ जा रहे हो ? क्या जान प्यारी नहीं ? छत गिरने ही वाली है।"

"मालिक को न जगाओगे क्या ?"

"मालिक शाम को ही अपनी मोटर पर शहर चले गए।"

"डाइरेक्टर साहब ?"

"अब तक बाहर निकल न आए होंगे क्या ?"

बढ़ई बड़बड़ाने लगा—"बड़े चौकीदार बने हो। सारी कंपनी फुँकवा दी। अब जागे हो।"

चौकीदार—"सोनेवाले की ऐसी-तैसी, कब से चिल्ला रहा हूँ। अभी आधे घंटे के अंदर ही तो यह आग धधक उठी है।"

दूसरा चोकीदार बोला—"चारो ओर से यह आग फैली है। मुझे तो जान पड़ता है, जान-बूझकर लगाई गई है। तमाम स्टूडियो हर तरफ़ से बंद है। मालूम नहीं, ताला कहाँ लगाया गया है।"

तमाम लोग उठकर स्टूडियो के मुख्य द्वार के सामने के मैदान में आकर जमा हो गए। कार्टरों की ओर आग बढ़ जाने की कोई आशंका न थी।

मदन को भीड़ में न पाकर कई लोगों के साथ कैमरामैन और साउंड-रिकॉर्डिस्ट उसके कमरे की ओर दौड़े। ऑफ़िस

की दाहनी ओर ही उसका कमरा था। किसी प्रकार लपटों से अपनी रक्षा कर उन लोगों ने कमरे के अंदर झाँका। कमरे में मदन का पता न था।

कैमरामैन बोला—"आश्चर्य है, फिर वह गए कहाँ?"

साउंड-रिकॉर्डर—"मैं तो समझता हूँ, कानजी की मोटर पर चढ़कर शहर चल दिए होंगे।"

कैमरामैन—"नहीं, चौकीदार कहता है, कानजी अकेले ही गए। मैं तो समझता हूँ, बेचारे इन आग की लपटों में बाहर आने का मार्ग न खोज सके।"

साउंड-रिकॉर्डर—"भगवान् की इच्छा! परंतु यह आग लग कैसे गई? थोड़े-से ही घंटों में कैसे सर्वनाश हो गया!"

"आग का कारण पीछे भी ढूँढ़ लिया जा सकेगा। इस समय के कर्तव्य पर ध्यान देना चाहिए। अब भी बहुत कुछ बचाय जा सकता है।"—कहकर कैमरामैन ऑफ़िस की ओर दौड़ा।

और लोगों ने भी उसका अनुकरण किया।

कैमरामैन बोला—"ऑफ़िस के ताले की चाबी किसके पास है?"

चौकीदार—"सरकार के पास।"

कैमरामैन—"ताला तोड़ डालो।"

एक बढ़ई ने हथियार लाकर ताला तोड़ा। ऑफ़िस का तमाम फ़रनीचर जलने लगा था। कैमरामैन ऑफ़िस के अंदर

कूदकर टेलीफ़ोन उठा लाया। कुशल-पूर्वक बाहर आकर उसने उसे भूमि पर रख दिया। वह यद्यपि जला नहीं, पर बहुत गरम हो गया था। उसके तार भी जलकर टूट गए थे।

कैमरामैन बोला—"टेलीफ़ोन तो मैं ले आया, लेकिन इससे होगा क्या?"

कंपनी का बिजलीवाला कहने लगा—"इसे किसी प्रकार खंभे से जोड़ तो मैं देता हूँ।"

बिजलीवाले ने सीढ़ी लगा किसी प्रकार टेलीफ़ोन के तार खंभे से जोड़ दिए।

कैमरामैन ने टेलीफ़ोन लेकर फ़ायर ब्रिगेड को आग की सूचना दी, पर कोई फल न निकला। कानजी के घर के नंबर पर चिल्लाया, वह भी व्यर्थ हुआ।

साउंड-रिकॉर्डर ने टेलीफ़ोन हाथ में लेकर कुछ श्रम किया। जब वह भी निष्फल हुआ, तो कहने लगा—"आँच से बेकार हो गया है!"

कंपनी के आर्ट-डाइरेक्टर कहने लगे—"चार साइकिलें शहर को दौड़ा दो। अब तक फ़ायर ब्रिगेड आ भी गई होती। व्यर्थ ही समय नष्ट कर दिया। मालिक क्या कहेंगे, दुनिया क्या कहेगी?"

चार मनुष्य साइकिलों पर शहर को दौड़े—दो फ़ायर ब्रिगेड बुलाने और दो मालिकों को यह बुरा समाचार देने।

कैमरामैन बोला—"पेंदर साहब, कुछ होनी ही ऐसी होने

को थी। आग भी लगती है। शीघ्र ही देख ली जाती, और शीघ्र बुझा देने के प्रयत्न किए जाते। अब फ़ायर ब्रिगेड आ जाने से भी क्या हो सकता है? बाहर के कमरों में जब आग ने यह हाल कर दिया, तो अंदर स्टूडियो की न-मालूम क्या दशा होगी।"

पेंटर—"हाँ, वहाँ तो लकड़ी और कपड़े का ही अधिक सामान है। बुरा हुआ। मदनजी का कुछ पता लगा?"

कैमरामैन—"कुछ नहीं। लाचार हैं, कहाँ पता लगावें। आप ही कहिए, जलती हुई इमारत के अंदर घुसने का साहस किसे है?"

पेंटर—"किसी को नहीं। हे भगवान्! कुछ ही देर में क्या-से-क्या हो जाता है!"

साउंड-रिकॉर्डर—"आदमी मदनजी कुछ कड़ुए ज़रूर थे, मगर थे बड़े नेक।"

पेंटर—"अजी, क्या कहना है! लाखों में एक थे। यहाँ कोई उन्हें पहचान नहीं सका। स्वयं भी गए, और अपनी फ़िल्म भी ले गए।"

कैमरामैन—"आग लग जाने का कोई कारण नहीं समझ पड़ता, कोई रहस्य अवश्य है।"

पेंटर—"अजी, रहस्य क्या है। स्टडियो से ही सारी आग फैली है। आग या तो बिजली से लगी, या किसी ने

सिगरेट् सुलगाकर जलती हुई दियासलाई किसी सेट् पर फेंक दी। परंतु कानजी खूब बचे।"

साउंड-रिकॉर्डर—"मैं तो समझता हूँ, यह आग फैली है लएडिटिंग रूम से। एडिटिंग रूम से प्रिंटिंग रूम होती हुई स्टूडियो और फिर वहाँ से सब जगह। सेलूलॉइड ही ने यह सब किया है। स्टूडियो कल मेरे सामने बंद किया गया था। मेरी आँखें फूटी नहीं। मैंने बड़ी सावधानी से चारों ओर देख लिया था।"

पेंटर—"अरे भाई! कहाँ तक कोई देख सकता है। उन अनगिनती सेटों की ओट में न-जाने कहाँ चिनगारी फैल रही थी!"

साउंड-रिकॉर्डर—"कोई बू तो मालूम करता!"

कैमरामैन—"उसका भी ध्यान न रहा होगा। होनी थी!"

साउंड-रिकॉर्डर—"मैं यह बात नहीं मान सकता। कानजी के शहर जाने के बाद मदनजी तमाम फ़िल्म खोलकर एडिटिंग करने बैठे होंगे। सिगरेट् का अमल उनकी साँस के साथ है। मैंने तो कभी उनका हाथ सिगरेट् से खाली नहीं देखा। पड़ गई होगी कोई चिनगारी फ़िल्म में।"

कैमरामैन—"कुछ नहीं कहा जा सकता, किसी ने देखा थोड़े।"

पेंटर—"क्यों साहब, कुल मिलाकर बीस लाख की मालिकों की हानि हो गई होगी?"

कैमरामैन—"अजी, मालिकों क क्या हानि हुई ? एक-एक तिनके का आग का बीमा किया हुआ है। मरे हम लोग, फ़िल्म जल गई ! फ़िल्म में कुछ अच्छा काम कर रक्खा था। सोचा था, फ़िल्म चल निकलेगी। मार्केट में कुछ हमारा भी भाव चढ़ेगा। परंतु यहाँ परमेश्वर को तो कुछ और ही स्वीकार था।"

साउंड-रिकॉर्डर—"अजी किसी का कुछ नहीं हुआ। हम लोगों को अपना भाव बढ़ाने के लिये अभी सारी उम्र पड़ी है। बेचारे मदनजी के सिर पर काल नाचा, और उन्हें लपेटकर ले गया।"

पेंटर—"उनके बाल-बच्चे तो कोई हैं नहीं"

कैमरामैन—"उन्होंने शादी ही कहाँ की थी ?"

पेंटर—"कुछ रुपया-पैसा घर भेजते थे ?"

कैमरामैन—"कभी एक पैसा नहीं। कदाचित् घर पर भी कोई है नहीं।"

चौकीदारों के साथ अनेक लोग बग़ीचे के नलों पर बाल्टियाँ भर-भरकर आग पर फेकने लगे थे। परंतु उससे क्या होता था।

साउंड-रिकार्डर बोला—"चलिए, एडिटिंग रूम की ओर चलकर देखें, मदनजी का कुछ पता-निशान मिलता है या नहीं।"

पेंटर और साउंड-रिकार्डर उस ओर बढ़े। कैमरामैन उस चौकीदार की खोज में चला, जिसने उसे कानजी के शहर जाने का समाचार दिया था।

चौकीदार आग बुझाने में लीन था। कैमरामैन ने उसके निकट जाकर उसका हाथ पकड़ा, और कहा—"अब क्या व्यर्थ श्रम करते हो, फ़ायर ब्रिगेड आती ही होगी।"

चौकीदार ने भरी बाल्टी आग में फेंककर उत्तर दिया—"क्या है ?"

"एक ओर चलो, कुछ आवश्यक बात पूछनी है।"

चौकीदार सिटपिटाकर कैमरामैन के साथ चला।

कैमरामैन ने पूछा—"जिस समय कानजी शहर गए, तब मदनजी क्या कर रहे थे ?"

"कुछ नहीं कह सकता।"

"उनके कमरे की बत्ती जलती थी ?"

"नहीं।"

"किसी और कमरे में प्रकाश था ?"

"नहीं।"

"क्लब की रोशनी कै बजे बुझी ?"

"बारह बजे।"—चौकीदार के मुँह से निकल पड़ा।

"दस बजे तक मदनजी और कानजी को क्लब में बिलियर्ड खेलते हुए मैंने देखा। तुम कहते हो, कानजी संध्या-समय ही शहर चले गए !"

"हाँ, वह तो रात होते ही चले गए थे। मदनजी के साथ कोई और उनका दोस्त खेल रहा होगा।"

"अब तुम कहते हो, कानजी रात होते ही शहर चले गए। हम

लोगों में से किसी के साथ कल मदनजी ने बिलियर्ड नहीं खेला। मेरे सिर में दर्द था, और शहर से मदनजी के जो भी दोस्त आए थे, वे सब चार बजे दिन में ही चले गए थे। बता सकते हो उस समय ठीक-ठीक बजा क्या था, जब कानजी शहर गए?"

चौकीदार ने कान के निकट मुँह कर धीरे-धीरे कहा—"दस बजे बाद ही गए।"

"कैमरामैन ने संशय के स्वर में कहा—"हूँ ऽ।"

चौकीदार जाते हुए कहने लगा—"देखिए, ध्यान रखिएगा, सब पर प्रकट कर देने की बात नहीं है।"

कैमरामैन और चक्कर में पड़कर अपने मन में कहने लगा—"अवश्य ही कुछ बात है।"

दोनो साइकिलवाले ज्यों ही कानजी के बँगले के फाटक पर पहुँचे, त्यों ही कुत्ते भूँकने लगे। चौकीदार ने पूछा—"कौन है?"

"हम हैं, फ़िल्म-कंपनी से आए हैं। फाटक खोलो। बड़ा आवश्यक काम है।"

चौकीदार ने फाटक खोला।

एक साइकिलवाला बोला—"कानजी को समाचार दो, फ़िल्म-कंपनी में रात को आग लग गई। कारण अज्ञात है।"

रात को फ़िल्म-कंपनी से लौटकर कानजी अपने शयन-कक्ष

में पहुँचे। आँखों में नींद कहाँ? कभी अपने किए पर पछताते और कभी उस घड़ी के लिये दुखी होते, जब फ़िल्म-कंपनी का विचार पहलेपहल मन में जमा था। किसी करवट चैन ही न था। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा था, त्यों-त्यों उनके प्राण सूखते जा रहे थे। वह अपने मन में कह रहे थे—"कल सूर्य की ज्योति में सब कुछ साफ़-साफ़ प्रकट हो जायगा। तब जिस प्रकार मदन मरा हुआ ज़ाहिर होगा, उसी प्रकार उसका घातक भी पकड़ लिया जायगा।"

कभी-कभी कानजी की अंतरात्मा जागकर उनसे कह रही थी—"उठ, चल, पुलिस में जाकर अपने को प्रकट कर दे। पहले तो इस लोक में ही रक्त न छिप सकेगा; यदि किसी प्रकार ढक भी दिया जाय, तो क्या इसके बाद परलोक नहीं?"

अचानक दरवाज़ा खटखटाकर चौकीदार ने पुकारा—"सरकार!"

कानजी ने समझा, पुलिस मुझे खोजती हुई आ गई। वह घबराकर चुप हो रहे।

चौकीदार ने फिर पुकारा—"सरकार!"

कानजी ने चौकीदार की आवाज़ पहचानकर कहा—"क्या है चौकीदार?"

"बहुत बुरी ख़बर है, सरकार!"

कानजी को पक्का विश्वास हो गया कि ज़रूर पुलिस आ

गई है। वह उठ खड़े हुए, और दरवाज़े के पास आकर धीरे-धीरे कहा—"चौकीदार! ख़बरदार फाटक न खोलना।"

"सरकार! फ़िल्म-कंपनी में आग लग गई! सारी इमारत प्रायः जल चुकी।"

"फ़िल्म-कंपनी की सारी इमारत जल चुकी, और फ़िल्म-कंपनी के नौकर-चाकर सब तमाशा देखते रह गए?"—कानजी ने मन में अत्यंत प्रसन्न होकर कहा। कदाचित् उस समय उनके लिये इस समाचार से बढ़कर और कोई बात न थी। कानजी ने देखा, इस शाप के भीतर जो वरदान चमक रहा था, उसकी ज्योति में वह बिलकुल बेदाग़ और कलंक से रहित थे। कानजी ने कपड़े पहन द्वार खोले।

दोनो संदेश-वाहक भी चौकीदार के साथ वहाँ आ गए थे। विनत होकर कहने लगे—"सरकार! एकाएक न-जाने क्या हुआ, किसी को ख़बर भी नहीं हुई।"

कानजी ने कहा—"किसी के प्राणों की हानि?"

एक संदेश-वाहक बोला—"मदनजी का पता नहीं!"

कानजी ने आश्चर्य और शोक के साथ पूछा—"मदन का पता नहीं? हे भगवान्! तुम लोग कोई उसे बचा नहीं सके?"

"नहीं सरकार!"

"बड़ी बुरी ख़बर है। मैं अभी तुम्हारे साथ स्टूडियो

साइकिलों पर स्टूडियो की ओर चले। कुछ दूर पर ही उन्हें गोल्डन पाम्स को ओर जाते हुए फ़ायर-एंजिन में ब्रिगेड के आदमी मिले। वे उन्हें पीछे छोड़कर आगे बढ़े।

जहाँ कुछ ही घंटे पहले फ़िल्म-कंपनी खड़ी थी, कानजी ने दूर ही से देखा, वहाँ एक प्रकाश का पुंज मीलों तक उजाला कर रहा था। हर्ष और शोक का सामंजस्य उनके मन की स्थिति को अजीब बनाए हुए था।

कंपनी में पहुँचकर उन्होंने देखा, सब लोग बड़े परिश्रम से आग बुझा रहे हैं। वह कहने लगे—"कुछ नहीं, अब सब व्यर्थ है। मदन का कोई पता ?"

कैमरामैन बोला—"कुछ भी नहीं।"

कानजी—"हे भगवान्!"

कैमरामैन—"अब क्या होता है। ऐसा ही लिखा होगा।"

कानजी—"दो चीज़ों को इस आग ने बड़ी निर्दयता से निगल लिया—एक मदन और दूसरी वह समाप्तप्राय फ़िल्म इंटरमैरेज। पहला मेरा मित्र था, और दूसरी कदाचित् भारतवर्ष की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म।"

फ़ायर एंजिन आ पहुँचा, और आग बुझाने लगा।

छठा परिच्छेद

ओ० के०

सुबह होते ही रबिन ईस्टर्न शू-फ़ैक्टरी में गया, और डोरा को अपने साथ बुला लाया।

अपने कमरे में आकर रबिन ने कहा—"डोरा, आज तुम्हारे मुख की शोभा कुछ मलिन प्रतीत होती है।"

"हाँ, रात बड़े भयंकर स्वप्नों से भरी थी। नींद को हानि पहुँची। शरीर को उचित विश्रांति न मिलने के कारण माथा भारी है।"

"चाय पीते ही सब ठीक हो जायगा।"

रबिन ने होटल के नौकर से चाय मँगवाई। दोनो चाय पीने लगे।

रबिन बोला—"आज इतने दिन बाद दी सैटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी का मुख्य स्विच मेरे हाथ आया। आज मैं उन्हें एक नया नाच सिखाऊँगा।"

डोरा कहने लगी—"तुम बड़े दुष्ट हो रबिन! कदाचित् पहले ऐसे न थे।"

"क्यों डोरा, अब के जाड़ों में मेरा विचार योरप और अमेरिका की सैर करने का है, मेरे साथ चलोगी न ?"

डोरा ने कोमल कंठ से कहा—"हाँ।"

"मेरी होकर ?"

डोरा ने विनत हो, मंद स्वर में कहा—"हाँ।"

"हनीमून की यात्रा के लिये ?"

डोरा का सिर झुका हुआ था। वह कुछ न बोली।

रबिन ने अपने हाथ की तर्जनी से डोरा की ठोड़ी उठाकर उसका सिर ऊँचा किया। डोरा के गालों पर लालिमा थी, आँखों में रस और अधरों में एक कलिका-हास !

रबिन ने कहा—'डोरा, तुम कल भी स्टूडियो न जाओगी। कल हमें विवाह के कपड़े सिलवाने के लिये देने हैं।"

डोरा फिर नीचा सिर कर चुप रही।

बाहर सड़क पर पत्र बेचते हुए एक लड़का कह रहा था—"सैटेलाइट-फ़िल्म-कंपनी जल गई। बीस लाख की हानि !"

डोरा ने इसका एक-एक अक्षर सुन लिया, पर रबिन का उधर ध्यान न था।

रबिन ने फिर कहा—"सुनती हो न ? डोरा ! पिताजी कहते हैं, अगले इतवार को हमारा-तुम्हारा विवाह हो जायगा। दिन बहुत ही थोड़े हैं। कल हमें अवश्य कपड़े दे देने उचित हैं। कल भी स्टूडियो न जाओगी न ?"

डोरा ने दीर्घ श्वास लेकर कहा—"नहीं।"

रबिन ने कहा—"यही उत्तर तुम्हें शोभा देता है। निश्चय ही तुमसे विवाह कर मेरा जीवन सुखमय हो जायगा।"

डोरा ने कहा—"दैनिक पत्र अभी नहीं आया?"

रबिन ने होटल के लड़के से पूछा—"समाचार-पत्र अभी आया या नहीं?"

लड़के ने उत्तर दिया—"अभी नहीं, आता ही होगा।"

रबिन ने कहा—"तुम अतीव सुंदरी हो, तुम्हें अपनी इच्छा के इतने अधीन पाकर तुम्हारे संकेतों पर नृत्य करने की इच्छा होती है।"

डोरा ने उदास मुख से कहा—"छोड़ो रबिन, मुझे तुम्हारा यह राग अच्छा नहीं मालूम देता।"

रबिन डोरा का हाथ पकड़कर उसकी ओर बढ़ने लगा। डोरा ने पीछे हटकर कहा—"वह सुनो, किसी के पैर की परिचित आहट है। कोई आता है।"

एंजिन को स्टूडियो की आग बुझाने में दो घंटे से अधिक लगे। सुदह अच्छी तरह हो गई थी। जो कुछ सामान बचा लिया गया था, वह किसी काम का नहीं रहा था।

कानजी बोले—"इमारत में दर्जनों फ़ायर ऐक्स्टिंग्विशर लगे हुए थे। कुछ भी काम न आए। फ़िल्मों का अधिकांश इस फ़ायर-प्रूफ़ इल्मारी में बंद था। उसकी यह हालत है।"

कैमरामैन बोला—"परमेश्वर की इच्छा! अब भविष्य के लिये क्या सोचा है?"

कानजी—"क्या कहूँ ? बुद्धि ठिकाने नहीं।"

कैमरामैन—"कंपनी फिर आरंभ कीजिएगा ?"

कानजी—"कुछ समझ में नहीं आता। दाहना हाथ गँवा चुका हूँ। यदि इस समय मदन की प्राण-हानि न हुई होती, तो भी कुछ कहने की बात थी।"

इसी समय बीमा-कंपनी के प्रतिनिधि के साथ कानजी के पिताजी मोटर में वहाँ आ पहुँचे।

कुछ देर इधर-उधर का निरीक्षण कर पिताजी ने कानजी से कहा—"मैं जाता हूँ। तुम चौकीदारों को छोड़कर समस्त स्टाफ़ को बिदा कर दो। ये लोग अपने-अपने घर जायँ। कल बँगले पर इनका हिसाब-किताब कर दिया जायगा।"

"लेकिन पिताजी !"

"अब कुछ नही कानजी, अपनी हठ का यह फल देख चुके हो।"—कहकर पिताजी बिदा हो गए।

पिताजी के आज्ञानुसार नौकर-चाकरों को छुट्टी देकर कानजी ने भी शहर का रास्ता लिया। मार्ग में उन्हें डोरा की याद आई, और उन्होंने शू-फैक्टरी में जाकर उसे तलाश किया। नौकर ने उन्हें सूचित किया कि डोरा रबिन के होटल में गई है।

रबिन के प्रति कानजी के मन में कोई घृणा न थी। मदन के वियोग के बाद अब उन्हें रबिन ही फ़िल्म-कंपनी के आरं-

भिन्न दिनों का मित्र दिखाई देने लगा था। कानजी ने जिस होटल की दिशा अनेक दिनों से छोड़ रक्खी थी, उसी होटल की ओर आज वह खिंचे हुए चले गए।

होटल के ऑफिस में जाने पर जब उन्हें रबिन न दिखाई दिया, तो उन्होंने बिना किसी से कुछ कहे-सुने रबिन के कमरे की ओर पैर बढ़ाए।

पैरों की आहट सुन रबिन ने कमरे के बाहर आकर देखा, कानजी चले आ रहे थे। रबिन रह न सका। उसने बड़े प्रेम और आदर के साथ उनसे हाथ मिलाया। उन्हें अपने कमरे में ले जाते हुए कहा—"डोरा यहाँ है।"

डोरा ने उनका स्वागत करते हुए कहा—"आज मुख पर कुछ उदासी है?"

"हाँ, डोरा!"

रबिन ने चिंता के साथ पूछा—"कुशल तो है?"

होटल के लड़के ने दैनिक पत्र लाकर रबिन को दिया। पत्र के आवरण पर ही बड़े-बड़े अक्षरों पर रबिन की दृष्टि गई। छपा था—दी सैटेलाइट-फिल्म-कंपनी में भयंकर अग्नि-कांड! लगभग बीस लाख की हानि!!

रबिन ने आँखें फाड़-फाड़कर फिर वह शीर्षक पढ़ा और कानजी की ओर देखते हुए कहा—"हैं, यह क्या!"

डोरा रबिन के निकट आकर समाचार पढ़ने लगी।

कानजी बोले—"कुछ नहीं, भगवान् का अभिशाप! इस तरह भी किसी की इच्छाएँ दलित हुई होंगी, इस भाँति भी किसी के स्वप्न कुचल दिए होंगे!"

रबिन—"क्या सचमुच सब कुछ जल गया?"

कानजी—"हाँ, सब कुछ।"

डोरा—"फ़िल्म भी?"

कानजी—"हाँ, वह भी।"

रबिन—"आग लगी कैसे?"

कानजी—"कारण अज्ञात है।"

डोरा—"आप कहाँ थे?"

कानजी—"रात को लौटकर घर आ गया था। अगर वहीं होता इस समय कदाचित् ही तुम्हारे सामने बोलता होता। मैं भी उस आग की भेंट हो गया होता!"

रबिन—"क्या मदन आग में जल मरा?"

कानजी—"हाँ।"

डोरा—"सच?"

कानजी—"हाँ, इतना सच, जितना मेरा उसकी मृत्यु के समाचार सुनाना।"

रबिन—"मदन, मेरा पुराना दोस्त!"

डोरा—"एक स्वार्थ-हीन कलाकार! कदाचित् जिसके अवगुणों पर हम लोगों ने अधिक ध्यान दिया।"

रबिन—"बड़ा बुरा समाचार आपने दिया। मेरी सारी

समवेदनाएँ आपकी ओर हैं। मुझे एक क्षण के लिये भी अपनी कंपनी का शत्रु न समझिए।"

डोरा—"अब क्या होगा ?"

कानजी—"पिताजी आरंभ से ही फ़िल्म-कंपनी के ख़िलाफ़ थे।"

डोरा—"दूसरी कंपनी खड़ी न होगी ?"

"किसी प्रकार नहीं।"—कहकर कानजी उठे।

डोरा—"अभी तो आप आए ही हैं।"

कानजी—"अभी खाना नहीं खाया।"

कानजी बिदा हुए। डोरा ने उदास होकर हथेली पर अपना गाल रख लिया।

रबिन कहने लगा—"अभिमान कितनी बुरी चीज़ है ! कल जहाँ दी सैटेलाइट फ़िल्म-कंपनी अपना माथा ऊँचा किए हुए थी, आज वहाँ कुछ राख और कुछ कोयले पड़े होंगे।"

बिलकुल नवीन दैनिक लिए हुए डोरा के पिता उस कमरे में आए, और कहने लगे—"यह देखा फ़िल्म-कंपनी का अंत !"

रबिन एकदम बोल उठा—"हाँ, बड़े दुःख की बात है। बेचारे कानजी आए थे, अभी गए हैं। मदन भी वहीं जल मरा !"

अगले इतवार को रबिन और डोरा का विवाह निश्चय कर डोरा को साथ लेकर उसके पिता अपनी दूकान गए।

विवाह तैयारियाँ हुईं, और विवाह का दिन निकट आया। रेलवे चर्च में विवाह था। सिर से पैर तक श्वेत रेशम से

सुसज्जित, हाथ में श्वेत गुलाबों का गुच्छा लिए डोरा पति के साथ खड़ी होकर सिर नीचा किए पादरी साहब के आशीर्वाद ले रही थी।

रबिन ने कानजी को अपने विवाह का निमंत्रण-पत्र विशेषता से भेजा था। उसमें डोरा ने भी अपने हस्ताक्षर किए थे। कानजी निमंत्रण की रक्षा के लिये चले। उन्होंने एक ज्वेलर के यहाँ से कुछ विवाह के उपहार खरीदे, और विवाह के बाद के ही क्षणों में नवदंपति को बधाई देने के लिये स्वयं ही मोटर लेकर ठीक समय में चले।

गिरजे में सर्विस हो रही थी। बाहर अनेक मोटरें खड़ी थीं। कानजी ने भी कुछ दूर पर, सड़क के किनारे, अपनी कार रोक दी, और उत्सुकता से गिरजे के प्रधान द्वार पर दृष्टि स्थिर कर पास ही टहलने लगे।

एक आती हुई मोटरकार के भोंपू ने उनका ध्यान खींचा। मोटर बिना रुके हुए ही उनके पास से जाने लगी। कानजी चकित होकर चिल्लाए—"मदन! मदन!" उनकी पुकार में प्रेम भरा था।

यह धोका न था। सचमुच मदन मोटर पर बैठा था। एक ही क्षण में उसके भावों में परिवर्तन हुआ। उसने कहा—"ड्राइवर, रोक दो गाड़ी।"

"ट्रेन का समय निकट है, यह याद रखिए। अधिक देर न कीजिएगा।"—गाड़ी में ब्रेक देते हुए उसने जवाब दिया।

मदन उतरकर कानजी के पास गया, और उनके गले लगकर बोला—"क्षमा करो, और बिदा दो; लाहौर जा रहा हूँ।"

"तुम आग से बच आए?"

"हाँ, बिलकुल ओ० के० हूँ। आग लगने से पहले ही मैं शहर चला गया था, तुम्हारे प्रति भयानक प्रतिहिंसा लेकर।"

कानजी ने उसका अंग टटोलकर कहा—"तुम्हें गोली?"

"नहीं लगी। नरवस होकर गिर पड़ा था। तुमने मुझे मरा समझ लिया। तुम्हारे पीछे ही मैं भी चला गया। आग का समाचार सुनने पर तुम्हारे प्रति मेरे मन में जो हिंसा थी, वह नष्ट हो गई, स्वयं। दी रावी-फ़िल्म्स का आज ही तार मिला है, बिदा दो। मेल पकड़नी है। भगवान् का धन्यवाद है, जाते समय तुम्हारे दर्शन हो गए। कहा-सुना माफ़ करना।"

"आज रबिन और डोरा का शुभ विवाह है। वे गिरजे से निकलते ही होंगे। तब तक मैं तुम्हारे बाक़ी वेतन का चेक लिखता हूँ।"—कहकर कानजी ने चेक-बुक निकाली, और चेक लिखकर मदन को दिया।

मदन ने कानजी को चेक के लिये धन्यवाद देकर उस पर लिखा—"पेटु मिस्टर रबिन", और अपने हस्ताक्षर किए।

उसी समय नवदंपति पुलकित होकर चर्च से निकले। मदन को देखकर उनका हर्ष और भी द्विगुणित हो उठा। मदन को पुनर्जन्म और रबिन को विवाह की बधाइयाँ मिलीं।

स्नेह-सजल आँखों से मदन ने बिदा होते समय वह चेक

रबिन को देकर कहा—"लगभग पचास रुपए तुम्हारे पुराने हिसाब के हैं रबिन ! जो कुछ बाक़ी बचे, उससे डोरा के लिये मेरी ओर से कोई उपहार ख़रीद देना।"

मदन मोटर पर चढ़कर स्टेशन की ओर चला। कानजी, डोरा और रबिन उसे चकित होकर देखने लगे।

अचानक फिर मदन ने जाते-जाते मोटर लौटवाई, और कानजी के पास आकर बोला—"अनेक लोग सोचते होंगे, कदाचित् गोल्डन पाम्स भूत-लीला के कारण जला। भूतों के अस्तित्व में मुझे संदेह नहीं। लेकिन क्लब में जो अपने-आप बिजली जल उठती थी, उसका कारण था स्विच का ढीला होना। रात को उस पर से होकर चूहे जाते और बिजली जल उठती थी। पियानो के परदों पर रात को एक बिल्ली चलती थी, और मधुर स्वरों में रस लेती थी। अब बिदा। तुम सब माफ़ करना मुझे। कानजी ! रबिन ! डोरा...!"

हिंदी-सेवा का पुण्य लूटिए

और कमाइए भी।

स्वराज्य हो जाने पर अब यह तो निश्चय है कि हिंदी का प्रचार बढ़ेगा। इसलिये प्रत्येक ज़िले, स्टेट, नगर और क़सबे में अब हमारी गंगा-पुस्तकमाला के पार्ट-टाइम कन्वेसर हो जाने चाहिए। वे अपना और काम करते रहकर, राष्ट्र-भाषा हिंदी के प्रचार का पुण्य लूटते हुए ५०) से १००) कमा सकते हैं। हिंदी की पुस्तकों का अपने क़सबे या मुहल्ले में अपने घर के आस-पास, वे आसानी से प्रचार-प्रसार कर सकते हैं। आइए, भारती (हिंदी)-माता की सेवा में हमारा हाथ बँटाइए।

जो धनी-मानी सज्जन हिंदी-सेवा के लिये और लाभ भी उठाने के लिये हिंदी-बुकडिपो खोलना चाहें—इस पुनीत कार्य के लिये अपने ही नगर या क़सबे में हमारे साझे में या स्वतंत्र रूप से १,०००) से ५,०००) तक लगा सकें, वे फ़ौरन हमें लिखें। हम उनकी पूरी सहायता करेंगे—उनकी दूकान खुलवा देंगे, तमाम किताबें चुन और मँगा देंगे। १५% लाभ होगा।

भारत-भर में जहाँ-जहाँ १०,००० से ऊपर हिंदी-भाषा-भाषी स्त्री-पुरुष-बालक हों, वहाँ-वहाँ ऐसी दूकानें मज़े में पार्ट-टाइम कन्वेसर चला सकते हैं। स्वयं काम करें, और रुपए वहाँ के हिंदी-प्रेमियों से और हमसे लगवाकर उन्हें, हमें और अपने को लाभ पहुँचाएँ।

पार्ट-टाइम कन्वेसर और दूकान खोलने के नियम हमसे मँगवा लीजिए।

१ जनवरी, १९५० } (श्रीमती) सावित्री दुलारेलाल एम्० ए०
संचालिका गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ